त्रैमासिक

श्रीः

श्रीस्वाध्याय

ग्रीष्माङ्क

वर्ष
१४
सं० २०१२

संख्या
४
आषाढ़

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः

वार्षिक
मूल्य
४)

इस अङ्कका
मूल्य १।-)

संस्थापक—
श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

...शातनमपि ।।२।।

विषय-सूची

क्रम	विषय	लेखक	पृष्ठ सं०
१	निवेदनम् (संस्कृत पद्यं)	श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज	५
२	सम्पादकीय विचार	सम्पादक	६—८
३	आनन्द	श्री प्रो० बलजिन्नाथ शास्त्री एम. ए; एम. ओ. एल.	९—१२
४	ज्योतिषामयनं चक्षुः	श्री पं० रघुनाथचन्द्रजी वाशिष्ठ शास्त्री बी. ए.	१२—१४
५	भाग्यफल	श्री पं० नेमिचन्द्रजी शास्त्री ज्योतिषाचार्य	१५—१८
६	अर्श-बवासीर-की सफल चिकित्सा	श्री हरिकृष्णदासजी डी० गांधी एम. ए. आयुर्वेदभिषग्वर	१९—२१
७	अनुभूत योगमाला	राजगुरु ज्योतिषालंकार श्री पं० तारादत्तजी राजज्योतिषी	२२
८	विंशोत्तरी दशा विवेचन	श्री बद्रीप्रसादजी गुप्त ब्यानिया गणकचूड़ामणि	२३—२५
९	क्या पुराणोंकी बातें गप्प हैं ?	भक्त श्री रामशरणदासजी	२५—२९
१०	ज्योतिषका प्रारम्भिक शिक्षण	श्री पं० रघुनाथचन्द्रजी शास्त्री वाशिष्ठ बी. ए.	३०—३२
११	तत्त्ववेत्ता ही सच्चा राजनीतिज्ञ है	श्री १०८ स्वामी करपात्रीजी महाराजका उपदेश	३३—३५
१२	फलित ज्योतिषका महत्त्व विपत्कालका सदुपयोग	श्री निर्भयरामजी जैन	३६—३८
१३	चांदी सोनेका चातुर्मासिक भविष्य	राजवैद्य डा० श्री अमरदत्तजी मिश्र कमर्शियल एस्ट्रालाजर	३८—४०
१४	चार मासका साप्ताहिक व्यापार भविष्य	ज्योतिर्विद्यारत्न श्री पं० गंगाप्रसादजी ज्योतिषाचार्य	४१—४३
१५	चार मासका व्यापार-विमर्श	श्री पं० कृष्णदत्तजी शर्मा ज्योतिषरत्न	४३—४५
१६	जुलाईसे अक्टूबर तकका व्यापार भविष्य	श्री पं० हेमन्तकुमारजी शर्मा साहित्यालंकार	४६—४७
१७	चार मासका व्यापार रुख	श्री पं० गणेश, विद्यासागर दैवज्ञ रमलाचार्य	४७—५०
१८	अनुभवसिद्ध जनरल चांस	ज्योतिषरत्न श्री पं० राजारामजी जैन	५१—५३
१९	व्यापार पर स्वरोंका नूतन अनुभव	श्री श्यामसुन्दरजी ज्योतिषी	५३—५४
२०	दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार चक्र	श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य	५५—५७
२१	पर्वव्रतादि निर्णय	,,	५८
२२	चांदी सोना रुईका दैवीचांस	श्री पंचानन शर्मा वैद्य ज्योतिर्विद्	५९

विद्वान् लेखकों और ग्राहकोंसे निवेदन

यह वर्तमान १४ वें वर्षका चौथा (अन्तिम) अङ्क है। आगामी पन्द्रहवें वर्षका प्रथमाङ्क (नववर्षाङ्क) विजयादशमी ता० २६ अक्टूबर १९५५ ई० को अनेक महत्त्वपूर्ण लेख कथा कहानी कविता और ज्योतिशशास्त्र, सामुद्रिक—रेखा—शास्त्र स्वरोदय महार्घसमर्घ (तेजी मंदी) सम्बन्धी ठोस सामग्रीसे परिपूर्ण होगा। अतः विद्वान् लेखक अपने लेख द्वि०भाद्रपद कृष्णा अमावास्या ता० १६ सितम्बर १९५५ तक सम्पादकके पास भेज दें। पीछे आने वाले लेख नववर्षाङ्कमें स्थान नहीं पा सकेंगे।

जो सज्जन 'श्रीस्वाध्याय' के ५ नये ग्राहक बनाकर उनका वार्षिक मूल्य भिजवा देंगे—उन्हें श्री पंचानन शर्मा ज्योतिर्विद् द्वारा किसी भी एक वस्तुकी एकतर्फा तेजी अथवा मंदीकी सीधी लाइनका दैवीचांस १०१) रु० मूल्यका उपहार रूपमें बिनामूल्य दिया जावेगा। व्यापारियोंके लिए लाभ उठानेका इस वर्षमें यह अपूर्व अवसर है।

...में पृष्ठ ६० पर 'आवश्यक निवेदन' में मैंने 'श्रीस्वाध्याय' की वर्तमान स्थितिका दिग्दर्शन कराया था, परन्तु ... उदार सज्जनने क्रियात्मक सहयोगका आश्वासन नहीं दिया। यदि अब आगामी पन्द्रहवें ...ति रही तो हमें बाध्य होकर पत्रको एकांगी छोटे रूपमें निकालना पड़ेगा।

निवेदकः—

हरदेव शर्मा त्रिवेदी, सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय'

श्रीस्वाध्याय

(ग्रीष्माङ्क)

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति ॥ —श्रीराष्ट्रालोक

वर्ष १४ | सोलन, आषाढ़ शु० १० बुधवार सं० २०१२ वि० | संख्या ४

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ॥
---अ० वा० आचार्य

निवेदनम्

[श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

नयन्तः प्रख्यातिं विविधमवदानं क्षितितले
स्वकीयानां दोषैश्चितमपि गुणैर्मण्डितमिव ।
नरा वेषैः श्वेता असिततनुचित्ताः पुनरिमे
स्वराष्ट्रं धर्षन्तो निजविजयमुम्भन्ति कमहो ॥१॥

निमग्नैराशीर्षं नरकजलधेरन्तरुदरं
जनानां संघातैरमृतमुपलभ्येत यदि नु ।
ततो नृणां भोगप्रवणधिषणानां खलु भवे-
दमन्दानन्दानां जननममलं शासनमपि ॥२॥

सम्पादकीय विचार—

 शान्तिमय वातावरण 

अहानि शं भवन्तु नः शं रात्रीः प्रतिधीयताम् ।
शं न इन्द्राग्नी भवता मवोभिः शं न इन्द्रा वरुणारातहव्या ॥
शं न इन्द्रा पूषणा वाजसातौ शमिन्द्रा सोमा सविताय शंयोः ॥

मानव समाज सुख और शान्ति चाहता है। शान्तिके अभावमें सुख और समृद्धि भी नहीं। अतः शान्ति प्रथम आवश्यक है! मनकी और हृदयकी शान्ति पर्याप्त नहीं है। और न यह उस समय तक सम्भव है, जबकि बाहर तनाव हो, प्रति-द्वन्द्व युद्ध छिड़नेकी आशङ्का हो, शस्त्रास्त्रोंकी झंकार कानोंमें गूंजती हो, मानव-संहारके नये-नये आविष्कार हो रहे हों, और जब राजनीतिज्ञ युद्धकी भाषामें बात करते हों। अतः साधारण जनकी हार्दिक इच्छा यही है, कि विश्व-शान्ति स्थायी हो। युद्धोंका भय दूर हो और भय-भीतिका अन्त हो। भय और अविश्वासके दूर होने पर ही मानव सुख और शान्ति प्राप्त कर सकता है। इस सत्यको सब देशोंकी साधारण जनता मानती है और स्वीकार करती है। प्रधानमंत्री श्री नेहरूकी सोवियत रूसकी यात्राने इस सत्यको पुनः एक बार उद्भासित कर दिया है। श्री नेहरूका भव्य स्वागत, मार्ग भरमें गुलाबके फूल ही फूल, रूसी जनताका लाखोंकी संख्यामें स्वागतमें पलक पांवड़े बिछाये रहना इस बातका सूचक है कि रूसी जनता हृदयसे शान्ति चाहती है, और भारतसे गये शान्ति-दूतका भव्य स्वागत उसने अपने अन्तःकरणका भाव प्रकट करनेके लिये ही किया है।

तनाव शिथिल—

बांडुंग सम्मेलनने विश्वकी राजनीतिको एक नया मोड़ दिया। इसने शान्ति-पवनको प्रवाहित किया। दो ब्लाकोंमें ही विश्व नहीं बटा हुआ है, एक तीसरी शक्ति भी है, यह इसने प्रकट किया। एशिया अफ्रिकाके नये स्वाधीन राष्ट्र सैनिक दृष्टिसे भले ही निर्बल हों, पर वे अपनी स्वाधीनताका बलिदान करने और अपनी प्रबल राष्ट्रियताका परित्याग करनेको प्रस्तुत नहीं है। भारतीय समाजवादी नेता श्री जयप्रकाश और डा० राम मनोहर लोहिया पिछले आठ वर्षोंसे जिस तीसरी जागतिक शक्तिको उत्पन्न करनेके लिये बराबर कह रहे थे, उसके बाडुंग-सम्मेलनमें दर्शन हुए। चीनने इस सचाईको स्वीकार किया और एशियाके छोटे राष्ट्रोंके सन्देह और अविश्वासको दूर करनेके लिये एशियाके विभिन्न देशोंमें बड़ी संख्यामें बसे चीनियोंकी समस्याका समाधान करनेकी इच्छा प्रकट की। चीन और हिन्देशियाके मध्य इस विषयमें एक समझौता भी हो गया है और हिन्देशियामें बसे चीनियोंको तीन वर्षके अन्दर अन्दर यह चुन लेना होगा कि वे दोनोंमें से किस देशको अपनी मातृभूमि मानते हैं, और किसके नागरिक बनना पसन्द करते हैं। इसने चीनके प्रति एशियाई पड़ोसी देशोंमें विश्वास और मैत्रीकी भावना उत्पन्न कर दी है। इसके कारण तटस्थ राष्ट्रोंकी तटस्थ रहनेकी शक्ति भी बढ़ गई है।

फारमूसा एक समय युद्ध भूमि बनता हुआ प्रतीत होता था। यह भय सदाके लिये मिटा नहीं है। पर युद्धाग्नि भड़की नहीं और आज उस मोर्चे पर शान्ति है। भारत और भारतके घूमते प्रतिनिधि एवं राजदूत श्री कृष्ण मेनन के प्रयत्नोंका यह फल है। उनकी बाडुङ्ग और पेकिंगमें हुई बातचीत, लन्दन, ओटावा, और वाशिङ्गटनमें की गई उनकी भेंटें, ईडन, मैक्मिलन, डलेज और आइजेनहोवरसे की गई वार्ताएँ पूर्वी एशियामें छाये बादलोंको छिन्न-भिन्न कर रही हैं, और फारमूला-समस्याका समाधान करनेका मार्ग निकाल रही हैं। फलतः पूर्वीय एशियामें युद्धके गरजते बादल शान्त हो गये हैं। चीन द्वारा अमरीकी बन्दियोंके छोड़े जानेसे भी वातावरणमें परिवर्तन आया है।

नीति-परिवर्तन—

लगभग ४४४ कमिटियोंकी बैठकोंमें जिस आस्ट्रियाकी समस्या सुलझ नहीं रही थी और पिछले दश वर्षसे शान्ति सन्धि होते होते किसी-न-किसी कारण अटक जाती थी, उस आस्ट्रियाकी समस्या भी सुलझ गई और उसके साथ शान्ति-सन्धि भी हो गई। यह सोवियत रूसकी विदेश नीतिमें परिवर्तन होनेका परिणाम हैं। कनाडाके पर-राष्ट्र मंत्री श्री पियर्सनने स्वीकार किया है, कि रूसने अष्ट्रियाको जो शान्ति-सन्धिकी शर्तें दी हैं, वे बहुत उदार हैं और इतनी उदारता पूर्ण शर्तोंकी मित्र राष्ट्र कल्पना तकभी नहीं कर सकते थे। आष्ट्रियामें विद्यमान जर्मन सम्पत्ति पर रूसने अधिकारका दावा छोड़कर न केवल विवादके मूल कारणको ही दूर कर दिया अपितु अपनी उदारताका भी परिचय दिया। आस्ट्रियाकी समस्याके सुलझ जानेसे जर्मनीकी समस्याका सुलझाना सम्भव हो गया है, और बड़े चार राष्ट्रोंकी कान्फ्रेंस होनेका मार्ग निकल आया है। रूसने आस्ट्रियासे करारमें यह वचन लिया है, कि वह पूर्वीय और पश्चिमीय यूरोपकी लड़ाईमें तटस्थ रहेगा। आस्ट्रियासे तटस्थ रहनेका आग्रह करके यह सूचित कर दिया है, कि वह तटस्थ राष्ट्रोंकी उपयोगिता स्वीकार करता है। वार्सा, पोलैण्डमें 'नाटो' (उत्तरी अटलाण्टिक करार संघ) के मुकाबले पूर्वी यूरोपके कम्युनिस्ट राष्ट्रोंका एक संघ बनाने, उनकी सेनाको एक कमानमें लानेके बाद आस्ट्रियाकी तटस्थता स्वीकार करना सूचित करता है, कि रूस पूर्वी और पश्चिमी यूरोपके मध्य दो सशस्त्र सैन्य बलोंके बीच तटस्थ राष्ट्रोंका होना लाभ प्रद मानता है। अतः वह बाल्टिक सागरसे एड्रियाटिक सागर तक—स्वीडन, डेन्मार्क, आस्ट्रिया, जर्मनी, यूगोस्लेविया—टस्थ राष्ट्रोंकी एक पांत खड़ी कर देना चाहता है।

अन्य रूप भी—

सोवियत रूसकी नीतिमें परिवर्तन हुआ है, और वह विश्व शान्तिके लिये प्रयत्नशील है, इस का प्रमाण है, मार्शल बुलगानिन और म० क्रुश्चेवकी बेलग्रेड-यात्रा और मार्शल टीटो और मार्शल बुलगानिनके हस्ताक्षरोंसे प्रकाशित महत्त्वपूर्ण वक्तव्य। अब तक रूस का आग्रह था कि कम्युनिज्मका एक ही रूप है और मास्को जो रूप मानता है उस रूपको मानने वाला ही राष्ट्र कम्युनिस्ट है। रूसका आग्रह था, कि कम्युनिस्ट देश को मास्को द्वारा निर्दिष्ट पथ पर चलना चाहिये। इसी कारण रूस और यूगोस्लेवियाके बीच राजनीतिक सम्बन्ध भी छिन्न-भिन्न हो गया था। अब दोनों राष्ट्रोंका मनोमालिन्य दूर हो गया है। सोवियत रूसने माना है कि कम्युनिज्मका मास्कोसे भिन्न रूप होना भी सम्भव है। और उस भिन्न रूपको मानने वाला देश भी कम्युनिस्ट हो सकता है, तथा कम्युनिज्मके विभिन्न रूपोंको मानने वाले देश साथ-साथ रह सकते हैं। इससे 'कामिन्फार्म' (कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल इन्फारमेशन) की उपयोगिता जाती रही है और विश्वास किया जाता है कि इस संस्थाको रूस धीरे-धीरे बिना घोषणा के ही समाप्त कर देगा।

नेहरू-यात्रा—

इस अवस्थामें भारतके प्रधान-मन्त्री श्री नेहरू ने रूसकी दूसरी बार यात्रा की। पुलिसका घेरा टूट गया। प्राचीन रूसी परम्परायें टूट गईं और 'लोह-दीवार' ढह गई। श्री नेहरूके दर्शनोंके लिये ५० पंक्तियोंमें मास्को की जनता घण्टों पहलेसे खड़ी थी। गोली-सिद्ध (बुलेट-प्रूफ) बन्दकारोंमें घूमने वाले रूसी नेता खुली कारमें निकले। जनतासे सर्वथा अलग रहने वाले रूसी नेता जनतामें घुल-मिल गये। श्री नेहरूके लिये रूसने न केवल अपना हृदय खोल कर रख दिया अपितु जहाँ पहिले कभी विदेशी जाने नहीं पाये, देखने नहीं पाये वहाँ शान्ति-दूत जाने दिया गया, देखने दिया गया, गुप्त भेद बतानेसे भी नकार नहीं किया गया। श्रीमती इन्दिरा गांधीकी विजयिनी मनोमुग्धकारी मुस्कान, प्रधानमन्त्रीकी स्फूर्ति, आश्चर्यजनक कर्त्तृत्वशक्ति, रूसी मजदूर युवाके समान तेज चाल, युवकोंकी शक्तिको लजाने वाली कार्यशक्ति और भोले बच्चोंकी सी मुस्कराहटने रूसियोंके हृदयको जीत लिया, रूसी जनताके अथाह प्रेमको देखकर श्री नेहरू गद्-गद् हो गये और भारत और रूस स्नेह और मैत्रीके अटूट बन्धनमें बंध गये। भारतका औद्योगीकरण अब और तेजीसे होगा। प्लाण्टों (संयंत्रों) और विशेषज्ञोंके लिये

भारत अब पश्चिमी राष्ट्रों पर निर्भर न रहेगा। पूर्व और पश्चिमकी वैज्ञानिक कुशलता और तन्त्रके मेलसे भारत एक नवीन वैज्ञानिक कला, कौशल और तन्त्रका निर्माण कर सकेगा। मध्य एशियाके देशोंके साथ भारतका व्यापार बढ़ेगा और सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित होगा। विश्वकी दृष्टिसे श्री नेहरूकी रूस-यात्राने शान्तिके तत्त्वोंका बल बढ़ाया है, तनावको शिथिल किया है, और विश्व-शान्ति के अनुकूल वातावरण तैयार कर दिया है।

मैग्नीटोगोरस्क—

महान् सोवियत संघकी आधार शक्ति, रूसी जनताके कर्तृत्व और संकल्प रूसके निर्माण कौशल का प्रतीक है मैग्नीटोगोरस्क। यूरोप भरमें सबसे बड़ा इस्पातका प्लाण्ट यहाँ है। यह ६० लाख टन इस्पात तैयार करता है। इसके विषयमें दो अमरीकी इंजी-नियर विशेषज्ञोंने दूसरे महायुद्धके समय यह सम्मति दी थी—आर० ए० डेविस और ए० जे० स्टीगरने लिखा था—१९२८ में यूरालमें छोटे-छोटे १०० प्लांट थे; दस वर्ष बाद दूसरे नियोजनके अन्त १९३८ में २०० से अधिक विश्व भरमें सबसे बड़े औद्योगिक प्लाण्ट लगाये गये और यूरालमें ये चल रहे हैं। मैग्नीटोगोरस्कको इन दोनोंने इस्पातका नगर बताया है। विशेषज्ञोंका कहना है, कि मैग्नीटोगोरस्क इस युगके साहसपूर्ण निर्माणका प्रतीक है, मानवमें सोवियत विश्वासका यह मूर्त रूप है। यह शस्त्र है अनेक धारों और किनारोंका पिछड़ेपनके विरुद्ध, अज्ञा-नताके विरुद्ध, देशी और विदेशी शत्रुओंके विरुद्ध यह शस्त्र है। श्री नेहरूकी रूस-यात्राके फलस्वरूप क्या भारत में 'मैग्नीटोगोरस्क' का निर्माण सम्भव है? यदि अमरीकी "टैनेसीवेली अथारिटी" के समान दामोदर घाटी कार्पोरेशन का बनना सम्भव है, तो क्या 'मैग्नीटोगोरस्क' का निर्माण भारतमें सम्भव नहीं? क्या लोकतंत्रके लिये इसका निर्माण सम्भव नहीं?

गोआ विमोचन—

समाजवादी नेता श्री गोरेकी गिरफ्तारी और गोआ पुलिस द्वारा निर्दयताके साथ पीटे जाने, तथा क्रान्तिकारी सेनापति बापट पर पड़ी मारने भारत भरमें प्रबल विक्षोभकी लहर उत्पन्न कर दी है, और श्री नेहरूके प्रोत्साहन न देने पर भी गोआ-विमोचनका संग्राम भारतके सब राजनीतिक दलोंका संयुक्त संग्राम हो गया है। भारतके विभिन्न भागोंसे सत्याग्रही जा रहे हैं। श्री देशपांडे एम० पी० ने सत्याग्रहमें भाग ले कर अन्य संसदके सदस्यों को भी इसमें भाग लेनेका आह्वान किया है। सत्याग्रहका प्रभाव दिखाई दे रहा है। गोआके गांवोंमें तिरंगी पताका फहराने लगी है। समानान्तर सरकार स्थापित करनेकी चेष्टा हो रही है। भारत सरकार पर दबाव डाला जा रहा है कि वह पुर्तगालसे राजनीतिक सम्बन्ध तोड़ दे। इसके साथ ही १५ अगस्तको दस हजार सत्याग्रहियोंका जत्था गोआ भेजने की तैयारी है। गोआ भारतमें विलय होना चाहिये, भारत इसके लिए और दो तीन वर्षकी प्रतीक्षा करनेको तैयार नहीं। जनताका आग्रह बढ़ रहा है कि सरकार गोआके विरुद्ध यदि पुलिस कार्यवाही नहीं करती, तो उसके विरुद्ध आर्थिक घेरा डाल दे। पर श्री नेहरू तिल या मस्सेको हटानेके लिए इतना जोरदार काम करनेको तैयार नहीं। किन्तु सरकारकी वर्तमान गोआ-नीतिके प्रशंसक और समर्थक कांग्रेसजन भी नहीं हैं यह कांग्रेसजनों द्वारा वैयक्तिक रूप से गोआ सत्याग्रहमें सम्मिलित होनेसे स्पष्ट है।

मुस्लिमलीगकी अर्थी—

यदि एक मुहम्मदअलीने मुस्लिमलीगकी स्थापना की थी, तो दूसरे मुहम्मदअलीने उसको छिन्न-भिन्न कर दिया है और लीगकी अर्थी निकलनेमें अब अधिक समय नहीं रहा है, मुस्लिमलीगके जिन नेताओंने पाकिस्तान प्राप्त किया था—चुंद्रीगर, निश्तर, गजदर, ख्वाजा नाजीमुद्दीन, खलीकुज्जमा आज उनका कहीं नाम भी सुनाई नहीं देता। सीमाप्रान्तमें उसके भूत पूर्व मुख्य सचिव अब्दुलक्यूम, सिंधमें भूतपूर्व मुख्य सचिव पीरजादा अब्दुलसत्तार और पूर्वी बंगालके भूतपूर्व गवर्नर और पंजाबके भूतपूर्व मुख्य सचिव चौ० फिरोजखां नून विद्रोह पथ पर हैं, पूर्वी बंगालसे लीगकी १९५४ में ही अर्थी पहले ही निकल चुकी है। अब पश्चिम से भी निकल रही है। मुस्लिमलीगका स्थान लेने वाली और कोई पार्टी नहीं है। इस प्रकार पाकिस्तान राजनैतिक अराजकता और अस्थिरताके युगमें प्रवेश कर रहा है। इस

[शेष पृष्ठ ४९ पर]

आनन्द

[लेखकः—श्री प्रो० बलजिन्नाथ पण्डित शास्त्री M. A., M. O. L.]

(२) आनन्दकी आनन्दता

यह तो गताङ्कमें बताया कि आत्मा प्रकाशविमर्शरूप है। विमर्श ही आनन्द है, यही चमत्कार है। जितनी भी आत्माएं हैं सबकी सब आनन्दरूप ही हैं। वस्तुतः एक ही आनन्द अनेक रूपोंमें प्रकट हो रहा है। आत्मा वस्तुतः सब की एक ही है। भिन्नता केवल देह और अन्तःकरणके सम्बन्धसे प्रतीत होती है। जैसे आकाश एक ही है, फिर भी घड़ेके बीच गोल आकाश है और सन्दूकके बीच चतुष्कोण है। ये दोनों आकाश इन दो उपाधियोंके कारण भिन्न जैसे प्रतीत होते हैं। वस्तुतः दोनोंमें कोई भी भेद नहीं। दोनों की आकाशता एक है। दोनोंमें किसी भी गुण कर्म स्वभाव आदिका कोई भी भेद नहीं। वस्तुतः दोनों एक ही है। "दोनों" कहना भी उपाधिके ही कारण होता है। वस्तुतः आकाशके लिए दो कहना सर्वथा अन्याय है। इसी प्रकारसे आनन्द भी एक ही है, अनेक नहीं। अनेकता कल्पित है, उपाधिके सम्बन्धसे प्रतीत होती है, वास्तविक नहीं है। भट्ट नारायण कहते भी हैं—

त्रैलोक्ये यत्र यो यावानानन्दः कश्चिदीक्ष्यते।
स बिन्दुर्यस्य तं वन्दे देवमानन्दसागरम्॥
(स्त० चिन्ता०)

अर्थ—"तीनों लोकोंमें जहाँ कहीं जिस किसी भी आनन्दका साक्षात्कार होता है। वह परमेश्वरके ही आनन्द स्वरूपका एक बिन्दु मात्र है। उस आनन्दके समुद्र परमेश्वर को मैं नमस्कार करता हूँ।" नाटक देखते समय या लास्य की क्रीडा देखते समय यह बात हमारे अनुभवमें आती है कि आनन्द रूप आत्मदेव एक ही है, और एक होकर अनेक शरीरोंमें प्रकट होता है। जिस समय रङ्गभूमि पर कोई नायिका आती है और अभिनय करने लगती है, उस समय हमें उसके हाव भाव और विलासको देखकर आनन्द कैसे आता है। हमारा उससे कौन सा सम्बन्ध है। वह नायिका किसीकी पुत्री है, किसी की बहिन है, किसीकी माता है, किसीकी सखी है और किसीकी प्रियतमा है। उनका इसके साथ सम्बन्ध है। उन्हें इसकी विभूतिको देखकर भले ही आनन्द हो। पर हमें न तो उस नायिकासे कोई सम्बन्ध है और न ही उसके हाव भाव आदिसे और न ही उसके रूप लावण्य आदि से ही। हम इन विषयोंमें उदासीन हैं। हमें आनन्द कैसे आता है। आनन्द आता तो अवश्य है। इसमें हमारी अन्तरात्मा साक्षी है। पर कैसे और क्यों आता है? नाट्य-शास्त्रके कुछ विद्वान् कहेंगे कि उस समय नाटकके विभाव अनुभाव आदिके बलसे हमारे मन पर ऐसा प्रभाव पड़ जाता है कि हम अपने संकुचित स्वरूपको भूल जाते हैं, और नायकके साथ हमें उस समय अभेद प्रतीत होता है। इस तरह कुछ समयके लिए हम स्वयं नायक बन जाते हैं। और वह नायिका हमारी अपनी प्रियतमा बन जाती है। इस प्रकारसे हमारा और उसका सम्बन्ध जुड़ जाता है। तब हमें उसे और उसकी विभूतिको देखकर आनन्द आता है। उसके दुःखोंको देखकर हम रो पड़ते हैं, और उसके सुखोंसे सुखी हो जाते हैं। इस पर दूसरे विद्वान् शङ्का करते हैं कि प्रायः कोई भी पुरुष ऐसा नहीं होता जो अपनी प्रियतमाको इस प्रकारके हाव भाव और विलास आदि दूसरोंके सामने करने दे। और यदि प्रियतमा ऐसा करे तो प्रियतमको आनन्द नहीं आता। उसे उल्टे लज्जा आती है, कष्ट होता है, ईर्ष्या होती है, क्रोध होता है और घृणा हो जाती है। इसलिए नाटक देखने वाला नायिकाको अपनी प्रियतमा मान नहीं सकता। अतः यह कल्पना ठीक नहीं। भरत मुनिके नाट्य-शास्त्रके भाष्यमें शैव शास्त्रके प्रसिद्ध आचार्य अभिनवगुप्त पाद इस समस्याको इस प्रकारसे सुलझाते हैं। वे कहते हैं—विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भावके अभिनयका प्रभाव सामाजिक रसिक मनुष्यके अन्तःकरण पर ऐसा पड़ जाता है

कि उस समय रजोगुण और तमोगुण दब जाते हैं। सत्व गुण झट तीव्र हो जाता है। ऐसा होने पर मनुष्यका संकुचित आत्मभाव गल जाता है। वह अपने शरीर, अन्तःकरण आदिको ही अपना आप समझता नहीं। अपितु जितने भी देखने वाले वहां होते हैं, उन सबके साथ उसका अभेद हो जाता है। यही दशा सभी देखने वाले रसिक सज्जनोंकी हो जाती है। इस तरहसे सभी शरीरोंमें एक ही आत्मा काम करने लगती है। "मेरा और तेरा" यह भेद नहीं रहता है। 'तू' और 'यह' गल से जाते हैं। केवल "मैं" और विशाल व्यापक "मैं" ही शेष रहता है। तब सामाजिकोंको नाटकसे आनन्द आता है। इस तरहसे उस समय क्षण भरके लिए आनन्दरूप आत्माकी एकताका अवभास अनुभवमें आ जाता है।

जब आत्मा ही आनन्द है, और आत्मा आनन्द ही है, तो आत्मतत्व सदैव आनन्द ही प्रतीत होना चाहिए। यदि आत्मा आनन्दस्वरूप है तो उसका स्वभाव ही आनन्द है। जब आत्मा अभिव्यक्त होती है तो उसका वह स्वभाव बिना किसी अभिव्यंजक कारणके अभिव्यक्त हो जाना चाहिए। उस स्वाभाविक आनन्दको चमकनेके लिए लौकिक विषय, विभाव आदि, या योग आदिकी कोई आवश्यकता ही नहीं होनी चाहिए। बात तो यह ठीक है, परन्तु आनन्दकी ही आनन्दताकी यह महिमा है, कि आनन्द रूप आत्म तत्त्व एक होते हुए भी अनेक रूप, चेतन होते हुए भी जड़ रूप, और आनन्द होते हुए भी अनानन्दरूप भी प्रतीत होता है। आनन्द यदि सर्वथा शान्त हो तो उसे आनन्द कह नहीं सकते। सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष आदिके कारण जो मनमें अशान्ति हो उठती है वह आनन्दमें नहीं होती, क्योंकि वह आनन्द है। अतः वह शान्त है। परन्तु जैसे एक पत्थर शान्त है वैसा शान्त भी आनन्द नहीं। हिमालयके शिखर पर वर्षा, धूप, सरदी, गरमी, बरफ ओले आदि पड़ते रहते हैं। इससे उसकी शान्तिका भङ्ग नहीं होता। इस प्रकारकी शान्ति जड़ पदार्थोंमें होती ही है और जड़ पदार्थोंमें ही होती है। आनन्दरूप आत्मा चेतन है, इसलिए वह हिमालयके शिखरकी तरह शान्त नहीं। वह शान्त होते हुए भी कुछ अशान्त है। अचल होते हुए भी कुछ कुछ चंचल है। यह चंचलता बाहरी पदार्थोंके कारण नहीं होती। रागद्वेष आदिके कारण भी नहीं होती। क्योंकि पूर्ण आनन्दघन आत्मामें बाह्य और आन्तर कोई वस्तु नहीं, राग और द्वेष भी कोई वस्तु नहीं। आनन्दघन इसीलिए उसे कहते हैं कि उसे जिधरसे देखो उधरसे आनन्द ही है। वस्तुतः जिधर और उधर भी वहां आनन्द ही हैं। आनन्दसे अतिरिक्त कोई वस्तु है ही नहीं। इस लिए यह अशान्ति और यह चंचलता उसकी स्वाभाविक है औपाधिक नहीं। अपनी आनन्दता ही के कारण आनन्दमें कुछ कुछ चंचलता है। यही उसकी आनन्दता है। चन्द्रमाका अपना प्रकाश नहीं। वह सूर्यके प्रकाशसे चमकता है। इसलिए उसके प्रकाशमें सर्वथा शान्ति है। अतः चन्द्रमा टिमटिमाता नहीं। परन्तु, सूर्यका प्रकाश अपना है, इस लिए उसके प्रकाशमें स्वाभाविक हल चल है। तारों और नक्षत्रोंका भी अपना प्रकाश है। इसीलिए वे टिमटिमाते हैं। शेष ग्रह पर प्रकाश होनेके कारण टिमटिमाते नहीं। स्वप्रकाश नक्षत्र सूर्य आदि के टिमटिमानेकी सी ही स्वाभाविक हलचल आनन्दमें है। इस हलचलको ही शास्त्रोंमें अनेक नामोंसे कहा गया है। वस्तुतः इसे शब्दों द्वारा पूरी तरह कहा तो नहीं जा सकता। फिर भी समझानेके लिए इसे शैव आगमोंमें स्पन्द कहा गया है। अंग्रेजीमें इसे (Vibration) वैब्रेशन कह सकते हैं। वैब्रेशन और स्पन्दमें केवल इतना ही भेद होता है, कि वैब्रेशन एक अविच्छिन्न बहिर्मुख स्पन्द या चंचलताका नाम है। परन्तु शैव शास्त्रमें स्पन्द बहिर्मुख और अन्तर्मुख दोनों प्रकारकी अविच्छिन्न चंचलताको कहते हैं। (यदि शास्त्रमें किसी बातको स्पष्ट करनेके लिए अश्लील शब्दका भी प्रयोग करना पड़े तो शास्त्रकारोंको संकोच नहीं होता।) अतः आचार्य अभिनवगुप्त पाद कहते हैं कि मूत्र-उत्सर्ग के बाद गधी या घोड़ी जिस प्रकारसे अपनी योनिका संकोच और विकास कुछ क्षण लगातार करती रहती है, कुछ उसी प्रकारकी जैसी कोई अलौकिक और अवर्णनीय चंचलता आनन्दरूप आत्मामें है। उसीको स्पन्द कहते हैं। यही आनन्द या आनन्दता है। आनन्दता भी कल्पित भाव ही है। वस्तुतः आनन्द ही आनन्दता है। इसीको चैतन्य कहते हैं। यही हिमालयकी शान्ति और परमेश्वरकी शान्तिमें

भेद है। आचार्य उत्पल देवने इसी स्पन्द तत्वको चिति, स्फुरत्ता, महासत्ता, परावाक् स्वातन्त्र्य और ऐश्वर्य आदि नामोंसे कहा है। सच्चिदानन्दकी सत्ता, चित्ता और आनन्दता यह स्पन्द ही है। स्पन्द ही प्राण शक्ति है, यही जीवन है। इस स्पन्दको ही उच्छ्लता कहा गया है। कोई पात्र अमृतसे पूर्ण हो। यदि वह सर्वथा जड़ हो तो सदा उसी तरहसे रहेगा। परन्तु यदि उसमें भीतर अग्नि की गर्मी हो या ऊपर वायुका प्रभाव हो तो वह पात्र शान्त नहीं रह सकता ! गर्मीसे उबलता हुआ और वायुसे हिलता हुआ अवश्य छलकेगा। और इधर-उधर उसकी बूंदें बिखर जाएंगी। आत्मा भी आनन्दरसपूर्ण है। उस आनन्दमें कोई भी चंचलताका बाह्यकारण नहीं। हां आन्तर-कारण है। वह है आनन्दका स्वभाव। आनन्दका स्वभाव ही स्वातन्त्र्य है, स्पन्द है, चैतन्य है, चमत्कार है, स्फुरत्ता है, या उच्छलत्ता है। और भी जितने नाम आप चाहें इसे दें। स्वभावसे ही पूर्णताके अतिशयसे आनन्दरस छलकता है, स्वातन्त्र्यकी मस्तीसे आत्मदेव सदैव घूर्णमान (चकराता हुआ) है। शिवस्तोत्रावलीमें श्री उत्पलदेव आचार्य कहते भी हैं—

यत् स्वयं निजरसेन घूर्णसे ।
तत् समुल्लसति भाव मण्डलम् ॥

अर्थ—जो तू अपने आनन्दरससे चकराता है, वही तो यह भावमण्डल (जगत्) उल्लासमें आता है। अर्थात् तुम्हारी घूर्ण-क्रिया ही संसार रूप बन जाती है। इस आनन्दपूर्ण आत्माके छलकनेसे ही इसकी भी बूँदे इधर-उधर बिखर जाती हैं। भेद केवल इतना है कि अमृत का पात्र एक संकुचित वस्तु है, सर्वव्यापक नहीं है, और उसकी उच्छलत्ताका कारण जो अग्नि या वायु वह भी बाहरसे ही उसमें प्रवेश करता है। परन्तु आत्मा सर्वथा पूर्ण है। इससे भिन्न कोई वस्तु नहीं। स्वयं ही सब कुछ है। सर्वव्यापक है। इसका आनन्द ही पात्र है, आनन्द ही रस है, आनन्द ही अग्नि है और आनन्द ही उच्छलत्ता है। अपने आनन्दकी उच्छलत्तासे आनन्दके ही भीतर आनन्द की बूँदें बिखरने लगती हैं। वह इस तरहसे कि आनन्द अपने अतिशयकी मस्तीसे छलकता रहता है। यह आनन्द पूर्ण अहं विमर्श है। इसके छलकनेसे अहंतामें ही इदंता, वेदकमें ही वेद्य, उत्तम पुरुषमें ही प्रथम पुरुष, आत्ममें ही अनात्म, चैतन्यमें ही जड़का अवभास होता है। पूर्ण अद्वैत होते हुए भी आत्मा इस स्पन्दकी महिमासे कहीं ज्ञाता के रूपमें और कहीं ज्ञेयके रूपमें प्रकट हो जाता है। कहीं कर्ता बन जाता है और कहीं कार्य बन जाता है। इस तरहसे आत्मदेव ही अर्थात् आनन्द ही अनेक रूपोंसे युक्त जगत्को अपने आपमें ही प्रकट करता है। यही उसकी उच्छलत्ता है। यही उसकी पूर्ण शान्तिमें अशान्तता है, यही उसकी स्फुरत्ता या स्पन्द है। भेदमयताको प्रकट करके भी स्वयं अपने अभेदसे-अद्वैतभावसे-च्युत नहीं होता। यही इसकी पूर्णता है। द्वैत रूपमें प्रकट होकर फिर अपने आनन्दके ही उल्लाससे अपने कल्पित भेदको मिटा कर पुनः अद्वैत रूपमें चमकने लगता है। यह सब कुछ इसका ऐश्वर्य है। इसका स्वातन्त्र्य है और इसकी परमेश्वरता है। परमेश्वरतासे ही कहीं जीव बनता है और कहीं ईश्वर बनकर अपने ही जीवरूपों पर शासन करता है। इस तरहसे यह संसारका नाटक चलता है। इस नाटकका सब कुछ परमेश्वरकी परमेश्वरता ही है। और यही उसकी परमेश्वरता है। यही हिमालयकी चोटी और परमेश्वरमें भेद है। तो आनन्द ही परमेश्वर है। आनन्द एक है, और पूर्ण है। इस पूर्ण आनन्दका ही यह स्वभाव है कि वह जगद्रूप बन जाता है और संकुचित शक्ति वाला जीव बनकर पुनः अपने पूर्ण आनन्द स्वरूपको पहिचान लेता है। इसी लिए तैत्ति-रीय उपनिषद्में भृगुजीके परब्रह्म साक्षातकारके विषयमें कहा है—

स तपोऽतप्यत। स तपस्तप्त्वा आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्। आनन्दाद्ध्येव भूतानि जायन्ते। आनन्देन जातानि जीवन्ति। आनन्दं प्रयन्त्यभिसं विशन्तीति।

अर्थ—भृगुने तप किया। तपसे उन्हें साक्षात्कार हुआ कि आनन्द ही ब्रह्म है। क्योंकि आनन्दसे ही सारा जगत् उत्पन्न होता है। आनन्दसे ही यह जगत जीवित (स्थित) है। और प्रयाण करते समय आनन्दमें ही सब समा जाते हैं।

जीव अवस्थामें भी परमेश्वर आनन्द-स्वरूप ही है। यहां भी स्वप्नमें जब कि वह जाग्रत अवस्थाके बन्धनोंसे मुक्त होता है, तो अपने ऐश्वर्यसे अपने आनन्दसे अपने

ज्योतिषामयनं चक्षुः

[लेखकः—श्री पं० रघुनाथचन्द्रजी वाशिष्ठ शास्त्री B. A.]

क्या ज्योतिष शास्त्र मनुष्यको भाग्यवादी और निठल्ला नहीं बनाता ?

नहीं, ज्योतिष शास्त्र मनुष्यको निठल्ला नहीं बनाता, अपितु कर्मण्य बनाता है। वेद पुरुषके नेत्र ज्योतिष शास्त्र ही हैं। (ज्योतिषामयनं चक्षुः) भाव यह कि मानव जीवनमें ज्योतिष शास्त्र नेत्रका काम देता है। यदि मानवके नेत्र उसे अकर्मण्य बनाते हैं तो ज्योतिषशास्त्रसे भी अकर्मण्यताकी सम्भावना की जा सकती है। मनुष्य चल रहा है। सामने गढ़ा है, पांव उसे उसमें गिरनेसे पहिले नहीं बता सकते परन्तु नेत्र पहलेसे ही कह देते हैं कि तुम्हारे मार्गमें गढ़ा है। तो क्या आप अकर्मण्य होकर वहीं बैठ जाते हैं ? अरे! हमारे मार्गमें गढ़ा है, इसे तो हम नहीं लांघ सकते क्या करें ? यदि ऐसा नहीं तो क्या कारण है कि ज्योतिष शास्त्र आपके जीवन पथमें विपत्तियों वा कठिनाइयोंकी पहलेसे ही सूचना देकर अकर्मण्य बना देता है ?

ज्योतिष-शास्त्र रेलवे लाइन पर एक सिग्नल स्तम्भ है जो गाड़ी चलाने वालेको यह सूचना देता है कि उसके मार्गमें कोई बाधा है या नहीं, यदि बाधा (लाईन क्लीयर न) हो तो गाड़ीको आगे चलाना या न चलाना उस ड्राईवरकी बुद्धि पर निर्भर है। वह सिग्नल स्तम्भ गाड़ीको नहीं रोकेगा। बस ज्योतिष शास्त्रका भी यही कार्य है। वह हमारे भावी जीवन पर प्रकाश डाल कर आगे आने वाली अनुकूल व प्रतिकूल परिस्थितियोंकी सूचना दे देता है। इस विषयको और स्पष्ट रूपमें अवगत करनेके लिये कर्मवादको समझनेकी आवश्यकता है। उसका विवेचन अलग निबन्धमें किया जायगा।

प्रश्न—क्या किया हुआ कर्म बदला जा सकता है ? यदि हां, तो ज्योतिष शास्त्रके द्वारा की गई भविष्यवाणी असत्य हो जायगी, यदि नहीं और हमें किये हुए कर्मोंका फल भोगना ही पड़ेगा, हमारा उसमें कुछ वश नहीं तो फिर उसके लिये पहलेसे ही चिन्ता व फिकरमें क्यों मर जांय ? ज्योतिष शास्त्रका क्या प्रयोजन रहा ?

प्रश्न विकट है ; प्रायः लोगोंको चक्करमें डालने वाला है। परन्तु इसकी नींव खोखली है। "घटाटोपो भयंकरः" वाली बात है। नींवको खोदनेके लिये परिश्रम चाहिये। तब यह भित्ती (दीवार) आप ही गिर जायगी, गम्भीर विवेचनाकी आवश्यकता है।

आइये, इस पर भी थोड़ी सी विवेचना कर लें, कर्म विषयमें श्रीगीताजीमें भगवान् श्रीकृष्णके वचन हैं ('गहना

आनन्द ही के बीच विचित्र संसारकी सृष्टि करता है। जाग्रतमें भी कभी संकल्प मनोराज्य आदि अवस्थाओंमें अपने बन्धनोंको भुला डालता है, और अपने आनन्दसे अनेक प्रकारके भावोंकी सृष्टि अपने ही भीतर करता रहता है। यही आनन्द रूप आत्माकी स्फुरत्ता है। पूर्ण होकर भी आनन्दरूप परमेश्वर अपने स्वभावको अपनी ही आनन्द रूपताके अतिशयसे अपूर्णताको अपने भीतर प्रकट करता है। अपूर्णताके प्रकट होनेसे ऐसा समझने लगता है कि मैं यह हूँ और यह नहीं हूं। इस प्रकारसे भेदका अवभास हो जाता है। अपूर्ण और भिन्न बनकर किसी वस्तुको प्रिय और किसीको अप्रिय समझने लगता है। प्रिय वस्तु पर आत्मीयता या आत्मताकी वृष्टि करता है। इसीको ममता कहते हैं। इस अहंता और ममताके उल्लाससे विविध प्रकारसे अपने आनन्दका आस्वाद लेता है। इस प्रकारके प्रपंचमें आकर परमेश्वर जीव बन कर अपने आपको अपनी ही नियति-शक्तिसे बाँध लेता है। इस शक्तिके ही प्रभावसे किसी वस्तुसे इसे आनन्द आ सकता है और किसीसे नहीं। कोई वस्तु प्रिय बनती है और कोई अप्रिय। वस्तुतः यह भेद, यह संकुचिता, यह नियति आदि सभी आनन्दके ही उल्लास हैं। यह स्फुरत्ताकी महिमा है, स्पन्दकी विभूति है।

[क्रमशः]

———

कर्मणो गतिः') कर्मकी गति अलक्ष्य है। यद्यपि स्पष्ट रूपसे वे कर्मलिप्तता कर्मनिर्लेपता और निन्दित कर्मकी ओर ही संकेत करते हैं; तो भी कर्म और उसके फलकी दुर्लक्ष्यता अभिप्रेत है। ऐसे गम्भीर विषय पर एक शब्द भी कहना व लिखना निःसन्देह मेरे लिये दुःसाहस है। तो भी अपनी बुद्धिके अनुसार उसकी विवेचना करनेसे सम्भवतः कुछ ज्ञानकी वृद्धि होगी।

भगवान्ने प्रह्लादसे कहा था : "नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटि शतैरपि", किया हुआ कर्म सैकड़ों करोड़ों कल्पों तक भी पड़ा रहे, बिना भोगे नष्ट नहीं होता। न्याय दर्शनके भाष्यमें वात्स्यायन मुनि लिखते हैं कि एक योगीको जब सत्वर मोक्षकी अभिलाषा होती है, तो वह अपने अन्य शरीरोंका निर्माण कर उनके द्वारा अपने अवशिष्ट कर्मोंको थोड़े ही समयमें भोग लेता है। भाव यह कि नई सृष्टिमें समर्थ योगी भी अपने किये हुए कर्मोंको बिना भोगे टाल नहीं सकता। कर्मोंका फल अटल है। वह सबको भोगना ही पड़ता है। इधर श्रुति भगवती कहती है—

भिद्यते हृदयग्रन्थि छिद्यन्ते सर्व संशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे॥

अर्थात् उस परम प्रभुके साक्षात्कार हो जाने पर मानवके हृदयकी गुत्थियां सुलझ जाती हैं. सब सन्देह दूर हो जाते हैं और इसके किये हुए कर्म नष्ट हो जाते हैं। और भी देखिये भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुनसे कहते हैं—

"ज्ञानाग्निः सर्व कर्माणि भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन !"

अपि च—

"ज्ञानाग्नि दग्ध कर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः॥"

अर्थात् ज्ञान रूपी अग्निसे कर्म जल जाते हैं। इस प्रकार परस्पर विपरीत—वचनोंको देखकर आप लोग बड़ी भारी द्विविधामें पड़ गये होंगे, परन्तु कोई विस्मयकी बात नहीं, इन बचनोंका सामञ्जस्य प्राचीन आचार्योंने बहुत सुन्दर एवं युक्ति युक्त किया है। वह उनके ग्रन्थोंमें आप देख सकते हैं। मैं तो सीधा सादा सामञ्जस्य (समन्वय) इस प्रकार करता हूँ।

इस सृष्टिमें कर्मके फल केवल दो ही हैं। सुख और दुःख। जो हमें अच्छा लगता है वह सुख, और जो बुरा लगता है वह दुःख। दोनोंमें अनुकूलता वा प्रतिकूलताकी अनुभूति अनिवार्य है। इसके बिना न सुख है न दुःख। किसी भी व्यक्तिका यह कहना "मुझे पीड़ा हो रही है, परन्तु मालूम नहीं कहां" उन्मत्त प्रलाप और हास्यास्पद ही होगा। हम देखते हैं कि अपना एक पैसा खो जाने पर भी हमें बुरा लगता है, और दूसरेका रुपया खो जाने पर भी कुछ बुरा अनुभव नहीं होता। यदि रुपये पैसेका खो जाना ही दुःख हो तो दूसरेका रुपया खो जानेमें कहीं अधिक दुःख हो जाना चाहिये। परन्तु ऐसा नहीं होता, क्योंकि उसमें हमें कुछ प्रतिकूलता नहीं जान पड़ती। इसके अतिरिक्त और देखिये—रुस्तमने अपने पुत्र सोहराबको मार दिया था, उसे तनिक भी दुःख नहीं हुआ। अरे! यह ज्ञान न था कि उसके हाथों उसके पुत्रकी हत्या हुई है। बादमें इस तथ्यका बोध होने पर वही फूट फूट कर रोने लगा, तो क्या उसके पुत्रकी हत्या ही दुःख था? नहीं, यदि ऐसा होता तो उसे इसका ज्ञान होनेसे पूर्व भी दुःख होता, ऐसा नहीं हुआ। इस प्रकार मानना पड़ता है कि किसी भी घटनाका ज्ञान ही सुख या दुःख है। अब प्रस्तुत विषय पर आइये, कर्मफलके दो स्वरूप हैं। एक तो बाह्य रूप, अनुकूल व प्रतिकूल घटनाओंका घटित होना दूसरा उनका ज्ञान, जहाँ तक घटनाओंका सम्बन्ध है वे सम्भवतः बहुत कम ही टल सकें, परन्तु उनसे होने वाला प्रतिकूल अनुभव—जो दुःखका वास्तविक स्व प है—निश्चय ही ज्ञान द्वारा नष्ट हो जाता है। हम देखते हैं कि एक व्यक्ति १०० या १०१ डिग्रीके ज्वरमें इतना व्याकुल हो जाता है कि रो चिल्लाकर सारे घर वालोंको और पड़ोसियोंको भी व्याकुल कर देता है; और दूसरा १०४ या ५ तकके ज्वरमें भी चुपचाप पड़ा भगवत्स्मरण करता है और प्रसन्न मुख दीखता है, क्या कारण है? यही न, कि पहला व्यक्ति अपने अज्ञानसे थोड़ी सी बातको भी बहुत अनुभव करता है, और दूसरा बड़ी बातको भी उपेक्षाकी दृष्टिसे देखता है। अथवा उस समय भी वह ईश्वरीय लीलाके दर्शन करता है। इसी प्रकार कोई बड़ी भारी दुर्घटना हो जाती है, और हम विवेक द्वारा अपने दृढ़ मन पर उसका प्रभाव नहीं पड़ने देते तो उस दुर्घटनाका हमारे लिये होना या न होना एक सा है।

और देखिये, दिन और रात अपने नियमसे आते और

जाते हैं। दिनका अर्थ है कार्यकाल और रात्रि कार्यका विश्रान्ति काल, ये दोनों अटल हैं, और इनको हटाना मानव शक्तिके बाहिर है। परन्तु हम देखते हैं कि मनुष्य अपनी बुद्धि शक्ति एवं धन शक्तिके द्वारा रात्रिको दूर कर देता है, पूंजीपतियोंके कारखाने रात दिन चलते हैं, उनका कार्य रात्रिमें भी नहीं रुकता, जब उसके कार्य रातमें भी यथावत् चलते रहते हैं तो उसके लिये रात कैसी? इस प्रकार यद्यपि अपने जीवनमें रात्रिका आगमन नहीं रोक सका, तथापि उसके प्रभावको तो उसने शून्य सा कर दिया, रात्रिमें उसके कार्य दिनकी तरह चलते हैं। वह भविष्यमें आने वाली रात्रियोंके विषयमें पहिलेसे ही जानता है तो माथे पर हाथ रख कर किंकर्तव्य विमूढ सा क्यों नहीं बैठा रहता, भाग्यवादी क्यों नहीं बन जाता, वह क्यों उसके लिये अनेक साधन सोच निकालता है?

आप मसूरीमें आये हैं। वहांके रहने वाले आपके हितैषियोंने आपको वहाँकी वर्षाकाल व शीतकालका पहिलेसे ही परिचय दे दिया, भविष्यमें आने वाली कठिनाइयोंकी सूचना पहिलेसे ही दे दी, वहांकी वर्षा व शीतका रोकना आपके वशका नहीं, तो क्या आप हाथ पर हाथ रखके निराश होकर बैठ जायेंगे? क्या आप आने वाली कठिनाइयोंका ध्यान रखते हुए अपेक्षित सामग्री नहीं जुटायेंगे? वर्षा आगई, झड़ियोंका तांता लग गया। बरसाती छाता आपके पास है आप मौजसे दफ्तर जाते हैं। सारा काम करते में। सूखा ईंधन पहिलेसे ही जुटा हुआ है। प्रायः सभी उपकरण जो उसके पास दुर्लभ हैं आपके पास हैं। बतलाइये अब वर्षाका आना या न आना आपके लिये क्या अन्तर रखता है? यही बात शीतके सम्बन्धमें है। इस प्रकार आप ही सोचिये कि भविष्यका ज्ञान कितना उपकारी है? मिल्टन प्रभृति कुछ लोग भले ही ये कहें कि "एक मेमना (बकरीका बच्चा) जो बलि पर चढ़ने जा रहा है। वह मरनेसे एक क्षण पहिले भी यह घटना नहीं जानता इसीलिये वह मरनेके पहले क्षण तक खूब खाता पीता और कूदता है। उसे कोई चिन्ता नहीं," परन्तु एक पशु और मानव जीवनमें बड़ा अन्तर है। *दूरदर्शिता ही मानव जीवनकी विशेषता है।* एक भारतीय आत्मा—विवेकशील मानव—तो "चरै हरित तृन बलि-पशु जैसे" कह कर उसकी निन्दा ही करेगी। पर हम इसी सिद्धान्त पर पहुंचते हैं कि हम कर्मोंके भोगनेमें परतन्त्र हैं। परन्तु उनके क्रियांशमें कुछ स्वतन्त्र भी हैं। यद्यपि हम सूर्यकी स्थितिको नहीं बदल सकते तो भी उसकी ओर पीठ फेरकर, नेत्रों पर हरे उपनेत्र लगाकर अथवा अन्य किसी साधनसे नेत्रोंको चुंधियानेसे बचा सकते हैं। इसके अतिरिक्त हम जन्मान्तरके लिये शुभाशुभ कर्म सम्पादनमें भी बहुत अंश तक स्वतन्त्र हैं। (इस विषयमें भी स्वतन्त्र निबन्ध लिखनेका प्रयत्न करूंगा) ऊपर कर्मफलको बदलनेका जो निर्देश किया गया है—वह दिग्दर्शन मात्र है। शास्त्रोंमें कर्मफलको बदलनेके लिये अनेकों उपाय बताए गये हैं। वे सभी युक्ति युक्त एवं दृढ़ सिद्धान्तों पर निर्भर हैं। मन्त्र, जाप, ग्रहदान, औषध-स्नान, रत्नधारण और विविध तन्त्र प्रयोग आदि साधन तो वैज्ञानिक अनुभव सिद्ध एवं जन साधारणके लिये अतिशय हितकारक हैं। योगके विविध मार्गोंका कहना ही क्या? परन्तु उन्हें जन साधारणकी सम्पत्ति नहीं कहा जा सकता, अस्तु।

जब हम आगामी जीवनको ज्यौतिष-शास्त्रके द्वारा जानकर उसमें अपनी इच्छानुसार आवश्यक परिवर्तन कर सकते हैं और कर लेते हैं, तो फिर ज्यौतिष शास्त्र हमें क्यों कर भाग्यवादी अकर्मण्य बनाता है? उसके महत्वमें क्या कमी है? यदि कोई एक आध प्रबल कर्म हमारी शक्तिसे बाहर हो जाता है, तो भी क्या हुआ, अधिकतर क्षेत्रोंमें तो सफलता ही मिलती है। ज्योतिष शास्त्र हमें कर्मण्य बनाता है, और आगामी संघर्षके लिये तय्यार करता है। *निश्चय ही मानव जीवनमें ज्योतिषका महत्व इन भौतिक नेत्रों से भी कहीं बढ़कर है।*

भाग्यफल

[लेखक:—श्री पं० नेमिचन्द्रजी शास्त्री ज्योतिषाचार्य]

कार्तिकमासमें जन्मे व्यक्तियोंका फलादेश

इस मासमें जन्मे व्यक्ति विशेष रूपसे सौन्दर्य-प्रेमी होते हैं। ये ईमानदार, बुद्धिमान, कलाकार, न्यायशील और संवेदनशील होते हैं। इनका स्वभाव प्रसन्नता और उदासीनताका मिश्रितरूप होता है। प्राय: ये आनन्द प्रदान करने वाले तथा मधुरप्रिय होते हैं, सदा ये आनन्दकी खोज में रहते हैं। इनका हृदय सर्वदा उछलता हुआ रहता है, ये सदा सजग रहते हैं। मुस्कुराहट, सौन्दर्य परख और प्रेम इनके सहज गुण होते हैं। किसी कार्यकी अधिक छान-बीन करना इन्हें पसन्द नहीं होता, प्रायः परिश्रमसे भी डरते हैं। जहां ये जाते हैं, वहीं इनके सहयोगी तैयार हो जाते हैं। दूसरेको अपनाना इनका प्रधान गुण होता है। प्रेम और आनन्द इनके जीवनके प्रधान लक्ष्य होते हैं।

प्रायः इस मास वाले व्यक्तियोंका जीवन अच्छे कार्योंमें ही लगता है। सार्वजनिक जीवनमें इन्हें अच्छी ख्याति मिलती है, इनका सम्मान सर्वत्र होता है, लोग इनके चरणोंकी पूजा करते हैं। इनमें एक खास विशेषता यह होती है कि ये नीतिज्ञताके कारण कुछ अपने ऐसे अनुयायी तैयार कर लेते हैं, जिनसे इन्हें यश और सम्मान मिलते रहते हैं। इनका स्वभाव मिलनसार होते हुए भी कुछ चिड़चिड़ा होता है तथा जरासी बात को लेकर झुंझलाने लगते हैं। कभी-कभी ये मौजी स्वभावमें आकर अपने हृदयकी सारी बातें कह डालते हैं, पर साधारणतया गंभीर होते हैं।

ललित कलाओंमें इनकी रुचि आरम्भसे होती है। नाटकके पात्र, लेखक गायक, चित्रकार ये अच्छे हो सकते हैं। साधारणतः स्वस्थ होने पर भी पेट और पाचन शक्ति पर विशेष ध्यान रखना पड़ता है। इस मासमें जन्मे व्यक्ति यात्रा प्रेमी होते हैं। इन्हें यात्राएँ अधिक करनी पड़ती हैं तथा यात्राओंसे इन्हें लाभ ही होता है, हानि नहीं। इनका सहज झुकाव विलासिताकी ओर रहता है, पर अपनी विवेक बुद्धिके कारण जहां तक सम्भव होता है, जीतने का प्रयत्न करते हैं। विचारक और प्रचारक दोनों ही ये अच्छे होते हैं। प्रयत्न करने पर जज और डाक्टरका व्यवसाय ग्रहण कर सकते हैं, पर इनका स्वाभाविक झुकाव शिक्षाकी ओर विशेष रहता है।

इस मास वाले व्यक्तियोंमें एक विशेषता यह भी होती है कि इनमें ८० प्रतिशत शिक्षित होते हैं और शेष २० प्रतिशत अशिक्षित होते हैं। परन्तु विद्वानोंकी संख्या कम होती है। कुछ व्यक्ति संगीतज्ञ होते हैं और इस व्यवसाय में उन्हें अच्छी सफलता मिलती है। आलस्यकी मात्रा इस मास वाले व्यक्तियोंमें विशेष रूपसे पायी जाती है। यदि आलस्यको छोड़कर ये परिश्रम करने लगें तो फिर देश और समाजके लिये बड़े कामके हो जाते हैं। चरित्र इनका प्रारम्भमें मलिन, प्रौढ़ अवस्थामें साधारण और वृद्धावस्थामें अच्छा रहता है। धर्म और नैतिकता इनकी दृष्टिमें ऊंची कक्षाकी वस्तु होती है। कभी-कभी ये संसार के समक्ष नई वस्तुएं रखते हैं। प्रारम्भमें तो लोग इनकी वस्तुओंकी मखौल उड़ाते हैं, किन्तु बादमें इनकी वस्तुओं की बड़ी भारी प्रतिष्ठा होती है।

कार्त्तिक मासमें जन्मे व्यक्ति स्फूर्तिमान तथा चंचल होते हैं। एक बार जो इनसे परिचित हो जाता है वह कभी इन्हें भूल नहीं सकता, तथा सदाके लिये इनका भक्त हो जाता है। ये स्वयं बड़े दृढ़ विचारके होते हैं, इसलिये इन्हें प्रभावित करना बड़ा कठिन कार्य होता है। इनकी प्रवृत्ति मातृप्रेमकी ओर अधिक होती है, वनिताप्रेमकी ओर नहीं। आदर्श मार्गको स्थिर रखना भी ये चाहते हैं तथा आदर्शकी पूर्तिके लिये नवीन-नवीन उपाय और रीतियों को भी प्रचलित करते हैं। ये अपने जीवनमें अपने हाथसे सुन्दर गृह-निर्माण कराते हैं।

इनका स्वभाव इतना कोमल होता है कि जरा सी कड़वी बात भी इन्हें तीरकी तरह खटकती है। वास्तवमें ये बड़े भारी भावुक हैं। अपनी निन्दा इन्हें सहन नहीं होती। जो निन्दक होता है, उससे ये बदला लेना चाहते हैं। जब तक उससे बदला नहीं ले लेते, इन्हें संतोष नहीं होता। घर्षित किये जाने पर प्रबल विरोधका सामना करने को तैयार रहते हैं और अन्तिम साँस तक अपने पक्षका समर्थन करते हैं। कभी-कभी कर्त्तव्य से प्रेरित होकर भी इन्हें अपने पक्षका समर्थन करना पड़ता है।

कार्तिक मासमें जन्म ग्रहण करने वाले किसान सफल कृषक नहीं होते, इनसे शारीरिक श्रम अधिक नहीं हो सकता। वैसे तो वे खेती करते हैं, पर उन्हें उसमें न तो आनन्द ही आता है और न वे उसे पसन्द ही करते हैं। तरकारियाँ ये अच्छी उत्पन्न कर सकते हैं तथा बागवानी का कार्य भी निपुणता पूर्वक कर सकते हैं। इसमें विभिन्न प्रकारके फूल तथा वृक्षोंकी पौध लगानेकी अच्छी योग्यता होती है। अपनी प्रखर बुद्धिके कारण बगीचेकी शोभाको अल्प व्यय और अल्प समयमें ही चमका देते हैं।

जिन व्यक्तियोंका जन्म कार्तिक कृष्णा २ को २१ घटी ४६ पल इष्टकाल पर होता है, वे बड़े भाग्यशाली होते हैं और इन्हें नाना प्रकार के सांसारिक भोग उपलब्ध रहते हैं। जिनका जन्म इसी दिन ४६ घटी १४ पल इष्टकालसे लेकर ५४ घटी ३८ पल इष्टकाल के बीच होता है वे प्रायः दुर्भाग्यशाली होते हैं, यों तो वे व्यक्ति भी कर्मठ होते हैं तथा चुपचाप अपने कार्यको पूरा करते हैं। इस मासमें जन्मे व्यक्ति व्यापारी भी होते हैं। साधारणतया कपड़ा, किराना और घीके व्यापारमें इन्हें अच्छा लाभ हो सकता है। कुछ लोग बड़े-बड़े व्यापार भी करते हैं। कपड़ा और चीनीके मिलोंमें अधिक लाभ हो सकता है।

जिन व्यक्तियोंका भाग्य अच्छा होता है, वे लोग अपने सहयोगियोंकी सहायतासे रंगके व्यापारमें अच्छा लाभ उठाते हैं। सोना चांदीके व्यापारमें कम आय होती है। रेश, फाटका, जुआ और लौटरीसे २७ वर्षकी आयुमें कुछ लाभ हो सकता है, किन्तु इतना स्मरण रखना होगा कि ३८, ३६, और ४० वें वर्षकी आयुमें फाटका या जुआमें धन नष्ट होता है। अशुभ ग्रहोंका प्रभाव इस समय बहुत बुरा पड़ता है तथा जुआ या फाटकामें धन हानि होती है।

जिनका जन्म कार्तिक कृष्णा १२, १३, १४ को होता है वे अच्छे व्यापारी होते हैं तथा दान, पुण्य और परोपकार के अनेक कार्य करते हैं। ये प्रायः एक सामान्य पुरुष होते हैं और समाज या देशके भीतर एक नई स्फूर्ति पैदा कर देते हैं। इनके द्वारा जीवनमें अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य होते हैं, किन्तु कृष्ण पक्षमें जन्मे व्यक्ति अधिक भाग्यशाली होते हैं। भयानक विपत्ति के आने पर भी घबड़ाते नहीं हैं और विघ्न बाधाओं को पार करते हुए भी अपने लक्ष्यको प्राप्त कर लेते हैं। इनका जीवन समाज और देशके लिये बड़ा लाभदायक होता है।

इस मासमें जन्मे व्यक्तियोंका भाग्य विद्याके द्वारा जाग्रत होता है। पास-पड़ोस वाले व्यक्ति इस मास वालोंसे अधिक प्रसन्न रहते हैं और समय पड़ने पर इनकी सहायता करते हैं। यों तो इस मास वालोंको जीवनमें कठिनाइयां अधिक से अधिक उठानी पड़ती हैं परन्तु फिर भी प्रसन्न और गतिशील रहते हैं। काम करनेकी इनमें अपूर्व शक्ति होती है और कुछ व्यक्ति महापुरुष भी होते हैं।

विवाह और मित्रता

इस मासमें जन्मे व्यक्ति विवाह और मित्रता करनेमें बड़े चतुर होते हैं। इनके मित्रोंकी एक मंडली रहती है, पर प्रायः सभीके सभी मित्र स्वार्थी होते हैं। समय पड़ने पर एक भी मित्र काम नहीं आता और आवश्यकताके समय मुंह छिपाकर भाग जाते हैं। अधिकांश धन इस मास वालोंका मित्रोंके स्वागतमें खर्च होता है, जो व्यक्ति मित्रों से सजग रहते हैं वे अवश्य उन्नति करते हैं। इनका विवाह प्रायः जल्द हो जाता है। जिन व्यक्तियोंका जन्म समसंख्यक तिथियोंमें होता है, उनका विवाह कुछ देर से और जिनका जन्म विषम संख्यक तिथियोंमें होता है, उनका विवाह जल्द होता है। विवाहके वर्ष ८, १४, १५, १७, १८, १६, २०, २४, २५, २७, २८, ३०, ३२, ३४, ४२, ४६, ५२ हैं।

जिनका जन्म रविवारको १६ घटी ४६ पल इष्टकाल पर हो तो, उनके दो विवाह निश्चित रूपसे होते हैं, इसी दिन २७ घटी ४४ पल इष्टकाल पर जिनका जन्म होता है उनके प्रायः तीन विवाह होते हैं। सोमवार को १७ घटी ४१ पल इष्टकाल पर जिनका जन्म होता है, उन व्यक्तियों

का एक ही विवाह होता है, समसंख्यक घटी और विषम संख्यक पलों वाले इष्टकाल में इसी दिन जिन व्यक्तियोंका जन्म होता है, उनका प्रायः विवाह नहीं होता है, हां, ये व्यक्ति अपना अनुचित सम्बन्ध अवश्य रखते हैं। मंगलवार और बुधवारको जन्म लेने वाले व्यक्तियोंको वैवाहिक सुख अच्छा होता है और इन दिनोंमें जिनका जन्म ४२ घटी ४६ पल इष्टकाल पर होता है वे निश्चित रूप से एक ही विवाह करते हैं। परन्तु ४४ घटी ४२ पल इष्टकाल पर जन्म लेने वाले व्यक्ति बहु विवाह करते हैं या अनेक स्त्रियोंसे सम्बन्ध रखते हैं, जिनका जन्म शुक्रवारको १४ घटी १६ पल इष्टकाल पर होता है वे प्रायः एक ही विवाहसे सन्तुष्ट रहते हैं।

गुरुवारको ३६ घटी १६ पल इष्टकाल पर जन्म लेने वाले व्यक्ति संयमी होते हैं और विवाहके प्रस्तावोंको ठुकारा देते हैं, किन्तु इस दिन जिनका जन्म २६ घटी १४ पल इष्टकाल पर होता है उनको विवाह सम्बन्ध करने पर भी सुख नहीं होता। शनिवार की रात में जिनका जन्म इस मासमें होता है वे प्रायः एक उपपत्नी रखते हैं तथा प्रत्यक्ष रूपसे दो विवाह करते हैं। दिन में १० घटी १६ पल इष्ट काल पर जिनका जन्म होता है—वे निश्चित रूपसे दो पत्नियां रखते हैं, इनका दाम्पत्य-जीवन कलहमें व्यतीत होता है। कभी-कभी ये व्यक्ति विरक्त भी हो जाते हैं, २३ घटी २८ पल इष्टकाल पर जिनका जन्म होता है, उनका दाम्पत्य जीवन अच्छा रहता है, पत्नी अत्यन्त प्रेम करती है तथा सदा आज्ञाका अनुसरण करती है।

अच्छा और बुरा समय

इस मासमें जन्म लेने वाले व्यक्तियोंका भाग्य अच्छा होता है, अतः समस्त जीवनमें कठिनाइयां कम ही आती हैं। इनका साधारणतः भाग्योदय २४ वर्षकी आयुसे होता है। पूर्ण भाग्योदय ३५ वर्षकी आयुमें ही होता है। इनकी उन्नति प्रायः १६, १७, १६, २२, २५, २७, २८, ३२, ३३, ३७, ३८, ३६, ४२, ५१, ५७, ५८, ६२, ६४, ६५, ६७, ६८, ६६, और ७३ वें वर्षोंमें विशेष रूपसे होती है। १५, १८, २४, ३१, ३४, ४३, ४४, ४७, ४८, ५५, ६३, ६६, ६७ और ७८ वें वर्षोंमें कुछ कठिनाइयां आती हैं। विशेष रूपसे ३४ और ३६ वें वर्ष अधिक कष्टदायक होते हैं, इन दोनों वर्षोंमें चिन्ताओंके साथ नाना प्रकारकी बाधाएँ आती हैं जिससे व्यक्ति अपने पेशेकी उन्नतिमें पिछड़ जाता है और एक बार धक्का लगने से कुछ पीछे भी हट जाता है।

यद्यपि ३८ और ३६ वें वर्ष उन्नतिकारक हैं परन्तु परिस्थितिकी प्रतिकूलतासे ये दोनों वर्ष भी कठिनाई दायक हो सकते हैं। व्यक्तिके सारे कारोबार बन्द हो जाते हैं और वह ऐसे गोरखधन्धेमें फँस जाता है, जिससे उसे निकलनेका मार्ग नहीं मिलता। कुछ लोग ऐसी परिस्थितियोंसे घबड़ा कर आत्म-हत्या भी कर लेते हैं। इसलिये ३८ वें और ३९ वें वर्षको खूब सतर्कतासे बिताना चाहिये।

घातक वर्ष

इस मासमें उत्पन्न हुए व्यक्तियोंको हैजा, प्लेग जैसे संक्रामक रोग अधिक होते हैं। इनका बाल्यकाल प्रायः नीरोग बीतता है। १४, १५, १७, १८, २०, २४, ३२, ३८, ४२, ४५, ४७, ४६, ५३, ५४, ५७, ५८, ५९, ६१ ६३, ६४, ६७, ७२, ७३, और ७५ वें वर्षोंमें रोगोंसे कष्ट उठाने पड़ते हैं, इन्हीं वर्षोंमें अल्पायु घातक योग भी होते हैं। इस मास वालोंकी आयु मध्यम होती है। ६४ वर्ष से ऊपर कम ही लोग जीवित रहते हैं।

सन्तान सुख

इस मासमें जन्मे व्यक्तियोंको सन्तान सुख अच्छा रहता है। प्रायः छः पुत्र और तीन कन्याएँ उत्पन्न होती हैं। जिनका जन्म रविवार को रातमें होता है, उन्हें पुत्र सुख उत्तम और कन्या सुख अल्प समझना चाहिये।

रवि, सोम और बुधको जन्मे व्यक्तियोंको साधारण सन्तान सुख होता है। मंगलवारको दिनमें जन्म लेने वाले को २ पुत्र २ कन्याएँ और रातमें जन्म लेने वालेको ४ पुत्र १ कन्या होती हैं। शुक्रको रातमें जन्म लेने वालोंको साधारणतः सन्तान नहीं होती है। शनिवारको जन्मे व्यक्तियोंको तीन पुत्र होते हैं।

आर्थिक स्थिति

इस मास वाले प्रायः धनी होते हैं, इन्हें पैतृक सम्पत्ति भी मिलती है। इनके लिये २०, २४, २५, २८, ३०, ३२, ४०, ४१, ४५, ४६, ५३, ५७, और ६५ वें वर्ष

विशेष लाभके हैं। २१, २३, २७, ३६, ४१, ४३, ५०, ५६ से लेकर ४६ वर्षकी आयु तक आय होती है, पर एक बार हानि भी उठानी पड़ती है।

अनुकूल समय

चैत्र, वैशाख, भादों, पौष ये मास उत्तम होते हैं। शुक्रवार सबसे श्रेष्ठ और मंगलवार सबसे नेष्ट होता है। तिथियोंमें २, ४, ५, ७, ८, १२, १३ और १४, १५ श्रेष्ठ हैं; १, ३ तिथियां अनिष्ट कारक हैं और शेष तिथियां मध्यम हैं।

कार्तिक मासमें जन्मी नारियोंका फलादेश

इस मासमें उत्पन्न हुई नारियां सुन्दर तथा आकर्षक होती हैं। इनके शरीरकी बनावट इतनी अच्छी होती है कि इन्हें देखकर बड़े-बड़े संयमियोंका चित्त भी विचलित हुए बिना नहीं रहता। गृहस्थीके कार्यमें अधिक निपुण नहीं होती हैं और इनमें अल्हड़पना सदा वर्तमान रहता है, अपने दायित्वका इन्हें कम ख्याल रहता है, तथा सारी बातोंको मजाकमें ही उड़ा देना चाहती हैं। यद्यपि सन्तान-प्रेम इनमें रहता है, परन्तु ये सन्तानके लिये अधिक उत्सुक नहीं रहतीं। कलहमय अपना जीवन बिताना इन्हें पसन्द नहीं होता है तथा ललित कलाओंकी ओर इनका स्वाभाविक झुकाव रहता है। संगीत और चित्रकलासे इन्हें अधिक ममत्व होता है, आनन्द और आराम अधिक खोजती हैं।

इनका स्वभाव इतना अधिक मिलनसार होता है कि सास, ननद इन्हें अधिक प्यार करती हैं। आधी रातमें जन्मी देवियोंका दाम्पत्य जीवन भी कलहमय व्यतीत होता है। जिन देवियोंका जन्म गुरुवार और मंगलवारको होता है, उन्हें सन्तान अधिक उत्पन्न होती है तथा इनमें वासना अधिक होती है। इनका ऊपरी जीवन धर्मात्मा, निष्ठावान और नैतिक होता है। श्रद्धालु होना सहज गुण होता है। सोमवार और बुधवारको जन्म लेने वाली नारियोंको कन्याएँ अधिक उत्पन्न होती हैं तथा इनका जीवन संतोष और शांतिका होता है। शुक्रवारको जन्म ग्रहण करने वाली नारियोंका जीवन अधिक कामुक तथा लाञ्छित होता है।

शनिवारको जन्मी नारियाँ चतुर, चालाक और स्वस्थ सन्तानको जन्म देती हैं; यद्यपि इनकी प्रवृत्ति भी अच्छी नहीं होती पर इनका दिखावटी जीवन अच्छा रहता है। इस मास वाली नारियोंको पतिदेव शिक्षित या अर्धशिक्षित मिलते हैं। धनके ख्यालसे धनी घरानोंमें इनका सम्बन्ध होता है। १, ३, ५, ६, ८, ६, ११, १४, १५, १७, १८, २०, २१, २४, २८, ३२, ३८, ४२, ४६, ४६ और ५५ वें वर्ष कष्ट दायक होते हैं।

जिन देवियोंका जन्म इस महीनेमें रविवारको होता है, उनका विवाह धनी घरानेमें तथा शिक्षित वरके साथ, सोमवारको जन्म होता है उनका विवाह मध्य वित्त वाले घरमें तथा साधारण शिक्षित व्यक्तिके साथ; जिनका मंगलवारको जन्म इस मासमें होता है उनका विवाह जमीन्दार, कृषकके घरमें अर्द्ध शिक्षित या अशिक्षितके साथ; जिनका बुधवारको जन्म होता है उनका नौकरी पेशेवाले घरमें शिक्षित व्यक्तिके साथ। गुरुवारको सन्ध्याकालमें जन्म होता है उनका विवाह सम्पन्न शिक्षित घरमें; शुक्रवारको जिनका जन्म होता है उनका विवाह अशिक्षित, नीच प्रवृत्ति वाले घरमें और जिनका जन्म शनिवारको होता है उनका विवाह लुहार, सुनार, कृषक जैसे पेशे वालोंके घरमें होता है। इस मास वाली देवियोंकी आर्थिक स्थिति साधारणतः अच्छी होती है। कन्याएँ अधिक उत्पन्न होनेके कारण इन्हें मानसिक कष्ट होता है।

प्राकृतिक स्वास्थ्य-साधना—

अर्श-बवासीर-की सफल चिकित्सा

[लेखक—डा० श्री हरिकृष्णदास डी० गांधी, एम. ए., आयुर्वेद भिषग्वर]

[अर्श वा बवासीर कैसे होती है ? बवासीर पर औषधि क्यों सफल नहीं होती ? बवासीरके रोगीके लिए हितकर नियम कौन-कौनसे हैं ? प्राकृतिक चिकित्सासे बवासीर कैसे दूर होती है ? बवासीर कोई स्वतन्त्र रोग नहीं है, अपितु रोगका लक्षणमात्र है, अतः तदुत्पीड़ित रोगियों को प्रस्तुत लेख पढ़ कर इससे छुटकारा पानेके उपाय करने चाहिएँ। —सम्पादक]

बवासीरका रोग प्रकृति विरोधी जीवनका दण्ड है। प्राकृतिक हाजतके समय बह जाने वाले रक्त और असह्य पीड़ाका जिसे अनुभव हुआ होगा, वह अच्छी तरह जानता होगा कि बवासीर कितनी दुःखद और भयानक बीमारी है। बवासीरका रोगी शय्यावश नहीं होता, रोगी जैसा प्रतीत नहीं होता। फिर भी वह बेचारा मूक वेदनाका भयंकर रूपसे पीड़ित रोगी होता है।

रोगका रहस्य

अधिकांश लोग रोगका कारण खोज निकालनेकी चेष्टा नहीं करते। यह लोग तो जो रोग दिखाई देता है, उसे दूर करनेकी चिन्तामें पाये जाते हैं। बवासीर रोग नहीं, बल्कि रोगका लक्षण है। लक्षण दूर कर देने मात्रसे ही रोग दूर नहीं हो जाता, पत्तोंको नष्ट कर देनेसे ही किसी वृक्ष का नाश सम्भव नहीं। वृक्षके मूलमें कुल्हाड़ी मारने वालेको यह आवश्यक नहीं कि वह फूल पत्तोंको नोच-खसोट कर वृक्षको नष्ट करे। बवासीरसे अनेकशः लोग पीड़ित होते हैं। यह रोग भयंकर न होने पर भी अनेक भयंकर स्थितियोंका जन्मदाता हो सकता है। बवासीरका रक्त यदि अत्यधिक निकल जाता है तो रोगी शिथिल निर्बल और पाण्डु रोग से ग्रस्त हो जाता है।

बवासीर कैसे होती है ?

हृदय और रक्त-संचालन क्रियामें विक्षेप पड़नेसे अथवा हृदयकी और रक्तकी गतिमें अवरोध होनेसे बवासीर उत्पन्न हो जाती है। दीर्घकाल तक एक स्थान पर खड़े रहने, अति संकीर्ण वस्त्र पहनने, पेटकी वायु या अकर्मण्य जीवनके कारण रक्तकी गति या संचालनकी अव्यवस्था होती है, फलतः बवासीर होती है।

बवासीरकी माता कब्जियत

बवासीरकी जन्मदात्री कब्जियत है। बवासीरसे पीड़ित प्रत्येक रोगी आरम्भमें कब्जियतका शिकार होता है। मल बड़ी आंतके अन्तिम भागमें एकत्र होता है। यथासमय बाहर न निकलनेसे उसका पानी सूख जाता है और वह इतना कड़ा लोहे जैसा हो जाता है कि उसका बाहर निकलना असम्भव हो जाता है। रोगी कब्जियतसे मुक्त होनेके लिए जुलाब लेता है। जुलाबकी विषाक्त औषधि और टट्टीके समय जोर लगानेसे गुदा-द्वारपर रक्तका दबाव होनेके फलस्वरूप बवासीर होती है।

यकृत् और बवासीर

बहुत कम लोग जानते हैं कि यकृत्की विकृतिसे भी बवासीर हो जाती है। लीवर की खराबीसे आवश्यक परिमाणमें पित्त आंतोंमें नहीं मिलता, फलतः आंतोंके उचित रूपमें स्निग्ध और नरम न होनेसे कब्जियत होती है। कब्जियतके कारण अशुद्ध रक्तवाहिनियोंके रक्त भ्रमणमें विघ्न आ पड़ता है। गुदा द्वार और बड़ी आंतके निम्नस्तरीय अशुद्ध रक्तको रक्तवाहिनी लीवरमेंसे होकर हृदयकी ओर ले जाती है। यदि यकृत, (लीवर) विकृत होता है तो यह कार्य सरलतासे नहीं होता और अशुद्ध रक्तवाहिनीका रक्त हृदयकी ओर न जाकर गुदा द्वारकी ओर जानेके लिए बाध्य होता है। गुदाके अन्तिम भागकी नस रक्तके दबावके कारण फूलती है और कठिन मलके जोरसे फट जाती है,

जिसे मस्सा या बवासीर कह कर पुकारते हैं। इसके अतिरिक्त सामर्थ्यसे अधिक वजन उठाने वाले, दम बाँधकर दण्ड बैठक और मल्ल-युद्ध करने वाले, आहारमें अति और असावधानी करने वाले लोग भी बवासीरको आमंत्रित करते हैं।

बवासीरके प्रकार

बवासीर दो प्रकारकी होती है:—

(१) आन्तरिक और (२) बाहरी। संक्षेपमें गुदाके किनारे या आन्तरिक भागमें मांसके जो अंकुर हो जाते हैं उन्हें मस्सा अथवा बवासीर कहा जाता है। जिस बवासीर से रक्त गिरता है, उसे रक्तार्श (खूनी बवासीर) और जिससे खून नहीं झरता उसे बादी कहा जाता है। बवासीरका रक्त बूंद-बूंद अथवा धार-बन्ध गिरता है।

बवासीरका सफल उपाय

बवासीरका उपाय एलोपैथीमें चीरफाड़का है। शस्त्र क्रियासे बहुत हुआ तो बाहरी मस्सेमें थोड़ा बहुत आराम कुछ समयके लिए मिल जाता है। स्थायी सफलता नहीं मिलती। शस्त्र चिकित्सासे स्थानीय स्नायु अपनी स्थिति स्थापकतासे हाथ धो बैठते हैं और उनमें शिथिलता आ जाती है, फलतः रोग पुन: गुलांट लगाता है। इसमें भी आन्तरिक बवासीरको काटनेकी रीति बड़ी ही भयानक है। प्राकृतिक चिकित्साका विधान इससे सर्वथा भिन्न है। प्राकृतिक चिकित्सा एक बहुमूल्य उपदेश देती है। वह यह कि "रोग पर प्रहार न कर रोगके उत्पादक मूल कारण पर सीधा प्रहार कर उसे पराभूत किया जाये।"

बवासीरमें आहार-चिकित्सा

प्रस्तुत रोगका कारण हमारा आहार विषयक अज्ञान है। अति तीक्ष्ण, गरम पदार्थ, मिर्च-मसाले, मैदेके गरिष्ठ और अपथ्य पदार्थ, अपच, कब्ज आदि उत्पन्न कर बवासीरका मार्ग प्रशस्त कर देते हैं और रोगको अपना स्थान ग्रहण करनेका सुअवसर प्रदान करते हैं। बवासीर दूर करनेसे पहले कब्ज दूर करना नितान्त आवश्यक है। बवासीरके रोगीकी कब्जियत अन्य कब्जियतके रोगीकी अपेक्षा विशेष प्रकारकी चिकित्सा चाहती है। रक्तार्शके रोगीकी आंतें अत्यन्त कोमल और निर्बल होती हैं। उन पर तनिक भी दबाव पड़नेसे रक्त बहने लगता है। अत: ऐसे रोगी को विवेक बुद्धिसे अपने आहारका आयोजन करना चाहिए। और ऐसा आहार लेना चाहिए, जिससे मल ढीला हो और कब्ज न रहे। दाल पचनेमें भारी होती है, आंतोंकी गरमी बढ़ाती है और वायु उत्पन्न करती है। इससे प्रायः कब्जियत भी होती रहती है। खाद्यपदार्थोंको उचित रूपमें न चबानेसे मल कठिन उतरता है। यव, चावल, साबूदाना, शाक-सब्जियां (विशेषत: पालक, बथुवा, मेथी, सोवा आदि) सामयिक शाक, (परमल, करेला, मूली आदि) पके केले, तरबूज नासपाती जैसे फल और दूध बवासीरके रोगीके लिए उपादेय हैं। सूखे फलोंमें अन्जीर, द्राक्षादि हितकर हैं। नारियलका पानी स्वेच्छानुसार पिया जा सकता है। आंवला, मूंग, नींबूका रस और टमाटर भी लाभ पहुंचाता है। सूरन (जमींकन्द) बवासीरके लिए सस्ती और लाभप्रद औषधि है। सूरन (जमीकन्द) को आहारमें अग्र स्थान देने पर शरीरमें बवासीरका चिन्ह भी न रहने पायेगा। सूरनपाक, सूरनका शाक, सूरनके लड्डू और सूरनका हलुवा आदि कई प्रकारसे सूरनका उपयोग किया जा सकता है। सूरनकी कतरियाँ अग्निमें सेकें और उन पर मक्खन इलायची और शक्करका मिश्रण लेपकर खूब चबाकर खायें। एक सफल उपाय छाछका है। भोजन के समय या बादमें गाढ़ी छाछमें नमक, चित्रक, पीपर, पिपरीमूल और सोंठका समान मिश्रित चूर्ण आधा या पौना तोला डालकर पीया जाये। यह वस्तुएँ सर्वथा निर्दोष हैं। अनारके दाने दो तोले इनकी दूनी शक्कर (चीनी) पानी में डालकर हिलायें और यह पानी पी जायें। यह प्रयोग सात दिन तक करें। मस्सेमेंसे रक्त टपकता हो तो नागकेसर, काले तिल और मक्खन खाते रहें, मलाई उतारा दही भी खायें। अथवा गाजरका रस २॥ तोले, पालकका रस ५ तोले, टमाटरका रस ५ तोले, और अंगूरका रस २॥ तोले यह १५ तोले का मिश्रण दिनमें एक या दो बार पिया जाये। पुराने या बहुत आगे बढ़े हुए रोगमें तीन या पांच दिनका उपवास करना चाहिए। उपवाससे आंतोंको आराम मिलेगा। चयापचयकी क्रिया व्यवस्थित होगी। बवासीरको प्रोत्साहन देने वाले विष दूर होंगे और रक्तकी प्रत्यम्लता

बढ़ेगी। मोसम्बी (मीठे नीम्बू) या अंगूरका रस लेकर उपवास या पारण किया जाये। उपवास कालमें नियमित रूपसे खट्टे नीम्बूके पानीका एनिमा लेना चाहिए।

मिट्टीका उपचार

आंतोंके संकोचन-प्रसारणकी क्रियाको सुव्यवस्थित करने और पेटके स्नायु-जालकी आन्तरिक शक्ति बढ़ानेमें मिट्टी-जैसा अन्य एक भी निर्दोष उपाय नहीं। बवासीरके रक्तस्रावको रोकने और मस्सेको सुखा देनेमें मिट्टीका प्रयोग सफल होता है। पौन सेर मिट्टीको खूब शीतल जलमें भिगोये और ८ इंच चौड़े तथा ८ इंच लम्बे पतले कपड़े पर उसे फैलायें और पेटपर इस प्रकार रखें कि कपड़ेपर पेट रहे और कपड़ा ठीक-ठीक पेटसे चिपक जाये। तत्पश्चात् कपड़ेका दूसरा टुकड़ा मिट्टीपर फैलाकर गरम कपड़ा रखनेके बाद उस पर एक लम्बा-चौड़ा कपड़ा लपेट दें। इसके अतिरिक्त मल द्वार पर १-१॥ पाव भीगी मिट्टी कपड़ेपर रख कर लंगोट बांध लें। मिट्टी काली या खेतकी हो। एक बार प्रयुक्त मिट्टीका प्रयोग दुबारा न करें। आरम्भमें आधा घण्टे तक मिट्टी रखें। अभ्यास हो जाने पर ३-४ घण्टे तक भी मिट्टी रखी जा सकती है। दिनमें दो बार—सवेरे और रातमें मिट्टी रखें। कमसे कम रातमें एक बार नित्य मिट्टीका प्रयोग आवश्यक है। भोजनके दो घण्टे बाद या दो घण्टे पहले मिट्टीका प्रयोग करें अर्थात् भोजनके बाद तुरन्त मिट्टीका प्रयोग न करें और मिट्टीके रखनेके बाद तुरन्त भोजन न करें। मिट्टी निकाल लेनेके बाद टहलने या गहरे श्वासोच्छ्वासका व्यायाम करना हितकर होगा।

कुछ आवश्यक बातें

(१) कब्जसे सदैव बचें, और हरड़ या ईसबगोलकी फंकी रातमें लें। प्रातः-सायं कुछ गरम जलमें १-१ खट्टा नीम्बू निचोड़ कर पी लें। दिन भर स्वेच्छानुसार अधिकाधिक जल पियें। बवासीरके रोगी प्रायः पानी कम पीते हैं, यह उचित नहीं।

(२) बवासीर और उसमें भी पुराने रोगमें व्यायाम हानिप्रद है। साइकल चलाना, घोड़ेपर बैठना, पहाड़पर चढ़ना आदिसे बचना आवश्यक है। धीरे-धीरे टहलनेका व्यायाम हितकर होगा। यह बात केवल उन्हीं रोगियोंके लिये है, जो अति निर्बल, पाण्डु-रोगी और क्षीणकाय हैं।

(३) बवासीरमें शीर्षासन और सर्वाङ्गासन लाभदायक हैं। यह आसन अधिक समयतक किये जा सकते हैं। यथा सम्भव रीढ और पेटको व्यायाम देने वाले आसन और गहरे श्वसोच्छ्वास करें। शरीरको थका कर शिथिल कर देने वाले कठोर व्यायामसे बचते रहें। अधिक समय तक अधिक शीतल स्थानपर न रहें।

(४) किसी प्रकारका भी जुलाब न लें। शराब और तम्बाकूसे बहुत दूर रहें। चाय पीनेपर नियन्त्रण लगायें। बहुत शक्कर वाले चिकने पदार्थोंसे बचें। यह सब वस्तुयें यकृत्को बिगाड़ देती हैं। यकृतका विकार ही बवासीरका जन्मदाता है, यह हम ऊपर लिख चुके हैं।

(५) सूर्यस्नान, वायुस्नान अवश्य करें। सूर्यस्नानसे शरीरमें रक्तसंचालन-क्रिया तीव्र बनती है, फलतः जीवन शक्ति बढ़ती जाती है और रोग-प्रतिरोधक शक्तिमें स्वभावतः वृद्धि होती है। रीढ़, आंतों और आमाशयकी मालिश नियम पूर्वक करते रहें। मालिशकी व्यवस्था न हो, तो एक तवलियेको शीतल जलमें भिगोकर उसके दोनों छोरोंको पकड़ कर अच्छी तरह रीढ़ और पेटके अंगों पर रगड़ें। भीगे तवलियेकी घर्षण-क्रिया करनेके बाद सूखे तौलियेसे भी उक्त अवयवोंको रगड़ कर अच्छी तरह पोंछ डालें।

इस लेखमें केवल वही उपाय बताये गये हैं, जो घरमें सरलतासे किये जा सकते हैं।

—०—

सदुपदेश

यह संसार इस जीवको अपने अनन्त प्रवाहमें बहाने की चेष्टा करता रहता है। धर्म इसे धारण किए रखता है, संसारके प्रवाहमें बहने नहीं देता है। इसी कारण धर्म हमारा रक्षक है। सबसे बड़ा मित्र है। धर्मको छोड़नेसे धर्मका कुछ नहीं बिगड़ता है। धर्म छोड़ने वाले व्यक्तिसे समाज और राष्ट्रकी ही हानि होती है। वह शान्ति सम्पदा तथा सुख नहीं पा सकता है। सदा व्याकुल अशान्त रहता है।

अनुभूत-योगमाला

[ले०—राजगुरु ज्योतिषालङ्कार श्री पं० तारादत्तजी राजज्योतिषी]

(१) जिसके जन्म-समयमें लग्नेश और अष्टमेश द्विस्वभाव राशिमें होते हैं, उसकी आयु मध्यम होती है।

(२) जिसके जन्म-समयमें लग्नेश चर राशिमें और अष्टमेश स्थिर राशिमें है, उसकी आयु मध्यम होती है।

(३) जिसके जन्म-समयमें लग्नेश स्थिर राशिमें और अष्टमेश चर राशिमें हो उसकी आयु मध्यम होती है।

(४) जिसके जन्म-समयमें लग्नेश और अष्टमेश स्थिर राशिमें होते हैं, उसकी आयु अल्प होती है।

(५) जिसके जन्म-समयमें लग्नेश चर राशिमें और अष्टमेश द्विस्वभाव राशिमें होता है, उसकी आयु अल्प होती है।

(६) जिसके जन्म-समयमें लग्नेश द्विस्वभाव राशिमें और अष्टमेश चर राशिमें होता है, उसकी अल्पायु होती है।

प्रथम द्वितीययोरन्त्ययोर्वा मध्यम्।
मध्ययोराद्यन्तयोर्वा हीनम् ॥

उपपत्तिः—जिसके जन्म-समयमें लग्नेश और अष्टमेश चर राशिमें होते हैं, उसकी जीवन-शक्तियां चरत्वके प्रभावसे दीर्घकाल तक कार्य करती हैं। जिसके जन्म-समयमें लग्नेश और अष्टमेश स्थिर राशिमें होते हैं, उसकी जीवन-शक्तियां स्थिरत्वके प्रभावसे थोड़े समय तक कार्य करती हैं। द्विस्वभाव राशिमें चरत्व और स्थिरत्व दोनों मिश्रित हैं। इसलिए जिसके जन्म-समयमें लग्नेश और अष्टमेश द्विस्वभाव राशिमें होते हैं, उसकी जीवन-शक्तियां द्विस्वभावत्वके प्रभावसे मध्यम समय तक कार्य करती हैं। इसलिए उसकी आयु मध्यम होती है।

जिसके जन्म-समयमें अव्यवहित राशियोंमें स्थित लग्नेश और अष्टमेश वा उनकी व्याप्त शक्तियोंके साथ वे अव्यवहित राशियोंमें द्विस्वभाव राशियोंके मध्यमें होते हैं, उसकी जीवन-शक्तियां भी उस व्यक्तिके जिसके जन्म-समयमें लग्नेश और अष्टमेश द्वि स्वभाव राशि में होते हैं, जीवन-शक्तियोंके समान मध्यम काल तक कार्य करती है। इसलिए उसकी आयु भी मध्यम होती है।

जिसके जन्म-समयमें लग्नेश और अष्टमेश स्थिर राशि में होते हैं, उसकी जीवन-शक्तियां स्थिरत्वके प्रभावसे थोड़े समय तक कार्य करती हैं। इसलिए उसकी आयु अल्प होती है।

जिसके जन्म-समयमें अव्यवहित राशियोंमें स्थित लग्नेश और अष्टमेश वा उनकी व्याप्त शक्तियोंके साथ वे अव्यवहित राशियोंमें स्थिर राशियोंके मध्यमें होते हैं, उसकी जीवन-शक्तियां भी उस व्यक्तिकी जिसके जन्म-समयमें लग्नेश और अष्टमेश स्थिर राशिमें होते हैं, जीवन-शक्तियोंके समान अल्प काल तक कार्य करती हैं। इसलिए उसकी आयु भी अल्प होती है।

इस लेखके साररूप स्वनिर्मित दो श्लोक—

यदि पितृ दिनेशौ द्वितनौ, तौ शक्ती तदन्तरे च मध्यायुः।
तत् प्रथमद्वितीययोरन्त्ययोर्वा मध्यमित्याहुः ॥
यदि पितृदिनेशौ स्थिरभे, तौ शक्ती स्थिरान्तरे च हीनायुः।
मध्ययोराद्यन्तयोर्वा हीनमित्युच्यते तस्मात् ॥

—०—

स्मरणीय सूक्ति

हम आर्य हैं। हमारा दूसरा नाम 'हिन्दू' है। हमारे धर्मका नाम 'सनातन धर्म' है। हमारे मुख्य धर्मशास्त्रका नाम वेद है। उसीके ज्ञानका वर्णन रामायण, महाभारत, पुराण, स्मृति आदि करते हैं। हमारे इष्टदेवका नाम परम ब्रह्म परमात्मा है। हमारी धर्मभूमि, पितृभूमि और मातृभूमि यह विशाल भारत देश ही है। हम सब यहाँके ही आदिवासी हैं। किसी परदेशसे नहीं आये हैं। हम ईश्वर के अंश हैं, वानरोंकी सन्तान नहीं—'अमृतस्य पुत्राः' (वेद)

विंशोत्तरी दशा-विवेचन

[श्री बद्रीप्रसाद गुप्त ब्यानिया गणकचूड़ामणि]

श्री गौड़जी ! आपने 'श्रीस्वाध्याय'' के 'हेमन्ताङ्क'में मेरे कृत्तिकादि फलित विचारके लेखपर विरोध करके कुछ शिक्षाप्रद शब्दोंके प्रयोग द्वारा प्रश्नोंका उत्तर मांगा है।

इस ज्योतिष-शास्त्रमें मैं तो अति तुच्छ बुद्धिका इतनी समझ नहीं रखता कि आप जैसे पारङ्गत ज्योतिर्विदोंके समक्ष प्रश्नोंका यथायोग्य समाधान कर सकूँ। कुछ टूटे फूटे विचार दे रहा हूँ।

आपका प्रश्न है कि, आप सबको विंशोत्तरी दशा मानने का निर्णय बतलाना तथा पाराशरीमें केवल कृष्णपक्षमें रवि होरा और शुक्लपक्षमें चन्द्रहोरा पर कृत्तिकादिसे मानना कहते हैं, फिर शेषको क्या प्रमाण चाहिये। श्रीमान्‌जी, स्यात् आपने मेरा लेख बराबर पढ़ा नहीं। मैंने यह कहां लिखा है कि बम्बई प्रेसकी पाराशरीसे विंशोत्तरीका साधन किया जाये जिससे प्रश्नका भार आपने मेरे ऊपर डाला है। मैंने तो जिस पाराशरीसे कलियुगमें विंशोत्तरी दशा माननेका लेख जिस जगह दिया है उससे पहले ही उस पाराशरीका प्रमाण यह दे दिया है कि इसमें कृत्तिकादि ही दशा लगाने का श्लोक है। बम्बई प्रेसकी पाराशरीसे तो मैंने ये सिद्ध किया है कि इसमें आधार (आर्द्रादि) प्रेसकी भूल नहीं है जैसा कि आप बतलाते हैं। इसलिए जिस पाराशरी तथा अन्य ग्रन्थोंसे आपने मुझसे पहले ही वर्ष १३के अंक ३, ४ में यह कहा है कि कलियुगमें विंशोत्तरी दशा ही स्वीकार की है, उनसे आप ही स्पष्ट करेंगे कि उसमें विंशोत्तरी दशा लगानेका क्या क्रम है?

आप जिस बम्बई प्रेसकी पाराशरीके पद्योंमें 'दशाफल दर्पण' द्वारा प्रेसकी भूल बताकर संशोधन का विचार देते हैं। प्रथम तो आप ही वर्ष १३के अंक ४में स्वयं शंका करते हैं कि ग्रंथकर्ताने १८वें श्लोकमें विंशोत्तरीके अतिरिक्त षोडशोत्तरी बताई है इससे भूल न होनेका प्रश्न तै होता है। दूसरे यदि आपके कथनानुसार दशाफलदर्पणके श्लोक १२में आधारकी जगह आर्द्रा ही मान लिया जावे तो आप ही विचार करें कि १३वें श्लोकमें जैसे यह दिया है कि "कृष्णे तु रविहोरायां चंद्रहोरागते सिते। दहनात्स्वर्क्षपर्यन्तमिति।" तो फिर इसमें यह नहीं है कि इसके विपरीतमें आर्द्रादि गणना की जावे। और ऋषि आचार्य अधूरा पद्य देते नहीं और आपका ये कथन कि शेष आर्द्रा मानना युक्ति संगत हो जाता है, शास्त्रानुसार उचित रहेगा। इससे पाराशरीका श्लोक १८ व्यर्थ हो जाता है। तीसरे इसमें आपका ये कथन ही नहीं है कि कलियुगमें विंशोत्तरी दशा मानी जावे।

लघुपाराशरीका जो आधा पद्य आपने वर्ष १३के अंक ३में ये दिया है कि "दशा विंशोत्तरी चात्र ग्राह्या नाष्टोत्तरी मता" इससे भी ये स्पष्ट नहीं है कि कलियुगमें विंशोत्तरी दशा ही ग्राह्य है, क्योंकि लघुपाराशरीमें श्लोक २, ३ का ये आशय निकलता है कि मैं पाराशर प्रणीत होराके पथ पर यथामति उडुदाय प्रदीप नामक पुस्तकको संपादित करता हूँ इसमें (पाराशर प्रणीत होरामें) फलोंके लिए नक्षत्र दशा प्रकारमें विंशोत्तरी दशा ग्राह्य की है, अष्टोत्तरी नहीं।

इसलिए जब आप कलियुगमें स्वीकृत विंशोत्तरी वाले ग्रंथ पर दृष्टि डालेंगे तो उससे विंशोत्तरी साधनका क्रम कलियुगमें क्या दिया है स्पष्ट हो सकेगा।

मैंने जो आपके लेखका समर्थन करते हुए कलियुगमें विंशोत्तरी माननेका निर्णय दिया है वह उस पाराशर प्रणीत पाराशरी से है जो पं० श्री सीताराम जी झाने उस पुरानी हस्तलिखित प्रतिसे निकाला है जो दैवज्ञ शिरोमणि पं० श्री जीवानाथजी झासे प्राप्त हुई है और लघुपाराशरीके श्लोक २, ३से प्रमाणित होती है। उसमें मेरे निर्णयका ये प्रमाण कि कलियुगमें विंशोत्तरी दशा ही ग्राह्य है, विद्यमान है। उसमें विंशोत्तरीका साधन केवल कृत्तिकादि है, आर्द्रादि नहीं।

दशाफलदर्पण ८६ वर्ष पूर्वका संगृहीत है। और कृत्तिकादि गणना बहुत पुराने समयसे चली आ रही है— जैसा कि जातकपरिजात जो ५२६ वर्ष पूर्वका है, तथा मान-

सागरी, ज्योतिष-श्यामसंग्रह, ज्योतिषसार, श्लोकशतक, दशाफल नामक पुरानी हस्तलिखित प्रति मद्रास गवर्नमेंट लायब्रेरी नं० १३७७१, १३८७४, १३८७५ से स्पष्ट होता है और ताजिक ग्रंथोंमें भी बहुत पुराने समयसे मुद्दा दशाका साधन कृत्तिकादि ही है। प्रेसकी भूल तो दशाफल-दर्पणमें भी विचार की जा सकती है।

आप कृपया वर्ष १४के अंक २में गणितमार्तण्ड पं० श्रीचिम्मनलालजीके लेख पर भी दृष्टि डालें जिन्होंने वेद, स्मृति तथा पुराणादिसे कृत्तिकादि दशा ही सिद्ध की है।

आपने वर्ष १३के अंक ४में लिखा है कि प्राचीन समयमें विंशोत्तरी बनानेके दो प्रकार थे। परंतु प्रमाण कोई नहीं दिया। ऐसी दशामें यदि आप किसी प्राचीन ग्रंथका प्रमाण देनेकी कृपा करेंगे तो उचित होगा ताकि अन्य विद्धज्जन आपकी सत्यताको ग्रहण कर सकें और अभिमानमें सत्यकी उपेक्षा न हो।

आपने लिखा है कि चन्द्र लग्नसे योग माननेका कोई प्रमाण नहीं है। यदि लग्न और चन्द्र दोनोंसे पाराशरी तत्वानुसार शुभाशुभ फल देखने लगेंगे तो प्रायः अशुभ रहेगा ही नहीं। श्रीमान् जी ! ये लघु पाराशरी श्लोक २, ३ के अनुसार बृहत्पाराशर होरासे बनाई गई है और बृहत्पाराशर होरा बम्बई प्रेसके अध्याय २६ श्लोक ४६, ५० में ये दिया हुआ है :—

लग्नगेष्वंशगेष्वेषु जायते यदि मानवः।
यस्य जन्मनि चन्द्रो वा युक्तः स्वांशेषु संस्थितः॥१॥
तस्यैते कथिता योगाः सफलाः परिकीर्तिताः।
पूर्णं न्यूनफलं विप्र ! ग्रहयुक्तानुसारतः॥२॥

इसी कारण लघुपाराशरीमें सूक्ष्मतया श्लोक ४ आदिमें यह दिया है—

बुधैर्भावादयः सर्वे ज्ञेयाः मामान्यशास्त्रतः।
एतच्छास्त्रानुसारेण संज्ञां ब्रूमो विशेषतः॥

बुद्धिमान् सम्पूर्ण भावादि (ज्योतिषशास्त्रके सब पदार्थ आदि)को तो सामान्य शास्त्रसे जान लें इसमें विशेष रूपसे शास्त्रानुसार संज्ञाको देता हूँ।

अब कृपया विचार करेंगे कि इन प्रमाणोंके अनुसार योगादि चंद्रलग्नसे देखना अनुचित रहेगा। ऐसा विचार कि यदि लग्न या चन्द्रमा दोनोंसे देखे जावेंगे तो सब ही ग्रह शुभ तथा कारक हो जावेंगे, कोई अशुभ रहेगा ही नहीं। मेरे विचारमें ऐसा नहीं होगा क्योंकि प्रत्येक ग्रंथमें ये दिया हुआ है कि लग्न तथा चन्द्रादिमें जो बलवान् हो उससे विशेष फल होगा। मानसागरी-पद्धतिमें भी चंद्रमाको प्राण होनेसे प्रधान बली तथा बीज स्वरूप कहा है और लग्न तथा चंद्रमा दोनोंसे फल देखनेको कहा है यथा—

लग्नं देहो वर्गषट्कोडुकानि
प्राणश्चंद्रो धातवोऽन्ये ग्रहेन्द्राः।
प्राणे नष्टे देहधात्वंगनाशो
यस्मात्तस्माच्चन्द्रवीर्यप्रधानः॥१॥
इंदुः सर्वत्र बीजाभो लग्नं च कुसुमप्रभम्।
फलेन सदृशोंऽशश्च भावः स्वादुरसःस्मृतः॥२॥
लग्नमात्मा मनश्चंद्रः तदात्मा जीवयोगकम्।
लग्नाद्वा शशांकाद्वा ग्रहाणां फलमादिशेत्॥३॥

लघुपाराशरीमें ऐसा भी लिखा नहीं है कि ये योग केवल जन्मलग्न के लिए ही हैं।

कन्या लग्नकी कुण्डलीमें शनि, बुधको सर्वोत्तम मान कर ये पूछा है कि इनका फल इनकी दशामें क्यों नहीं हुआ जो शुक्रमें हुआ है। मेरे विचारमें यह सर्वोत्तम नहीं हैं, सामान्य हैं। क्योंकि प्रथम तो जन्मलग्नकी अपेक्षा चन्द्रलग्न बलवान् है और बुध चन्द्रलग्नसे ३।१२ भावका स्वामी होकर जन्मकालमें अस्त तथा वक्री है और शनि भी वक्री है इसलिये बम्बई प्रेस पाराशरी २८।१८ के अनुसार योग कारक नहीं हैं, अपितु योग नाशक हैं। यदि जन्म लग्नसे भी देखा जावे तो इन दोनोंका सम्बन्ध आयेशसे है, इसलिये लघुपाराशरी श्लोक १४ के अनुसार विशेष योग कारक नहीं हैं। और बुध कर्मेशका लाभेश चन्द्रमासे संबंध है इसलिये श्लोक २२ के अनुसार योगकारक नहीं है, अपितु योगभंग कारक है। अब आप विचार करेंगे कि ये सर्वोत्तम कैसे हो सकेंगे।

वर्ष १३ के अंक ३ में आपने जो वृश्चिकलग्नकी कुण्डली देकर लिखा है कि इन्हें चन्द्रमाकी दशामें विशेष हानि रही, धीरे धीरे महान् धन हानि हो चुकी है, प्रायः सभी विद्वानोंने अच्छा बताया है और चंद्रमा, लग्न तथा चन्द्र दोनों प्रकारसे कारक है फिर इसमें हानि क्यों हुई ?

क्या पुराणोंकी बातोंको गप्प बताना उचित है ?

एक आर्य सन्यासीकी जबानी अपनी बीती सत्य कहानी

[गताङ्कसे आगे]

[लेखक:—भक्त श्रीरामशरणदासजी]

हम इससे पहिले 'श्रीस्वाध्याय' के गताङ्कमें यह बता आये हैं कि विश्वविख्यात आर्य सन्यासी महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वतीजी महाराज पिलखुवा हमारे स्थान पर पधारे थे और तीन चार दिन ठहर कर हिन्दू-कोड और गोवधके विरोधमें भाषण देते रहे थे। आप भूतपूर्व महाशय खुशहालचंद 'मिलाप' वाले हैं और माने हुए आर्य नेता हैं। आपके जीवनकी कुछ अद्भुत आश्चर्यजनक सत्य घटनायें और आपके विचार हम 'श्रीस्वाध्याय'के गताङ्कोंमें रख चुके हैं। अब अवशिष्ट कुछ घटनायें और आपके सदुपदेश एवं विचार पाठकोंके सामने और रखते हैं जिससे स्पष्ट हो जायगा कि सनातनधर्मकी और पुराणोंकी बातें गप्प नहीं हैं वरन् अक्षर अक्षर सोलह आने बिल्कुल सत्य हैं और उनके माननेमें ही हमारा, हमारे देश और जातिका कल्याण है। आशा है पाठक जरा इन्हें ध्यानसे पढ़नेकी कृपा करेंगे और जो त्रुटि रह गई हो उसके लिये हमें क्षमा करेंगे।

क्या प्रभु प्रेमका नशा चढ़ता है ?

आप आजके किसी भी आर्यसमाजी महाशयसे पूछिये तो सभी आर्यसमाजी प्रायः अपने स्वामी दयानन्दको छोड़कर और किसीको भी इतना बड़ा ऋषि महर्षि नहीं मानते जितना दयानंदको मानते हैं। उनकी दृष्टिमें भक्तराज प्रह्लाद, भक्तराज ध्रुवकी भी इतनी महत्ता नहीं और पुराणोंमें आये श्रीकृष्ण-प्रेम श्रीराम-प्रेमके मदोंमें चूर रहने वाले, मस्त रहने वाले भक्तोंका भी उनकी दृष्टिमें कोई मूल्य नहीं और संत स्वामी रामतीर्थ, रामकृष्ण परमहंस, संत कबीरदास, तुलसी, सूर, चैतन्य महाप्रभु, श्रीकृष्णप्रेमकी दीवानी मीराबाईको तो वह मानते ही नहीं। वह कहते हैं—कि "नानक, तुलसी, सूर, कबीर आदि तो पाखंडी थे ढोंगी थे और नशा वशा क्या होता है ?" यह महात्मा उसीको मानते हैं कि जो दिन रात पूज्य ब्राह्मणोंको पोप बतायें पुराणोंको गप्प बतायें, मंदिरोंकी तीर्थोंकी निन्दा करे और सभाओंमें गाल बजायें, लैक्चरबाजी करें। इसके विपरीत आप जरा आनन्द स्वामी सरस्वतीजी महाराज इस सम्बन्ध में क्या कहते हैं यह भी सुनिये। आपने भरी सभामें अपने भाषणमें बताया—

"एक समय ऐसा आता है कि जब संत, भक्त, प्रभु

आपकी दी हुई कुण्डली अपूर्ण है, ग्रह स्पष्ट तथा कुंडलीके भीतर सब ग्रहोंकी स्थापना पूर्ण नहीं है, दो जगह शनि दिया हुआ है, और लग्नांशमें स्यात् दिया हुआ है। अब आप विचार करेंगे कि ऐसी अपूर्ण कुंडली पर क्या विचार सही हो सकेगा ? फिर भी मेरा विचार ये है कि इसमें भी जन्मलग्नकी अपेक्षा चन्द्र लग्न बलवान् है और चन्द्रमा चाहे पंचमेश होकर लग्नमें है जिसके कारण आपने चन्द्रमाको कारक माना है किन्तु ऐसा ज्ञात होता है कि चन्द्रमा नवांशमें नीच या शत्रु राशिका न हो, यदि ऐसा है तो इसमें ये योग घटता है कि :—

केन्द्रे वा यदि कोणगे हिमकरे नीचारिवर्गस्थिते।
चन्द्रादन्त्यसपत्नरंध्रगृहगे जीवे दरिद्रो भवेत्॥

इसके अतिरिक्त इस कुंडलीमें मंगल भी धन हानि कारक ग्रह है। पूरा विचार पूर्ण कुंडली होने पर ही हो सकता है। और यह भी संभव है कि जन्मेष्ट काल आदिमें कोई त्रुटि हो।

फिर भी मेरा यही निवेदन है कि उपरोक्त विचारोंमें मेरा कोई आग्रह नहीं है और न किञ्चिन्मात्र अभिमान है क्योंकि यह ज्योतिषशास्त्र अति अगाध तथा दुस्तर है। मेरी भी सब दैवज्ञ तथा विद्वज्जनोंसे यही प्रार्थना है कि जो भी सत्यता हो उसे अपनायेंगे।

का प्यारा प्रभु प्रेमकी मस्तीमें पागल जैसा बन जाता है और उसे प्रभु प्रेमकी मस्ती प्रभु प्रेमका नशा चढ़ जाता है। प्रभु प्रेमकी खुमारी जब चढ़ जाती है तो और सारे नशे तुच्छ हो जाते हैं। प्रभु दर्शनका सोमरस पीकर वह मस्ती चढ़ती है कि जो फिर उतरती ही नहीं। श्री गुरु नानकदेवजी महाराजने कहा है—

'नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात।'

श्री चैतन्य महाप्रभु, स्वामी श्रीरामतीर्थ, श्री मीराबाई आदि बड़े अच्छे संत हुये हैं, इन्हें हर समय प्रभु प्रेमकी खुमारी चढ़ी रहती थी। वेदोंमें भी ऐसी खुमारीका वर्णन आता है। संत श्री कबीरजी महाराजने भी ऐसा ही कहा है—

कबीरा प्याला प्रेमका अन्तर लिया लगाय।
रोम रोममें रंगि रहा और अमल क्या खाय॥
सोऊँ तो सपने मिलै, जागूँ तो मन माहिं।
लोचन राता सुधि हरि, बिछुरत कबहूँ नाहिं॥

इस अद्भुत नशेके सामने और बाकीके सब नशे तुच्छ हैं, व्यर्थ हैं। पाठकों! देखा आपने जिन संत कबीरजी महाराज और गुरुनानकदेवजी महाराजको आजके आर्यसमाजी मूर्ख पाखंडी बताते हैं और जिनको सत्यार्थप्रकाश में दयानन्दने मूर्ख लिखा है उन्हें ही आनन्द स्वामीजी कितनी श्रद्धाकी दृष्टिसे देखते हैं और मीराबाई और स्वामी रामतीर्थ चैतन्य महाप्रभुको उच्चकोटिका महापुरुष मानते हैं और प्रभु प्रेमके नशे को, मस्तीको वेदोंसे सिद्ध करते हैं, इससे बढ़कर सनातनधर्मके महापुरुषोंकी, भक्तोंकी, संतों की ओर क्या महत्ता होगी? क्या अब भी आर्यसमाजी मीराबाई, तुलसी, कबीर, नानक आदि संतोंको पाखंडी बतायेंगे?

श्रीरामनाम जपने वाले भक्तका अद्भुत चमत्कार

आज आर्यसमाजी जिस किसीको भी श्रीरामनाम, श्रीकृष्ण नाम जपते, कीर्तन करते देखते हैं तो बड़ी नाक भौं चढ़ाते हैं और उन्हें पाखंडी आदि न जाने क्या क्या बताते हैं? वह तो कहते हैं रामराम कहनेसे क्या होता है जिस प्रकार मिश्री मिश्री कहनेसे मुंह मीठा नहीं होता इसी प्रकार रामराम कहनेसे कोई लाभ नहीं। यदि जपना है तो बस खाली ॐ ॐ जपो राम राम नहीं। राम राम जपनेसे कोई लाभ नहीं। राम राम जपनेसे महर्षिबाल्मीकी तुलसीको साक्षात् भगवान्का दर्शन हुआ वह इसे बिल्कुल असत्य मानते हैं और श्रीराम राम जपने वाला आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करता है इसे गप्प बताते हैं। पर हमारे आनंद स्वामीजी महाराजने भरी सभामें श्रीराम-भक्त छिनकूका अद्भुत परम पवित्र चरित्र सुनाया और उसे अपनी पुस्तक प्रभुदर्शनमें भी दिया है जो हम यहां पर दे रहे हैं, आशा है पाठक एक आर्य सन्यासीके मुखसे सुनी और अपनी पुस्तकमें लिखी इस अद्भुत सत्य घटनासे शिक्षा ले प्रभु श्रीरामकी भक्तिमें मन लगायेंगे और श्रीराम नामके चमत्कारको नमस्कार कर श्रीराम नाम द्वारा अपना बेड़ा पार लगायेंगे। आनंद स्वामी सरस्वतीजीने भक्त छिनकूका अद्भुत दिव्य चरित्र इस प्रकार सुनाया—

"रियासत बहावलपुरमें एक श्री रामभक्त छिनकू रहा करता था। वह जातिका हिन्दू था। वह बहावलपुरमें ही एक जगह अपनी एक छोटी सी दुकान किया करता था। छिनकू भक्त बड़े ही मीठे स्वभाव वाला, बड़ा ही सत्यवादी और बड़ा ही संतोषी भक्त था। बहावलपुरके मुसलमान नवाब तकको छिनकू भक्तके ऊपर ऐसा अटूट विश्वास था कि छिनकू भक्त बड़ा ही सच्चा भक्त है, यह किसीके साथ भी न तो कभी छलकपट कर सकता है और न यह किसी भी चीजमें कभी कोई किसी प्रकारकी मिलावट ही कर सकता है, इसलिये सर्वथा शुद्ध और बिना किसी मिलावटके यदि कहींसे घी मिल सकता है या और कोई वस्तु तो छिनकू भक्तके यहांसे ही मिल सकती है। भक्त छिनकूका काम था कि वह अपना सारा ही समय अपने इष्टदेव भगवान् श्रीरामकी उपासनामें ही लगाता था। संध्याको नित्यप्रति छिनकू बाजारमें आता और दो घंटे अपनी दुकानको खोल कर बैठ जाता और बस वह दो तीन घंटेमें ही अपनी रोटी योग्य कमा लेता। छिनकू भक्त बड़ा ही संतोषी था। आज की भांति वह प्रातःकालसे लेकर रात्रिके १२ बजे तक दुकान का कीड़ा नहीं बना रहता था। एक दिनकी बात है कि एक मुसलमान छिनकू भक्तके पासमें आया, उस समय प्रातःकालका समय था, उसने आकर छिनकू भक्तसे कहा कि— 'छिनकू! चलो अपनी दुकान खोलो हमें तुम्हारी दुकानसे कुछ सामान लेना है।' और कोई होता तो उसकी यह बात

सुनकर बड़ा ही प्रसन्न होता और तुरन्त ही साथ चल देता, अपनी दुकान खोल देता और मन ही मन प्रसन्न होकर कहता कि आजका सा शुभ दिन रोज रोज कहाँ आता है, कितना अच्छा दिन है कि जो आज घर बैठे प्रातःकाल आमदनी होगी ? पर भक्त राज छिनकू ऐसा लोभी और लालची कहां था ? उसने उस मुसलमानसे कहा कि यह समय दुकान खोलनेका नहीं है, यह प्रातःकाल का समय श्रीराम भजन करनेका है। उस मुसलमानने छिनकू के ऐसा कहने पर भगवान् श्रीरामको गाली देनी प्रारम्भ कर दी। भला श्रीराम भक्त छिनकू अपने इष्टदेव भगवान् श्रीरामजीको गाली कैसे सहन कर सकता था ? भक्त छिनकूने मुसलमानसे कहा कि ऐसे ही यदि तुम्हारे खुदाको और पीरको कोई इसी प्रकार कह दे तो ? इस पर मुसलमानको और क्रोध आ गया और उसने और भी गाली बकनी प्रारम्भ कर दीं। भक्त छिनकूने भी उसे वैसा ही उत्तर दिया। बात बढ़ गई और उस मुसलमानने हाकिम के पास जाकर भक्त छिनकूके विरुद्ध रिपोर्ट कर दी। नवाब तक भी यह समाचार पहुंचा। नवाब छिनकू भक्तमें पहिलेसे ही श्रद्धा रखता था इसलिये उस नवाबने छिनकू को यह कहला भेजा कि तू इन्कार करदे और तू यह कह दे कि मैंने पीरको और खुदाको गाली नहीं दी, ऐसा कहने पर तुम्हें छोड़ दिया जायगा। परन्तु जब कचहरीमें छिनकू पेश हुआ और छिनकूका हाकिमके सामने बयान लिया गया तो भक्त छिनकूने उस समय झूँठ बोलना उचित नहीं समझा और उसने स्पष्ट ही कह दिया कि इसने मेरे भगवान् इष्टदेव श्रीरामको गालियां दीं और मैंने इसके बदलेमें पीरको गाली दी। फैसला सुना दिया गया कि भक्त छिनकूको संगसार (पत्थर मार मार कर मार देना) मार दिया जाय। तुरन्त ही भक्त छिनकूको पकड़ करके ले जाया गया और एक मैदानमें ले जाकरके खड़ा कर दिया गया। जो भी उधरसे कोई मुसलमान गुजरता वही भक्त छिनकूके ऊपर पत्थर फेंक फेंक कर मारता और जोरसे पत्थर लगते ही भक्त छिनकू कहता 'श्रीराम'। फिर पत्थर आकर पड़ता छिनकू फिर पुकारता 'श्रीराम'। फिर पत्थर आकर पड़ता छिनकू फिर पुकारता 'श्रीराम'। इस प्रकार पत्थर पर पत्थर उस भक्त छिनकूके ऊपर आकर पड़ रहे हैं और पत्थरकी मारसे सिर, छाती, हाथ, पाँव, आदि सारा ही शरीर छिनकूका घायल हो गया है और सारे ही शरीरसे लोहू बह रहा है पर फिर भी हर पत्थर आकर पड़ने पर छिनकू भक्त कह रहा है "राम"। छिनकू भक्तकी राम राम की रट जारी है। संध्याके समय उसका एक परम मित्र मुसलमान सज्जन आया और वह भक्त छिनकूसे कहने लगा कि भक्त छिनकू मुझसे तुम्हारी यह दशा नहीं देखी जाती, मुझे बड़ा दुःख हो रहा है, तुम मुझे आज्ञा दो कि मैं तुम्हें तलवारसे एक वारमें समाप्त कर दूं, जिससे तुम्हें इस प्रकारसे कष्ट न उठाना पड़े और इस प्रकारसे तड़प तड़प करके प्राण देना न पड़े। इस पर भक्त छिनकूने उसे उत्तर दिया कि नहीं प्यारे मित्र ! राजाज्ञाके अनुसार ही मुझे मरना चाहिये। मुझे तो कोई पीड़ा हो ही नहीं रही है, पीड़ा तो केवल मात्र इस शरीरको ही हो रही है, जिस का आज भी और जिसका कल भी नाश होना है। तुम कोई चिन्ता न करो। परन्तु उस मुसलमान मित्रके लिये यह अत्याचार अधिक देर तक सहन कठिन हो गया और वह अपने घर गया तथा घरसे वह अपने साथ अपनी एक तलवार ले आया और उसने भक्त छिनकूका अपने हाथसे सिर काट दिया। जब भक्त छिनकूका धड़से कट कर सिर पृथ्वी पर गिरा तो उस समय सबने ही देखा कि कितने ही समय तक भक्त छिनकूके शरीरके अन्दरसे श्रीराम राम की आवाज़ (ध्वनि) बराबर निकलती रही। सभी यह देखकर आश्चर्यचकित हो गये। ऐसी अगाध श्रीराम भक्ति कहाँ देखनेमें आती है ? धन्य है भक्त छिनकूको कि जिसने श्रीराम भक्तिके कारण शरीरकी भी चिन्ता नहीं की। मुसलमानी कौम कितनी क्रूर और कितनी घोर निर्दयी होती है, हिंसक होती है कि जो ऐसे ऐसे भक्तों पर भी अत्याचार करनेसे नहीं चूकती, यह इसका जीता जागता ज्वलंत उदाहरण है।

पाठकों ! देखा आपने एक आर्य सन्यासीके द्वारा सुनाया गया श्रीराम भक्तके जीवनका अद्भुत चमत्कार। श्रीराम जपसे मनुष्य कितना परमभक्त धीरवीर धर्मात्मा पुण्यआत्मा, सत्यवादी, निर्लोभी आस्तिक और धर्म पर हंसते हंसते बलिदान हो जाने वाला और अपनेको शरीरसे भिन्न मानने वाला आत्माकी अमरतामें विश्वास करने वाला हिन्दू

जातिका लाल बन जाता है यह इससे सिद्ध हो जाता है।

क्या श्रीमद्भगवद् गीताके ३४५ श्लोक क्षेपक हैं ?

आर्यसमाजके स्वामी आत्मानन्दजीने श्रीमद्भगवद् गीताके ३४५ श्लोकोंको क्षेपक बताकर उन्हें निकाल एक नई मनमानी गीता छपवाई है। बड़ा अनर्थ किया है। इस सम्बन्धमें श्री आनन्द स्वामीजीके क्या विचार हैं? आप श्रीगीता जीको कैसा मानते हैं?

आनन्द स्वामीजी—बेटा गीतासे बढ़कर और कौन ग्रन्थ होगा जिसे आज सारा संसार ही मान रहा है और जिसके सामने सारे संसारके विद्वान् नतमस्तक हो रहे हैं। गीता शास्त्रोंका और उपनिषदोंका सार है और कौन सी ऐसी बात है कि जो और ग्रन्थोंमें तो हो और इस श्रीमद्भगवद्-गीतामें न हो? गीतासे बढ़कर और कौन सा ग्रन्थ होगा। मैं एक बार जम्मू काश्मीर गया हुआ था तो वहां पर उस समय कुछ सनातनधर्मी मुझे सनातनधर्म सभाके स्लेट फार्मसे बुलवानेके लिए ले गए। मैंने वहां पर जाकर सनातन-धर्म-सभामें भाषण देना प्रारम्भ किया तो मैंने वहां पर भगवान् श्रीकृष्णसे भी पहिले अर्जुनको प्रणाम किया और बाद भगवान् श्रीकृष्णको प्रणाम किया। इस पर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ कि भगवान् श्रीकृष्णसे भी पहले अर्जुनको प्रणाम करना यह कैसा? मैंने कहा कि मैं भगवान् श्री कृष्णसे भी पहले अर्जुनको इसीलिए प्रणाम करता हूँ कि इस अर्जुनकी कृपासे ही हमें श्रीमद्भगवद् गीता जैसी अद्भुत पुस्तक प्राप्त हुई, यदि उस समय अर्जुन शस्त्र छोड़कर न बैठ जाता तो हमें फिर यह गीता जैसा ग्रन्थ भला कैसे प्राप्त होता? यह अर्जुनकी ही कृपा है कि जो हमें आज गीता प्राप्त हुई है।

प्रश्नः—महाराज जी! आप तो गीताकी प्रशंसा करते हैं, पर आपके आर्य समाजके सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० मुक्तिराम उपाध्याय (स्वामी आत्मानंद जी) तो कहते हैं कि गीतामें ३४५ श्लोक या इससे अधिक क्षेपक हैं। यह श्लोक पीछे से मिलाये हुए हैं, भगवान् श्रीकृष्णके कहे हुए नहीं हैं, इन्हें निकाल देना चाहिये। और मुक्तिराम उपाध्यायने ३४५ श्लोक निकालकर जो नई गीता छपवाई है इस गीता को आप ठीक नहीं मानते, इसमें मिलावट मानते हैं? इस प्रकार शास्त्रों में मनमानी उलट फेर करना क्या उचित है?

आनन्द स्वामीजी—यह ठीक नहीं है, यदि गीतामें से ३४५ श्लोक निकाल दिए गए और उन्हें क्षेपक मान लिए गए तो फिर रह ही क्या जायगी? और फिर गीताका महत्व ही क्या रह जायगा?

प्रश्न—महाराजजी! सुना जाता है कि जो आर्यसमाजी या मुक्तिराम उपाध्याय आदि गीतामें से ३४५ श्लोक क्षेपक मानकर निकाल रहे हैं उनका यह कहना है कि यदि इस समयकी इस सारी गीताको ज्यूं की त्यूं ही मान ली गई और सभी सत्य स्वीकार कर ली गई तो इसमें जो भगवान् श्रीकृष्णने—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानधर्मस्य तदाऽऽत्मानं सृजाम्यहम्।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे॥

आदि आदि कहा है तो इससे भगवान् श्रीकृष्ण परमात्मा सिद्ध होते हैं और अवतारवाद सिद्ध हो जाता है। और यह आर्यसमाजके विरुद्ध पड़ता है, इसलिए उनके जो बात समझमें नहीं आती पर जो बात उनके विरुद्ध पड़ती है उसे ही यह लोग क्षेपक बताकर निकालनेकी सोचते हैं। इससे तो यह सिद्ध होता है कि वह स्वयं शास्त्रोंके पीछे चलना नहीं चाहते वरन् स्वयं शास्त्रोंको ही अपने पीछे चलाना चाहते हैं। जो बात इनके दिमागमें आई वह ठीक और जो बात दिमागमें नहीं आई उसे गप्प बताकर निकाल दी, क्या यह उचित है?

आनन्द स्वामीजी—मैं इनसे एक बात कहता हूं कि यदि आप भगवान् श्रीकृष्णको अवतार या परमात्मा नहीं मानते तो कोई बात नहीं, मत मानों, पर फिर भी गीतामेंसे यह श्लोक या इसी प्रकार के और कोई श्लोक निकालनेकी आवश्यकता नहीं है। कारण कि जहां श्रीकृष्णने अपनेको भगवान् कहा है तो भगवान् श्रीकृष्णको यदि आप योगेश्वर भी मानो तो भी जिस प्रकार एक वकीलको एक बैरिस्टर को मुकदमेके समयमें अदालतमें खड़े होकर मवकिलकी तरफसे यह हक होता है कि जो बात मवकिल कहता है वही वकील मवकिलकी तरह कह सकता है कि मैं यह कहता हूं

और मैंने ऐसा किया। इसी प्रकार योगेश्वर श्रीकृष्णको भी परमात्माकी ओरसे यह कहनेका हक है कि जो परमात्मा कहता है सो मैं कहता हूँ। गीतामें कांट छांट करना ठीक नहीं है।

क्या भगवान् अपने भक्तके काम नहीं बनाते ?

भगवान् श्रीकृष्णने अपने हाथों भक्त नामदेवकी छान-छवाई, नरसीका भात भरा, कबीरके गड़वाले बने, नन्दाबाई का रूप बनाकर राजाकी सेवाकी आदि-आदि सहस्रों घटनायें पुराणोंमें भक्तमालमें भरी पड़ी है जिन सबको आर्यसमाजी एक दम गप्प, सफेद झूठ बता देते हैं और गीतामें आई इस बात को—

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जना पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥

भगवान् कहते हैं कि मैं अपने भक्तोंके कामको स्वयं बनाता हूँ, कदापि माननेको तैयार नहीं होते और असम्भव बताते हैं। इन लोगोंको यह कहां पता कि यह धर्मप्राण भारत भूमि है, इसमें भगवान् भक्तके लिए क्या क्या नहीं करते ? आनन्दस्वामीजीने एक बिलकुल सत्य घटना सुनाई जो इस प्रकार है इसे ध्यान से सुनिये—

जो श्री भगवदाश्रयमें रहते हैं, भगवान् उनके सब काम अवश्य ही बनाते हैं, इसमें हमें तनिक भी संदेह करनेकी आवश्यकता नहीं है। आर्य समाजके सुप्रसिद्ध आर्य सन्यासी श्रीस्वामी दर्शनानन्दजी महाराज बड़े ही वीतराग महात्मा थे। आप गुरुकुलमें थे, गुरुकुलका उस समय सब भार आपके ही ऊपर था। एक दिनकी बात है कि गुरुकुलमें पढ़ने वाले विद्यार्थियोंकी और पढ़ाने वाले अध्यापकोंकी भोजनकी सब सामग्री समाप्त हो गई। अध्यापकोंने तथा वहांके रोटी बनाने वाले रसोइयेने आपसे आ करके कहा कि—महाराज जी! आज भोजन कैसे बनेगा? आज तो दाल आटा आदि कुछ भी भोजनकी सामग्री नहीं है।' आपने कहा कि कोई बात नहीं; चिन्ता क्यों करते हो, क्या अभी भोजनका समय हो गया? समय पर सब ठीक हो जायगा। अध्यापक और रसोइया महाराजकी बात सुन कर चले गये। स्वामीजी बड़े दृढ़ ईश्वर विश्वासी थे। भोजनका समय हुआ तो फिर रसोइया स्वामीजीके पास आया और कहा कि महाराज विद्यार्थी भोजनकी प्रतीक्षामें हैं। आपने कहा कि कोई बात नहीं घंटी बजा दो आ जाने दो। रसोइयेने घंटी बजा दी और घंटीकी आवाज सुनते ही सब विद्यार्थी अपने हाथोंमें अपनी-अपनी थाली लेकर आ गये। उसने फिर आकर कहा कि महाराज विद्यार्थी थाली ले लेकर आ गये हैं। आपने कहा कि आ गये हैं तो उन्हें बैठा दो। रसोइयेने कहा कि महाराज मैं बैठा तो दूं पर वह बेचारे खायेंगे क्या, कि जब यहां पर भोजन ही नहीं है। इतनेमें सब क्या देखते हैं कि दो बैंगियोंमें भरा भोजन चला आ रहा है, सब देख कर चकित हो गये और उसमें से निकाल निकाल कर भोजन परोसा जाने लगा, रसोइयेने कहा कि महाराज! आपने यह हमें पहिलेसे ही क्यों नहीं बतलाया था कि आज बैंगियोंमें बाहरसे भोजन आयगा? आपने कहा कि मैं बताता तो तब जब मुझे ही यह मालूम होता कि इस प्रकार अकस्मात् बना बनाया भोजन चला आयगा। यह प्रभुकी लीला देख कर सभी आश्चर्य चकित हो गये। जो श्रीभगवदाश्रय रहते हैं भगवान् उनके सब काम इस प्रकार अपने आप बनाते हैं।

देखा पाठकों! यह है आनन्दस्वामीजीकी सुनाई सत्य घटना। क्या अब भी पुराणोंको पोपोंकी गप्प बताओगे? उन्हें गप्प मानोगे? जब आनन्दस्वामीजीके कथनानुसार एक आर्य सन्यासीके लिए भगवान् भोजनकी बैंगियां भर कर भेज सकते हैं तो अपने प्राणप्रिय सनातनधर्मी भक्तोंके लिए भगवान् क्या नहीं कर सकते? एक आर्य सन्यासीकी यदि यह बात सत्य हो सकती है तो फिर सनातनधर्मी भक्तोंकी जो अपना सर्वस्व ही प्रभुके लिए समर्पित कर देते हैं और दिन रात प्रभु प्रेमकी मस्तीमें झूमते रहते हैं, बातें सत्य क्यों नहीं हो सकती? जो प्रभु औरोंके काम बना सकता है वह अपने प्राण-प्रिय सनातनधर्मी भक्तोंके अपने हाथोंसे कार्य न करे यह कैसे हो सकता है? सनातनधर्मियोंका तो भगवान् घरका है। जो अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड नायक परात्परब्रह्म बड़े-बड़े योगीन्द्र मुनीन्द्रके ध्यानमें भी नहीं आता वही ब्रह्म अपने सनातनधर्मी भक्तोंके बीच किलकारी मार-मारकर हंसा करता है. खेला कूदा करता है, यही तो सनातनधर्मकी अद्भुत महत्ता है। आशा है पाठक अपने प्राणप्रिय सनातनधर्मको इसी प्रकार दृढ़ताके साथ पकड़े रहेंगे और इसकी शरणमें रह कर ही अपना कल्याण करेंगे, तथा पुराणोंकी बातें अक्षरशः सत्य है इसे शिर नवाकर मानेंगे।



ज्यौतिषका प्रारम्भिक शिक्षण



[लेखक—श्री पं० रघुनाथचन्द्रजी शास्त्री वाशिष्ठ B. A.]

भगोलका भूगोलके साथ घनिष्ठ एवं अटूट सम्बन्ध है। आकाश-मण्डल वर्ती सूर्यादि ग्रह भूमण्डल स्थित चराचर जीवों पर अपना विशेष प्रभुत्व रखते हैं। इतना ही नहीं उन ज्योतियोंकी विभिन्न किरणें भूमि स्थित जड़ चेतन पदार्थोंकी अपने विभिन्न अनुपातोंके द्वारा विचित्र रूपसे रचना करती हैं। इस प्रकारका भगोलका भूगोल पर पूर्ण नियन्त्रण रहता है। यह सब मेरी कपोल-कल्पना नहीं, निर्मूल विचार नहीं, उन्मत्त प्रलाप नहीं, अपितु प्राचीन दिव्य दृष्टि सम्पन्न महर्षियोंका अवितथ सिद्धान्त है। ईश्वरीय ज्ञानस्वरूपिणी श्रुति भगवती भी इसी सिद्धान्तका प्रतिपादन करती है। इसके अतिरिक्त आजकलका भौतिक विज्ञान ज्यों-ज्यों उन्नति करता जा रहा है त्यों-त्यों इसी सिद्धान्तकी ओर अग्रसर होता जा रहा है। अपि च, मेरे तथा अन्य ज्योतिष-शास्त्र पारंगत अनुभवी विद्वानोंका अनुभव भी इसमें अणुमात्र भी सन्देह नहीं कर सकता, आज हम इसी विषयमें उपर्युक्त विभिन्न दृष्टियोंसे विवेचना करनेका प्रयास करेंगे।

यजुर्वेदके पुरुष-सूक्तमें भगवान्‌के विराट् स्वरूपका विशद वर्णन उपलब्ध होता है। यह विश्व ही भगवान् का विराट रूप है। उस विराट्का मन ही उस विश्वका समष्टि मन है। और उस मनकी उत्पत्ति चन्द्रसे हुई है। व्यष्टि अर्थात् एक-एक प्राणीका मन मिलकर समष्टिका मन हुआ और इसकी सृष्टि चन्द्रमासे हुई। इस प्रकार प्रत्येक प्राणीके मन पर नियंत्रण करने वाला चन्द्र है। मानसिक शक्तिके केन्द्र चन्द्रसे जिस प्राणीको जैसी शक्ति प्राप्त होती है उसकी मानसिक स्थितिका वैसे ही होना युक्ति-युक्त जान पड़ता है और यह अनुभव सिद्ध भी है।

चन्द्रकी चांदनीमें किस प्राणीका मन नहीं खिल उठता। हाँ, विरहियोंके मनको अत्यधिक क्लेशदायिनी होती होगी। तो भी उपर्युक्त सिद्धान्तमें कोई बाधा नहीं पड़ती। चन्द्रमाका अनुकूल या प्रतिकूल प्रभाव प्रत्येक प्राणीके मन पर प्रत्यक्ष पड़ता है। इसीलिए ज्योतिष सिद्धान्त यह घोषणा करता है कि किसी भी प्राणीके जन्मकालमें चन्द्रमा की स्थितिको देखकर उसकी मानसिक स्थितिका बोध किया जा सकता है।

श्रुति भगवती कहती है कि इस चराचर जगतकी आत्मा सूर्य है। अर्थात् समष्टि विश्वरूप पुरुषकी आत्मा व्यष्टिकी आत्मा है सूर्यका विशेष प्रभाव हमारी आत्मा पर पड़ता है। रात्रिके समय जबकि सूर्य भगवान् हमसे ओझल हो जाते हैं, हमारी आत्मामें कुछ न कुछ रूपमें—(प्रायः प्रत्यक्ष रूपेण अन्यथा सूक्ष्म रूपेण) आत्मा भय एवं कुछ हीनताका अनुभव होता है। हृदय कमल कुछ मुंद सा जाता है। प्रात: होते ही सूर्यनारायण के दर्शनसे सबका चेहरा खिल जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सामान्य रूपसे हमारी आत्मासे सूर्य नारायणका विशेष सम्बन्ध है। इसीलिए उसकी स्थिति न्याय संगत है। इसी प्रकार विराट् पुरुषकी आँखें सूर्य और चन्द्र हैं। वे ही हम व्यक्तियोंके भी नेत्र हैं। स्थूल रूपसे हम यह भी कह सकते हैं कि सूर्य और चन्द्रकी ज्योतिमें ही हमारे नेत्र अपना कार्य सम्पादन कर सकते हैं। इसलिए सूर्य और चन्द्र हमारे नेता हैं। ज्योतिष सिद्धान्तमें सूर्य चन्द्र दोनों नैनोंके प्रतिनिधि हैं। इसलिए उन्हींके द्वारा हम प्रत्येक व्यक्ति के नेत्रोंकी अवस्थाको जान सकते हैं।

यह विषय अत्यन्त विस्तृत एवं गम्भीर है। प्रत्येक ग्रहका शरीरके साथ सम्बन्ध प्रदर्शन करनेके लिए एक स्वतन्त्र विशालकाय निबन्ध व ग्रन्थकी आवश्यकता है। अत: इसका विशद बिवेचन कहीं अन्यत्र किया जायगा।

ज्यौतिष शास्त्र निःसन्देह मानव जीवनमें नेत्रतुल्य है। अशेष जगत्‌के नेत्र सूर्य चन्द्र ही इस विद्याके आधार स्तम्भ हैं। इसी विद्याके द्वारा मनुष्य तीनों कालोंकी घटनाओं को हस्तामलकवत् देख लेता है। और यथोचित व्यवहार कर जीवनमें साफल्य लाभ करता है। वेदाङ्गोंमें तभी ज्योतिर्विद्या को नेत्र माना है। "ज्योतिषामयनंचक्षुः" इसका ज्ञान थोड़ा बहुत तो सभीको होना ही चाहिए। जिस प्रकार

घरमें माताएँ आयुर्वेद शास्त्र कुशल न होते हुए भी स्वास्थ्य के साधारण नियमों तथा कुछ घरेलू औषधियोंसे परिचित होती हैं और बच्चोंका पालन-पोषण भली प्रकार कर लेती हैं, घरके स्वास्थ्यकी यथावत् रक्षा कर लेती हैं। उसी प्रकार ज्योतिषका प्रारम्भिक बोध—जो कि दैनिक व्यवहारसें उपयुक्त है तथा च जितनेसे अपनी छोटी मोटी दैनिक समस्याओंका समाधान हो सके—सभीको प्राप्त करना चाहिए। इससे एक विशेष लाभ यह भी होगा कि हम निरक्षर भट्टाचार्य ज्योतषियोंके मिथ्याचार एवं दम्भ से बचेंगे। विद्वानों की पहिचान कर उनका समुचित आदर कर अपने जीवनमें स्पष्ट मार्ग प्रदर्शन कर सकगे। इसी प्रयोजनसे "ज्यौतिषकी प्रारम्भिक शिक्षा" आरम्भ कर रहा हूं। आशा है कि जन-साधारण इस ओर अपनी अभिरुचिका प्रदर्शन कर तथा अनुभवी विद्वान् मेरी त्रुटियाँ मुझे बताकर और नये सुझाव देकर मुझे प्रोत्साहित करेंगे।

प्रथम पाठ

(क) राशि चक्र

भूमिके चारों ओरका आकाश बारह भागोंमें विभक्त है, उन बारह भागोंके नाम इस प्रकार हैं:—

१. मेष	७. तुला
२. वृष	८. वृश्चिक
३. मिथुन	९. धनु:
४. कर्क	१०. मकर
५. सिंह	११. कुम्भ
६. कन्या	१२. मीन

इन्हीं आकाश भागोंमें सूर्य घूमता हुआ प्रत्येक भागमें एक-एक मास रहता है और इस प्रकार १२ भागोंका पूरा चक्कर लगाकर एक वर्ष व्यतीत करता है।

बारह मासोंके नाम क्रमसे ये हैं—बैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन, चैत्र।

(ख) नक्षत्र

इन्हीं १२ भागोंके फिर २७ उपभाग हो जाते हैं। प्रत्येक भाग (राशि) में सवा दो उपभाग होते हैं। इन उपभागोंको नक्षत्र कहते हैं। वे इस प्रकार हैं—

१. अश्विनी	१०. मघा	१९. मूल
२. भरणी	११. पूर्वाफल्गुनी	२०. पूर्वाषाढ़ा
३. कृत्तिका	१२. उत्तराफल्गुनी	२१. उत्तराषाढ़ा
४. रोहिणी	१३. हस्त	२२. श्रवण
५. मृगशिर	१४. चित्रा	२३. धनिष्ठा
६. आर्द्रा	१५. स्वाती	२४. शतभिषा
७. पुनर्वसु	१६. विशाखा	२५. पूर्वाभाद्रपद
८. पुष्य	१७. अनुराधा	२६. उत्तराभाद्रपद
९. आश्लेषा	१८. ज्येष्ठा	२७. रेवती

ज्ञातव्य—२१ और २२ के बीच एक और उपभाग होता है, जिसका नाम 'अभिजित्' है। इसका प्रयोग प्राय: नहीं होता। विशिष्ट स्थलमें ही आवश्यकता पड़ती है। अत: इसका विवरण यथावसर होगा।

चन्द्र १२ राशियों और इन नक्षत्रोंका एक चक्कर एक मासमें लगाता है और वर्षमें बारह चक्कर इससे भी कुछ अधिक लगा लेता है।

प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण होते हैं। इस प्रकार २७ नक्षत्रोंके १०८ चरण हुए। वे ही प्रत्येक राशिमें ९ चरण होते हैं।

उनके लिए नियत अक्षर ये हैं—

(१)	अश्विनी —	चू	चे	चो	ला
(२)	भरणी —	ली	लु	ले	लो
(३)	कृत्तिका —	आ	ई	उ	ए
(४)	रोहिणी —	ओ	वा	वी	वू
(५)	मृगशिर —	वे	वो	का	की
(६)	आर्द्रा —	कू	घ	ङ	छ
(७)	पुनर्वसु —	के	को	हा	ही
(८)	पुष्य —	हू	हे	हो	डा
(९)	अश्लेषा —	डी	डू	डे	डो
(१०)	मघा —	मा	मी	मू	मे
(११)	पूर्वफाल्गुनी—	मो	टा	टी	टू
(१२)	उत्तरफाल्गुनी—	टे	टो	पा	पी
(१३)	हस्त —	पू	ष	ण	ठ
(१४)	चित्रा —	पे	पो	रा	री
(१५)	स्वाती —	रू	रे	रो	ता
(१६)	विशाखा —	ती	तू	ते	तो
(१७)	अनुराधा —	ना	नी	नू	ने

(१८) ज्येष्ठा — नो या यी यू
(१९) मूल — ये यो भा भी
(२०) पूर्वाषाढ़ा — भू ध फ ढ़
(२१) उत्तराषाढ़ा— भे भो जा जी
(२२) श्रवण — खी खू खे खो
(२३) धनिष्ठा — गा गी गू गे
(२४) शतभिषा — गो सा सी सू
(२५) पूर्वभाद्र. — से सो दा दी
(२६) उत्तरभाद्र— दू थ झ ञ
(२७) रेवती — दे दो चा ची

चन्द्र एक नक्षत्र पर प्रायः एक दिन रहता है और इस प्रकार प्रायः सवा दो दिन एक राशि पर रहता है।

चन्द्रमा किसीके जन्म समय जिस नक्षत्रके जिस चरण पर रहता है, उसका नाम उस नक्षत्रके उसी चरणके वर्णसे आरम्भ किया जाता है, यथा—

किसीके जन्म समय अश्विनी नक्षत्रके चतुर्थ चरणमें चन्द्रमा हो तो उसका नाम 'ल' वर्ण से प्रारम्भ किया जायगा।

(१) ललितमोहन।
(२) लालजीराम।
(३) लच्छराम इत्यादि।

एक सौ आठको बारह पर बांटने से लब्धि नौ आती है। इस प्रकार एक राशिमें ९ चरण अथवा सवा दो नक्षत्र आ जाते हैं। नक्षत्रों का राशियोंमें बंटवारा इस प्रकार होता है—

(१)	अश्विनी	१,	२,	३,	४,	
	भरणी	१,	२,	३,	४,	मेष
	कृत्तिका	१	—,	—,	—	
(२)	कृत्तिका	—,	२,	३,	४,	
	रोहिणी	१,	२,	३,	४,	वृष
	मृगशिर	१,	२,	—,	—	
(३)	मृगशिर	—,	—,	३,	४,	
	आर्द्रा	१,	२,	३,	४,	मिथुन
	पुनर्वसु	१,	२,	३,	—	
(४)	पुनर्वसु	—,	—,	—,	४,	
	पुष्य	१,	२,	३,	४,	कर्क
	आश्लेषा	१,	२,	३,	४,	
(५)	मघा	१,	२,	३,	४,	
	पूर्व फाल्गुनी	१,	२,	३,	४,	सिंह
	उत्तराफाल्गुनी	१,	—	—	—	
(६)	उत्तराफाल्गुनी	—,	२,	३,	४,	
	हस्त	१,	२,	३,	४,	कन्या
	चित्रा	१,	२,	—,	—	
(७)	चित्रा	—	—	३,	४,	
	स्वाति	१,	२,	३,	४,	तुला
	विशाखा	१,	२,	३,	—	
(८)	विशाखा	—,	—,	—,	४	
	अनुराधा	१,	२,	३,	४,	वृश्चिक
	ज्येष्ठा	१,	२,	३,	४,	
(९)	मूल	१,	२,	३,	४,	
	पूर्वाषाढ़	१,	२,	३,	४,	धनुः
	उत्तराषाढ़	१,	—	—	—	
(१०)	उत्तराषाढ़	—,	२,	३,	४,	
	श्रवण	१,	२,	३,	४,	मकर
	धनिष्ठा	१,	२,	—	—	
(११)	धनिष्ठा	—	—	३,	४,	
	शतभिषा	१,	२,	३,	४,	कुम्भ
	पूर्वभाद्र	१,	२,	३,	—	
(१२)	पूर्वभाद्र	—,	—,	—,	४,	
	उत्तर भाद्र	१,	२,	३,	४,	मीन
	रेवती	१,	२,	३,	४,	

विशेषः—इकीसवें नक्षत्रके बाद 'अभिजित' भी मकर राशिमें ही गिना जाता है। उसके अक्षर हैं—

जू, जे, जो, खा

(२) इन अक्षरोंमें जो मात्राएँ दी गई हैं, वे मात्राए तथा उनकी दीर्घ या ह्रस्व मात्राएँ भी ग्रहण की जाती हैं। केवल व्यंजन ही नहीं लिया जाता। जैसे—'च्' व्यंजन दो नक्षत्रों और दो राशियोंमें आता हैः—अश्विनीमें 'च्'में 'उ' 'ए' तथा 'ओ' की मात्राएं ही हैं, 'आ' और 'ई' की मात्राएं रेवती में हैं। चु, चे, चो, ला अश्विनी' दे, दो, चा, ची, रेवती

(क्रमशः)

प्रेषकः—शशिभूषण वासिष्ठ

तत्त्ववेत्ता ही सच्चा राजनीतिज्ञ है

पूज्यपाद श्री १०८ स्वामी करपात्रीजी महाराजका सदुपदेश

[प्रेषकः—भक्त श्रीरामशरणदासजी]

गीता प्राणियोंको अभ्युदय एवं निःश्रेयसका मार्ग बताती हुई कहती है—

"तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युद्धच च।"

अर्थात् प्रत्येक कार्यके लिये देश काल निर्धारित है, किन्तु श्रीभगवत् स्मरण और स्वकर्तव्य पालनके लिये कोई भी देश काल निर्धारित नहीं है। सर्व देश, सर्व काल और सर्व-परिस्थितिमें श्रीभगवत् स्मरण और स्वकर्तव्य पालन अनिवार्य है। किन्तु आज एक दल ईश्वर और धर्मको उन्नतिके मार्गमें रोड़ा अटकाने वाला मानता है और उसे भीरू मस्तिष्ककी कल्पना मात्र मानता है। दूसरा दल कहता है कि भले ही देशका टुकड़ा हो जाय, भारत माताका अंग भंग हो जाय, शिर कट जाय और वेद हत्यारा हिन्दू कोडबिल बन जाय, गो हत्या बराबर जारी रहे पर फिर भी हमें राजनीतिके पचड़ेमें पड़ना नहीं, केवल अपनी माला ही घुमानी है। वास्तवमें केवल उनकी माला मात्रमें निष्ठा होती तो भी कोई बात थी, किन्तु जब वे रोटी कपड़ेके पचड़ेमें पड़ते हैं, सन्तानोत्पादनमें, दस्तावेज लिखानेके पचड़ेमें खूब पड़ते हैं, पर राजनीतिके पचड़ेमें पड़ना नहीं चाहते। वास्तवमें उपर्युक्त यह दोनों नीतियाँ गलत हैं। यदि देश पर विदेशी आक्रमण हुआ तो माला भी खतरेमें पड़ जायगी। कंट्रोल, महामारीका आक्रमण हुआ तो उसमें सभी मरते हैं। जब एक कुत्ता भी अपने आस पासकी भूमिको अपनी पूँछसे साफ करके बैठता है तो फिर क्या भगवद्भक्त टोला पड़ोसकी भी सफाई न करे? यदि धार्मिक आध्यात्मिक भावना न भी हो तो भी अपने जीवनके लिये वातावरण ठीक करना चाहिये। गाँवके किसी कोनेमें लगी अग्निको देखकर कोई यह समझ कर आग बुझाने न जाय कि हमारे घरमें आग नहीं लगी है, तो याद रक्खो किसी क्षण उसका भी घर खतरेमें आ सकता है। अतः वातावरणका सुधार करना प्रत्येक प्राणीका परम कर्तव्य है। जहाँ चरित्र बल ऊँचा होता है वहीं पर सुख शान्ति होती है। मस्तिष्क और हृदय रूपी यंत्रको प्रबल बनानेकी शक्ति भारतमें ही है। सम्पूर्ण जड़ भौतिक विज्ञानका नियंत्रण आध्यात्मिकता द्वारा ही होता है। भारतवर्षकी विशेषता उसकी आध्यात्मिकता है, इसलिये स्व की रक्षा होने पर स्वराज्य होगा, अन्यथा स्वराज्य माना जायगा। अतः सर्व प्रथम गोहत्या बंद होना चाहिये और हिन्दूकोड रद्द होना चाहिये। इसके लिये भक्तोंको राजनीतिमें भाग लेना चाहिए। इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करनेके अनन्तर ही विश्व पर विजय प्राप्त की जा सकती है। क्योंकि एक लक्ष्यकी सिद्धिके लिये समाजका, राष्ट्रका मन एक सूत्रमें गुंथ जाय बस यही संगठन है। वह पवित्र और रागद्वेष आदि विहीन होने पर ही संभव है। अन्यथा ऊपरसे संगठन और भीतरसे कैंची चलती है। अपवित्र मनोंकी एकता मेंढकोंके तोलनेसे भी दुर्घट है। आजकी राजनीति ऐसी गन्दी हो गई है कि व्याख्यान मंचों पर अपनी प्रशंसा स्वयं की जाती है। नौकर रख कर अपनी प्रशंसा कराई जाती है। अखबार निकालकर, नोटिस बंटवा कर अपनी प्रशंसा कराई जाती है, तब कहीं जाकर वोट मिलता है। किन्तु इसके विपरीत हमारे यहाँ अपनी प्रशंसा अपने मुखसे करना मृत्यु तुल्य कहा गया है। यही कारण है कि कोई भी भला आदमी आजकी राजनीतिमें प्रवेश करते संकोच करता है। किन्तु यदि ऐसे ही संकोच करेंगे तो राजनीति और अधिक गन्दी होती जायगी। धार्मिक लोगों को भी राजनीतिसे नाता जोड़ना चाहिये। धर्म-नियन्त्रित राजनीति-संस्कृत-धर्मसे ही सुख शान्ति हो सकती है। राजनीतिज्ञोंकी धर्म-विमुखतासे ही महामारी, अन्न-संकट, वस्त्र-संकट, बाढ़, अतिवृष्टि हो रही है। गो-हत्या अभी तक भी बराबर चालू है, शास्त्र वेद, धर्मका हत्यारा हिन्दू-कोड कानून बनने जा रहा है, इसमें भी आस्तिकोंका ही दोष है, कारण कि बहुमत आस्तिकोंका है, फिर आपके वोट

से बनी सरकार आपकी आज्ञाको क्यों नहीं मानती ? यदि सरकार ऐसी नालायक है कि अपने स्वामी जनताकी आज्ञा नहीं मानती तो जनताको अधिकार है कि वह ऐसी आज्ञा भंग करने वाली सरकारको बदल दे। सुधारकोंको अपने विश्वासके अनुसार बरतनेका हक है इसी प्रकार सनातन-धर्मियोंको भी अपने विश्वासके अनुसार बरतनेका हक होना चाहिए।

तत्ववेत्ता ही सच्चा राजनीतिज्ञ है

श्रीभगवत्स्मरणके साथ-साथ लौकिक उपाय करना भी हमारे देशकी पद्धति है। आजकी राजनीतिक संस्थाओंने ईश्वरका नाम लेनेकी मानो शपथ खा रक्खी है। किन्तु समर्थ गुरु श्रीरामदास स्वामीजी महाराज और लोकमान्य तिलककी राजनीति ऐसी नहीं है। शक्ति सहित भगवान् का पूजन करना चाहिये। व्यवहारमें भी नीति और धर्म का जोड़ा चाहिए तभी सुख रूप पुत्र और शान्ति रूपी पुत्री मिलेगी। धर्मके प्रतीक श्रीरामको छोड़कर नीतिके प्रतीक केवल सीताको अपनाने चला तो रावणने अपना सर्वस्व खोया। इसके विपरीत शूर्पणखा नीति-प्रतीक सीता की अवहेलना कर धर्मप्रतीक केवल रामको अपनाने चली तो उसने अपने नाक कान कटवाये। अतः धर्म नियन्त्रित राजनीति और नीति सहित धर्म होना चाहिए। भारतीय राजनीतिमें सर्वत्र प्रथम आन्वीक्षिकी ज्ञान आवश्यक बताया गया है। अन्यत्र आन्वीक्षिकीका अर्थ न्यायशास्त्री होते हुए भी यहां इसका अर्थ ब्रह्म विद्या है। क्योंकि राजनीतिका रहस्य है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मन, इन्द्रिय आदि पर शासन करने वाला व्यक्ति ही किसी ग्राम, नगर, प्रान्त, राज्य, राष्ट्र, विश्व पर शासन कर सकता है। काम, क्रोध, का दास कामिनी कांचनका किंकर हो तो उसे शासन (हुकूमत) की आशा छोड़ देनी चाहिए। इसलिए राजनीतिज्ञको ब्रह्म ज्ञान अनिवार्य है। तभी तो गीता कहती है 'इमं राजर्षयो विदुः' जो कुत्तोंके, शृगालोंके भोंकनेसे डरें वे भला क्या राजनीतिमें आयेंगे ? फिर आज जो लोग लाल पगड़ी और सफेद टोपीसे डरने लगे हैं. पर यह ठीक नहीं है ऐसे लोग भला शासक क्या होंगे ? एक ब्रह्म रूप अस्त्रको लेकर लड़ने वाले धीर वीरका समरमें कभी पराजय नहीं हो सकता।

गौएँ भगवान्की इष्टदेव

जगद्गुरु एवं स्वतन्त्र भारतमें गौवध होता रहे यह एक अत्यन्त ही लज्जाकी बात है। इस देशमें गौरक्षाके लिए अखण्ड भूमण्डलाधिपति एकछत्रसम्राट महाराजा श्री दिलीपने आत्मसमर्पण कर दिया था। भगवान्के निरावरण चरणारविन्दोंके स्पर्शका सौभाग्य न द्वारिका धामको, न मथुरा धामको प्राप्त हुआ, किन्तु वह सौभाग्य श्री वृन्दावन धामको ही था। श्री भगवत् चरणारविन्द संस्पर्श ब्रह्म-संस्पर्श है। उसके स्पर्श मात्रसे ही कठिन भूमि नवनीतके समान द्रवित हो जाती थी और उसमें श्री भगवच्चरणारविन्द के बज्र, अंकुशादि चिन्ह अंकित हो जाते थे। भगवान्ने चरणारविन्दोंमें इसीलिए पदत्राण धारण नहीं किया कि गौ हमारी इष्टदेवता है। जब गौ पदत्राण धारण नहीं करती तो फिर भला हम पदत्राण धारण कैसे करें ? जहाँ भगवान्की ऐसी गौ भक्ति वहां फिर दिलीपकी तो बात ही क्या ? गाय पक्षपात रहित होकर आस्तिक नास्तिक, हिन्दू मुसलमान सबको समान रूपसे मधुर दूध देती है, अतः इनका रक्षण अवश्य ही करना चाहिए। किन्तु यहां तो आज गोवध बन्दीके लिए सत्याग्रह चल रहा है, यह एक कितने आश्चर्यकी बात है ? आजके शासक कहा करते थे कि यहाँ रामराज्य होगा, किन्तु श्रीराम राज्यमें तो कुत्तेको भी तत्काल न्याय मिलता रहा, पर आज कांग्रेसी राज्यमें गाय को भी न्याय नहीं मिलता। गौवध बन्द हो यह आवाज बुलन्द करने पर जेलोंकी हवा खानी पड़ती है, और उन्हें पकड़ पकड़ कर जंगलोंमें छोड़ा जाता है। गौवध तो यहाँ बंद होकर ही रहेगा। पर शासकोंको तो गोवध बंद कर बहती गंगामें हाथ धो लेना चाहिए और साथ ही जनताका भी परम कर्त्तव्य है कि इसे गोपालन पर ध्यान देना चाहिए। गायोंके बछड़ोंसे खेती करनी चाहिए। गायका घी, दूध दही पीना खाना चाहिए और जीवित पशुको मार कर जो कोमल चमड़ा निकाला जाता है उसके जूते आदिका बहिष्कार होना चाहिए। जो गौहत्यारे हैं उन्हें भूलकर भी अपना वोट नहीं देना चाहिए। इस समय जनताका राज्य कहा जा रहा है अतः गौ हत्याका पाप जनताके सिर पर आयगा। इसलिए गौवध बन्द करना जनताका परम कर्त्तव्य है।

शास्त्रोंमें पक्षपातका नाम नहीं

शास्त्रोंमें पक्षपातका लेश भी नहीं है। स्वधर्मनिष्ठ शूद्र बैकुंठ, एवं स्वधर्म विमुख ब्राह्मण नर्क जाता है। स्वधर्म निष्ठ व्याधकी प्रशंसा की जाती है। सभी धर्मवादी अपने धर्मको ईश्वरीय मानते हैं, ईश्वरके परिवर्तनके साथ ही धर्म-परिवर्तन हो सकता है, परन्तु यह सम्भव नहीं, अतः धर्म नित्य है, जो कुछ परिवर्तन देखा जाता है यह भी शास्त्र विरुद्ध ही है। वेद विरुद्ध स्मृति अप्रमाण होती हैः—

'विरोधेत्वनपेक्षं स्यात् असतिह्यनुमानकम्'

उस धर्मकी रक्षाके लिए भगवद्भक्तोंको, धार्मिकों को सभीको प्रयत्न करना चाहिए। क्योंकि धर्म रक्षाके लिये भगवान्के श्रीचरणारविन्दोंमें दंडक वन के कांटे लगे थे। राजनीतिज्ञ और धार्मिकोंका परस्पर सहयोग हो और राज-नीतिज्ञ धर्मका आदर करें और धार्मिक राजनीतिको अपनाएं तभी सब उपद्रव दूर हो सकते हैं।

कान खोलकर सुनो

मैं सौहार्द एवं स्नेहसे कह रहा हूँ, कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट सज्जन कान खोलकर सुनें कि वे रूसके **नहीं** भारत के हैं। अब भी उनमें वशिष्ठ, नामदेवकी **संतान** होनेके कारण उनका ही रक्त बह रहा है। उन्हें पहले **अपने** देश की राजनीति समझनी चाहिए। रूसकी राजनीतिवादमें इन लोगोंका कहना है कि ईश्वरवादी, धर्मवादी शोषक होते हैं, अतएव हम ऐसे वर्गविहीन समाजकी स्थापना करें, जहाँ शोषक रहें न शोषित। किन्तु, कम्युनिस्ट सोशलिस्टों को समझ लेना चाहिए कि आस्तिक स्वदुःख परिशीलनशाली एवं परदुःख सहिष्णु होते हैं। महाराज श्री रन्तिदेवने ४८ दिनके निर्जल उपवासके बाद आया हुआ अन्नका भक्षण प्रारम्भ करना चाहा और भगवान्से प्रार्थना की कि अतिथि प्राप्त हो। बिना अतिथिको भोजन कराये भोजन न करना पड़े। इतनेमें ही एक ब्राह्मण, एक अन्त्यज, एक पुलकस अतिथि आया। भगवद् बुद्धिसे सबको अन्न जल देकर महाराज रन्तिदेव संतुष्ट ही नहीं हुए किंतु भगवान्से प्रार्थना की कि भगवन् यदि कुछ भी मेरा पुण्य हो तो सभी पीड़ित प्राणियोंकी पीड़ा दूर हो।

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्॥

ऐसे ईश्वर परायण धर्म नियन्त्रित लोगोंको शोषक कहा जाय या पोषक? आज साम्यवाद तो चाहते हैं किन्तु लेने वाले कहते हैं कि मरकर लेंगे, मारकर लेंगे, जहन्नुममें भेज कर लेंगे, जहन्नुम जाकर देंगे पर लेंगे। और इधर देने वाले कहते हैं कि न देंगे मर जायंगे, मिट जायेंगे पर न देंगे। रामराज्यकी समता तो ऐसी होगी कि जहाँ देने वाले कहेंगे लीजिये लीजिये कृपा कीजिये, पर लेने वाले कहेंगे न लेंगे न लेंगे हमें नहीं चाहिये न लेंगे। आस्तिक परदुःख सहिष्णु लोगोंकी तभी बहुलता होगी। रामराज्य लाना चाहते हो तो भक्तोंका एकमात्र परमकर्तव्य है कि वह भगवान्का भजन करते हुए राजनीतिमें भी भाग लें और हिन्दू सभ्यता संस्कृतिकी रक्षाके लिए, गोवध बंद करानेके लिए, भारतमाताको पुनः अखण्ड बनानेके लिए कटिबद्ध हो जांय। बिना राजनीतिमें भाग लिए अब धर्मकी रक्षा, हिन्दू सभ्यता संस्कृतिकी रक्षा न हो सकेगी।

फलित ज्योतिषका महत्त्व व विपत्कालका सदुपयोग

शनिकी साढ़े सातीका खुलासा तथा विघ्नोंकी शान्तिका धार्मिक उपाय

[लेखकः—श्रीनिर्भयरामजी जैन]

पूज्यवर ऋषि मुनियों और आचार्योंने स्पष्ट बताया है कि संसारके समस्त पदार्थ असार हैं, सुख दुःखादि समस्त पूर्वोपार्जित कर्मोदयका फल है, कर्मोदय सदैव एक-सा नहीं रहता। किसी समय प्रशस्त प्रकृतियोंके उदयकी प्रबलता हो जाती है और किसी समय पाप प्रकृतियोंकी। प्रायः देखनेमें आता है कि जब किसी व्यक्तिके प्रशस्त प्रकृतियोंका प्रबल उदय हो जाता है उस समय वह वास्तविक शुभ कर्तव्यको भूल जाता है। जिसको सुख कहते हैं वह वास्तविक सुख न होते हुए भी सुखाभासमें मग्न हो जाता है। इस सम्बन्धमें एक विद्वान्ने कहा है कि—

येषां गृहे सुखं नित्यं राज्यं वाऽपि वरांगना।
विस्मरन्ति स्वभावं स्वं ते ही तल्लग्नमानसाः॥

प्रत्येक मनुष्यको सतर्क रहना चाहिए क्योंकि न जाने किस समय कैसी घटना बन जावे। संसारमें प्रत्यक्ष देखनेमें आता है कि बड़े-बड़े धनाधीश कालान्तरमें रंक-सदृश हो जाते हैं और रंक धनाधीश हो जाते हैं। यह कर्मोदयका प्रत्यक्ष फल है। इसलिए यह आवश्यक है कि जीवनकालमें किस-किस समय कैसे-कैसे कर्मोदय होंगे जिससे पहले ही सावधान हो सके। प्रत्येक मनुष्यको अपने तथा अपने पुत्रादिकोंका भविष्य जाननेकी अभिलाषा स्वाभाविक है, किन्तु भविष्य जाननेका कोई साधन भी तो होना चाहिये। इस कलिकालमें भविष्यका ज्ञान होनेका एकमेव साधन ज्योतिष-शास्त्र है। फलित ज्योतिषका सिद्धान्त कोई साधारण-सा सिद्धान्त नहीं है। इसके महत्त्वका मैं अल्पबुद्धि कुछ वर्णन नहीं कर सकता। यह अष्टांग निमित्त ज्ञानका अंग है। इसकी महिमा व उपयोगिताके विषय पर अनेक बुद्धिमानोंने अच्छे-अच्छे लेख प्रकट किये हैं। यह सिद्धान्त आपत्तियोंके आनेसे पूर्व ही सावधान करने वाला है। एक ज्योतिष-विज्ञान ही ऐसा है, जिसके द्वारा जीवन-भरमें आने वाले अनुकूल व प्रतिकूल समयका पहलेसे ही ज्ञान हो सकता ।नसे मनको सन्तोष होता है और सन्तोषसे चिन्ताका नाश तथा धैर्य प्राप्त होता है और कर्मोंकी प्रबलताके प्रति विश्वास होने लगता है, यदि सज्जनोंका समागम मिल जाय तो धार्मिक शुभ-कृत्योंमें रुचि भी होने लग जाती है।

वास्तवमें सूक्ष्मदृष्टिसे विचार करें तो ज्योतिष-शास्त्रका उपयोग सुख व ऐश्वर्यकी उन्नतिको जाननेके लिए नहीं, किन्तु दुख व संकट-ग्रस्त स्थितिकी गहराई जाननेके लिये अधिक उपयोगी है, जिससे प्रत्येक मनुष्यको भविष्यमें आने वाले अनेक अशुभ प्रसंगोंसे सावधान होकर उनके प्रतिकार करनेका पूर्वसे ही अवसर मिल जावे। जिस प्रकार यात्री यात्रा करनेसे पूर्व ही मार्गमें आने वाले नदी, पुल और सड़ककी स्थिति व मार्ग-सम्बन्धी अनेक सुख-दुःखादिका ज्ञान किसी अनुभवीसे प्राप्त कर लेता है तो वह पहले ही सावधान होकर उक्त कष्टोंसे अपने आपको बचानेका यत्न कर लेता है। इसी प्रकार आयुष्यका काल-क्रम जाननेके लिए ज्योतिष-शास्त्रके द्वारा प्रत्येक शुभाशुभ समय, यश-अपयश, हानि-लाभ आदि भावी परिस्थितियोंके परिणामका ज्ञान प्राप्त करके आगे आने वाले विपरीत प्रसंगोंसे सावधान हो सकता है। अर्थात् अनिष्ट घटनाओंके प्रतिकार करनेके लिए प्रस्तुत हो सकता है, जिस प्रकार सुविज्ञ मनुष्य सूर्यास्त होनेके पहलेसे ही रात्रिके अन्धकारमें अपना काम चलानेके लिए दीपक आदिका प्रबन्ध कर लेता है, इसी प्रकार सु-कर्मोदय मन्द होनेके पूर्व ही भविष्यमें आने वाले प्रतिकूल समयका प्रतिकार करनेके लिए श्री पंच परमेष्ठी महाराजकी श्रद्धा-भक्ति-पूर्वक उनके गुणोंका चिन्तन व स्मरण और उनके नामका जप पूजन, और ब्रह्मचर्यव्रत, गुप्तदान, दीनोंका रक्षण, तप व समताभाव आदि करते रहना चाहिए, जिससे भविष्यमें आने वाले संकटमय समयका कुछ भी प्रतिकार हो जाय। यह सिद्धान्त निःस्सन्देह विश्वास करने योग्य है। यह अतिशयपूर्ण सिद्धान्तकी बातें अनेकों बार मेरे लिये भी बहुत हितकारी सिद्ध हुई हैं। इसलिए उपर्युक्त सिद्धान्तसे अवश्य लाभ उठाना चाहिये।

यह इसी पर्यायमें नहीं बल्कि अगले भवके लिए भी कल्याणकारी है।

विपत्तिकाल

कोई भी मनुष्य, कुटुम्ब, समाज तथा राष्ट्र कितना भी प्रचण्ड, शक्तिशाली, पराक्रमी, धनवान्, और धर्मात्मा क्यों न हो, किन्तु प्रबल पापोदयके कारण अनेक प्रकारके कुप्रसंग उत्पन्न हो जाते हैं, जिससे भोगनेकी शक्तियां कम हो जाती हैं और वह तृणवत् दीखने लगता है। ऐसे समयमें मित्र भी दूर हो जाते हैं और उससे अन्य व्यक्ति भी घृणा करने लग जाते हैं। बुद्धि भी निर्बल हो जाती है। अर्थात् वह बलहीन हो जाता है, जिससे उसके लिये उक्त दुःखोंका प्रतिकार करना कष्ट-साध्य हो जाता है।

ज्योतिषकी महिमा

वर्तमानमें एक ज्योतिष-सिद्धान्त ही ऐसा है, जो आगामी आने वाली आपत्तियोंसे मनुष्यको पहलेसे ही जाग्रत कर देता है और उक्त परिस्थितियोंसे बचनेके लिए धार्मिक कृत्य करने व उपस्थित शक्तियोंसे आगामी शुभ प्रबन्ध करनेका अवसर दे देता है।

यूरोप, अमेरिका आदिमें ज्योतिष-सिद्धांतकी उन्नति तीव्र गतिसे होती जा रही है। इंगलैंडकी ग्रीनविच वेध-शाला बहुत विख्यात है, किन्तु भारतमें इससे विपरीत हो रहा है। अधिकतर मनुष्योंका विश्वास ज्योतिष-सिद्धान्तके प्रति कम हो रहा है। भारतमें ज्योतिषकी अनेक वेधशालायें होते हुए भी राज्य व धनाढ्य व्यक्तियोंका विशेष संरक्षण न होनेके कारण वे व्यर्थ-सी हो रही हैं।

ज्योतिषके प्रति विश्वास कम होते जानेका एक कारण यह भी है कि जन्म-लग्नकी शुद्धता, ग्रहोंके अंश और जन्मकालिक दशाका भुक्त भोग्य-काल यथावत् सही न होने से फलादेशमें अन्तर पड़ जाता है, जिनकी जन्मपत्री सर्वाङ्ग शुद्ध है उनकी पत्रीके विचार करने वाले यदि विशेष ज्ञानी और अनुभवी न हुए तो ठीक फलादेश नहीं बतला सकते। जन्म-कुण्डलीके फलादेशका निश्चय करना कोई साधारण बात नहीं है। भाव-भावेश, भाव-अन्तर्गत ग्रह, ग्रहोंकी दृष्टि तथा कारक-ग्रह आदिका विचार करके लग्न व लग्नेशके बलाबलको खूब ध्यानमें रखना चाहिए तथा ग्रहों का परस्पर सम्बन्ध जोड़कर देश-कालकी परिस्थितिका ध्यान करते हुए जातकके फलादेश पर विचार करना ही बुद्धिमत्ता है। जातक शास्त्रोंमें प्रत्येक फल अपेक्षासे लिखा हुआ है, इसलिए इसका विचार स्याद्वाद न्यायसे करना ही सम्यक् मार्ग है।

ज्योतिष-जगत्में जैनोंका महत्त्व

पाठकोंको यह जानकर हर्ष होगा कि ज्योतिष शास्त्रके रचने वालोंमें जैन विद्वानोंकी संख्या भी पर्याप्त है। मुझे ज्ञात हुआ है कि एक दक्षिणके विद्वान्ने ज्योतिष-ग्रन्थकारोंके सम्बन्धमें एक बड़ी पुस्तक लिखी है, उसमें जैन ग्रंथ-कर्ताओं की संख्या भी अच्छी है। इस सम्बन्धमें श्री पं० नेमिचन्द्र जी शास्त्रीने भी 'भारतीय-ज्योतिष' पुस्तकमें सराहनीय उल्लेख किया है। श्री रतीलालजी जैन ज्योतिष-विज्ञानके कारण कितने सम्माननीय हो रहे हैं। सौराष्ट्रीय जैन विद्वान् श्री हरिजी कल्याणजी रचित ज्योतिषकी बृहत् पुस्तकने जर्मनीमें कितना सम्मान पाया—जर्मन विद्वानोंने इन्हें "कल्याण ऋषि" लिखा है। सुप्रसिद्ध ज्योतिष विद्वान् पं० अनूप मिश्रजीने इनको सप्रमाण जैन सिद्ध किया है। मंगलाचरणमें 'श्रीआदिनाथप्रमुखा जिनेशाः' तथा चतुर्थ-श्लोकमें श्री पूज्य तेईसवें तीर्थंकर महाराजकी महिमा वर्णन की है। आगे उन्होंने लिखा है "जिनप्रसादाद्दीर्घायु-र्भवतु।"

भारतके ऐतिहासिक विद्वान् श्री चाणक्यने भी चाणक्य नीतिदर्पणके नौवें अध्यायके पांचवें श्लोकमें ज्योतिष-सिद्धान्त की प्रशंसा की है। श्री पं० नेमिचन्द्रजी जैनने 'भारतीय-ज्योतिष' पुस्तकके प्रथम भागमें ज्योतिषका महत्त्व बताया है। सुविख्यात जोतिर्विद् विद्वान् पं० वासुदेव सदाशिवने फलित ज्योतिष सिद्धांतकी महिमा पर विस्तृत प्रकाश डाला है। इस 'श्रीस्वाध्याय' पत्रमें भी ज्योतिषकी महिमा पर अनेक लेख प्रकाशित हो चुके और होते रहते हैं। इसलिये इससे अधिक यहां लिखना अनावश्यक है।

गोचर शनिकी साढ़े साती

गोचर शनिकी साढ़े सातीके सम्बन्धमें जनतामें कुछ भूल-सी फैली हुई है। साढ़े सातीको प्रायः अनिष्ट समझा जाता है, पर ऐसा नहीं है। इसकी शुभ-अशुभ दोनों प्रकार

की भिन्न-भिन्न सूचनायें हैं। साधारणतया यों समझ लो कि जिनकी शुद्ध जन्मपत्रीमें शनि श्रेष्ठ है तो साढ़ेसाती कालमें किसी समय शुभ कर्मोदय होनेकी सूचना है। जिन जिन मनुष्योंके शनि नेष्ट हैं उनके साढ़े साती कालमें किसी समय अधिक पापोदयकी सूचना है। साढ़े सातीका प्रारम्भ काल चन्द्र राशिसे पूर्व राशि पर शनिके आनेसे ही प्रारम्भ नहीं समझना। जन्म-समयके चन्द्रके अंशों से ३० अंश पूर्व जब शनि आवे तो उस समय से प्रारम्भ होकर चन्द्रके अंशोंसे ६० अंश तक आगे साढ़ेसाती समझना चाहिये। इस सम्बन्धमें एक ज्योतिषके विद्वान्ने विस्तृत प्रकाश डाला है। साढ़ेसातीका सम्बन्ध जन्म-लग्न और जन्म-कालिक सूर्य राशिसे भी माना जाता है।

विपत्ति काल

आपत्ति कालके समयको नेष्ट ही न समझें, क्योंकि यह विपत्तिका समय ऐसा है कि जिसमें मनुष्यको धर्मकी शरण लेनेकी भावना उत्पन्न हो सकती है। ऐसे विपत्ति-कालमें ही पुण्य और पापके प्रति विश्वास उत्पन्न हो सकता है। सुखमें मग्न-समयका मोह-अन्धकार विपत्तिमें दूर हो जाता है और संकटसे छूटनेके लिये भगवान्को याद करने लग जाता है, ऐसे अवसर पर वह पापोंसे भयभीत होकर कल्याणके मार्ग पर भी आ सकता है। सुख-मय कालमें मनुष्य दुखियोंको घृणाकी दृष्टिसे देखता है और अपशब्दों का प्रयोग करता है। ऐसे समयमें ही उक्त दुष्ट कृत्यों पर पश्चात्ताप करनेका अवसर मिलता है। वह स्वयं दुखी होने पर दूसरोंके दुःखोंको भी अनुभव करने लगता है।

विघ्नोंकी शान्तिका धार्मिक उपाय

मैं न तो ज्योतिषी हूँ और न ज्योतिष द्वारा आजीविका करता हूँ। मैं अपने स्वतन्त्र स्वल्प व्यवहार द्वारा अपना सब कार्य सम्पन्न करता हूँ। मेरे प्रबल पापोदयके कारण मेरी उल्लेखनीय सर्व सम्पत्ति नष्ट हो गई थी, धर्म-ध्यानमें वृद्धि करते हुए अपने पूर्वोपार्जित तीव्र पापोदयको जानकर धार्मिक कृत्योंमें और भी अधिक वृद्धि की, जिसके प्रभाव से अनेक विघ्न मन्द हो गये। इसीलिये मैं कहता हूँ कि श्रद्धा भक्ति पूर्वक श्रीपंचपरमेष्ठी भगवान्का योग्य काल में जाप जपे और भगवान्का पूजन गुणस्तवन आदि करे। श्री अष्ट प्रतिहार्य, अनन्त चतुष्टय श्री तीर्थंकरके पंच-कल्याणक व समवसरण आदिका चिन्तवन करे। इनके अतिरिक्त जब भी अवकाश मिल सके तभी विनयपूर्वक भगवान्का स्मरण करे। इससे विघ्न-बाधायें अवश्य कम होंगी। कर्माण-वर्गणाओंमें शुभ परिणमन होगा। ये सब बातें मेरे स्वयंके अनुभवमें आई हुई हैं अतः इस कल्याण कारी मार्गसे पाठकों को लाभ उठाना चाहिये।

चांदी सोनेका चातुर्मासिक भविष्य

[ले०—राजवैद्य डा० श्रीअमरदत्तजी मिश्र कोमरशीयल एण्ड फाइनेन्शियल एस्ट्रालोजर]

'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंकी सेवामें ज्योतिष-शास्त्रके आधार पर चांदी सोनेका चातुर्मासिक भविष्य व्यक्त कर रहा हूँ। प्रत्येक मासमें एक-एक सप्ताहकी दैनिक और जनरल रिपोर्ट भी स्पष्ट रूपसे इस लेखमें दी गई है, जिससे पाठक 'श्रीस्वाध्याय' के पढ़नेका अवश्य ही लाभ उठा सकें। मास जौलाई, अगस्त, सितम्बर और अक्टूबर १९५५ तककी लेखमें तेजी मंदी दी गई है, यह सब लेखको ध्यान पूर्वक 'श्रीस्वाध्याय' द्वारा स्वाध्याय करने पर सम्यक् जाना जा [illegible]। आशा है पाठक लेखकी तथ्यता पर ध्यान देंगे। चांदी [illegible] मास उत्तम तेजी कारक रहेगा।

जुलाई १९५५

इस मासमें २४ तक सू. ह. श. मंगल, १२ तक शुक्र, ८ से पूरे मास तक बुध, १४ से ३० तक क्रम से कर्क कर्क वृश्चिक कर्क कर्क कर्क आदि राशियोंमें है यह राशियां फलवती *Bullish* हैं याने तेजी कारक हैं। सू. ह. श. मं. शु. बु. गुरु सिंहमें हैं, नेपच्यून तुलामें है, मं १२ से सिंहमें आ जाता है। शुक्र ८ तक मिथुनमें हैं अतः अल्पमत *Minority* में गुरु नेपच्यून शुक्र बुध १३ तक मिथुनमें है पर मिथुन मंदी कारक नहीं यह घटा बढ़ी कारक है। द्विस्वभाव राशि है। इसी प्रकार शुक्र भी मिथुनमें है यह भी मंदीकारक नहीं है

अतः बहुमतमें (*Majority*) में ग्रह फलवती राशियों में हैं अतः इस मासमें सदा बाजारकी स्थिति तेजीमें ही चलेगी, भूलकर भी मंदीमें नहीं रहना चाहिये। यहां प्रारम्भ के दैनिक योग एक सप्ताहके देकर उनकी तेजी या मंदी कारक अवस्थाको पाठकोंके समक्ष रखना है।

दिनांक १ जुलाई १९५५ को चं० मं० पञ्चम होती है ७।३९ पर मंदी। चं प्लूटो चतुर्थ १०।५१ पर तेजी। चं. ह. पञ्चम २४।३३ पर मंदी। चं. ह. समान क्रांति ८।३६ बाजार में उथल पुथल क्षणिक। यहां आजके ये योग दिये हैं इनका प्रभाव भी पाठकोंके समक्ष रखते हैं पर आजका बाजार तेजीमें रहेगा मंदी भी अवश्य ही आवेगी, जैसे खुलते बाजार में तेजी चं. प्लुटोके चतुर्थसे, पुनः दिनके १२ बजे से ८।३३ तक चांदीमें मंदी भी आवेगी, परन्तु खुलता बाजार अवश्य ही तेजीमें चलेगा, चं. मं. की पंचमका प्रभाव शून्य रहेगा कारण कि यह ७।३९ प्रातः होती हैं।

२ जुलाई चं. ने अर्द्ध चतुर्थ १८।२० पर तेजी अतः आज उक्त वेला पर तेजी जानें। ३ जौलाई चं० बु० सप्तम १६।३५ य बाजारमें परिवर्तन करेगा सम्भव है आज मंदी रहे। ४ जौलाई चं० श० अर्द्ध चतुर्थ ९।१९ पर होती है खुलता बाजार तेजीमें खुलेगा फिर कुछ मन्दीका झोका आवे। ५ जौलाई चं० श० सेक्स्टायल १४।३४ यह चांदीको तेज करती है। ५ जुलाई चं० ह० समान क्रांति १२।२७ पर बाजारमें सहसा परिवर्तन होंगे। ६ जुलाई चं० मं० सप्तम ८।३० पर यह चांदीको तेजी करेगी। ६ जुलाई ं० ने० चतुर्थ १२।४३ यह भी चांदीको तेज करेगी। ६ जौलाई चं० ह० सप्तम १६।४ यह विशेष तेजी लावेगी।

७ जौलाई मं० ह० युति ३।३२ पर होती है, इसके प्रभावसे बाजारमें विशेष तेजी आवेगी, अतः बाजार चांदीके में ५ जुलाईसे तेजीका विशेष वातावरण बनेगा और ६ को विशेष तेजी आवेगी, यह एक महान् चमत्कारी योग है, इस योगमें अच्छी तेजी आवेगी। दिनांक ७ जौलाईसे बाजार चांदीका मंदीमें चलेगा, यह मंदी दो या तीन दिन ही रहेगी फिर तेजीका वातावरण बनेगा। जनरल बाजारका रुख तेजी में चलेगा। दिनांक १२ जौलाई से फिर बाजारमें कुछ मन्दी की संभावना है और आवेगी, फिर चांदीका बाजार १७।१८ से बदलेगा तेजीमें, और १६ जुलाईको कुछ तेज होगा। २० को फिर कुछ मंदी आवेगी और फिर २१ को तेजी आवेगी, इस प्रकार बाजारका जनरल रुख तेजीमें ही चलेगा। विशेष दैनिक और जनरल विशद रिपोर्ट मंगवाने पर आप जान सकते हैं। जिसका ३५) रु० प्रतिमास है आप श्रीस्वाध्यायके संपादक द्वारा ही हमसे बात चीत करें।

अगस्त १९५५

इस मासमें सू.ने. मं० शु० बु० गु० मंदी कारक राशियों में हैं और ह० श० तेजी कारक राशियोंमें है अतः बहुमत (*Majority of Planets Bearish*) मंदी कारक राशियोंमें अतः जनरली यह मास मन्दी कारक ही रहेगा। कारण कि सू. ने. मं. शु. बु. गुरु आदि षड्ग्रही मंदी कारक राशियोंमें है (Bearish) केवल ह. श. थोड़े समय तक शुक्र तेजी कारक राशिमें हैं अतः बहुमतमें ग्रह इस माह में मंदीकी तरफ हैं, अगर बाजारकी जनरल रुख मंदीमें ही चलेगी, शिवाय खास खास तेजी कारक योगोंको छोड़कर यहां दैनिक योगों सह साप्ताहिक विवरण देते हैं, देखें।

१ अगस्त चं० मं० सेक्सटाइल तेजी। सू गु० समान क्रान्ति यह मंदी। चं. ह. कांति विशेष परिवर्तन अतः आज चांदीमें मंदी रहेगी।

२ अगस्त १९५५ चं. ने चतुर्थ तेजी कुछ तेजी, आवेगी।

३ अगस्त १९५५ मं. श. चतुर्थ तेजी। चं० बु० सप्तम चांदी मंदी, आज तेजी ही रहेगी फिर मंदी आवेगी।

४ अगस्त १९५५ चं० गु० युति चांदीमें मंदी और चं० मं० सप्तम चांदी तेज।

५ अगस्त बु० गु० युति चांदी मंदी। सू० बु० युति चांदी तेज। सू० मं० क्रांति तेजी, अतः आज चांदी तेज हो।

६ अगस्त आज चांदीका बाजार स्टेडी ही रहेगा।

७ अगस्त १९५५ बु० श० चतुर्थ है चांदी तेज रहेगी। बु० गु. क्रान्ति चांदी मंदी नहीं, तेजी अतः आज चांदी मंदी रहेगी। उपरोक्त साप्ताहिक Report पर से पाठक लेखका महत्त्व समझ सकेंगे आगे बाजार कुछ तेजीमें चलेगा। १।२ दिन पर इन १।२ दिनोंमें मंदी ही समझें। तेजी और मंदीके पूर्णयोग है, जिनमें बलवान् योग मंदी

कारक है, जनरल योग भी मंदी कारक है, अतः मंदी ही चलेगी। ७ अगस्तको तेजी अवश्य ही आवेगी। इस मासमें चांदीका बाजार ऊंचा नहीं उठेगा। दैनिक तेजी मंदी चलने पर भी औसतन फल मंदीका ही विशेष रहेगा। मासके मध्य में कुछ तेजी है, मासान्तमें चांदीका बाजार नरम ही रहे, ऐसी संभावना है, विशेष, विवरणके लिये हमारी रिपोर्ट मंगावें 'श्रीस्वाध्याय' द्वारा पत्र व्यवहार करें। मासिक रिपोर्टमें सब विवरण दैनिक और जनरल मिलेगा। माहवारी रिपोर्ट एक जिन्सका मूल्य ३५) रु० हैं। दो रिपोर्ट एक साथ मंगाने पर ५१) रु० है जिसकी सहायतासे व्यापारमें अच्छी कमाई करनेका अवसर मिलता है।

सितम्बर १९५५

यह मास भी मंदीका द्योतक है। सू० ने० गु० शु० बु० ह० यह मंदी कारक राशियोंमें हैं और केवल श० ही तेजी कारक राशिमें है, अतः यह मास भी निश्चित रूपसे मंदी का ही द्योतक है, "साप्ताहिक विवरण"।

१ सितम्बर १९५५ चांदी मन्दी रहेगी, सू० शु० युति।

२ सितम्बर १९५५ चांदीका बाजार स्टेडीमें चलेगा। चं० सू. सप्तम चं. शु. सप्तम बु० ह० सेक्स्टायल अतः बाजार स्टेडीमें चलकर तेजी लावेगा।

३ सितम्बर १९५५ आज तेजी मन्दी चलेगी, प्रथम मन्दी फिर तेजीके योग इस प्रकार हैं। बु. गु. अर्द्ध चतुर्थ चं. श. पञ्चम चं० बु. क्रांति अतः मंदीके बाद तेजी जानें।

४ सितम्बर १९५५ आज चांदीमें मन्दी रहेगी। चं. सू. क्रान्ति, चं. शु. क्रांति चं० ने. क्रान्ति। शु० ने. अ-चतुर्थ सू. ने. अर्द्ध चतुर्थ आज मंदी ही जानें। तेजी यदि आवेगी तो १० के आसपास रात्रिमें। ५ सितम्बर १९५५ बु० मं० क्रान्ति तेजी, चं० गु० पञ्चम मंदी, अतः आज चांदीका बाजार मंदा रहकर सायं या मध्यान्हके बाद तेजीमें चलेगा। ६ सितम्बर १९६५ को चांदीका बाजार मंदीमें ही चलेगा। चं० गु० और चं० मं० क्रान्ति और पञ्चम बनती हैं दिनांक ७ सितम्बर १९५५ को शु० ह० से भी स्क्वायर है यह तेजी करेगी शेष योग मंदीके हैं, तथा चं. श. सप्तम की बनती है यह भी चांदीमें अवश्य ही तेजी लावेगी अतः आज चांदीमें तेजी निश्चित रूपसे आवेगी। इस प्रकार यह हमारी साप्ताहिक तालिका है जिसके आधार पर आप चांदीके व्यापारमें लाभ उठा सकेंगे, विशेष विवरणके लिये श्रीस्वाध्याय सदन द्वारा हमारी रिपोर्ट मंगावें, जिस का चार्जेज प्रति जिंस प्रति मास ३५) रु० है जिसमें पूरे मासका दैनिक और जनरल घटा बढ़ीका है, जिसके बल पर व्यापारमें पर्याप्त लाभ उठाया जा सकता है। यह मास जनरल तौर पर मंदीमें ही चलेगा। मगर बीच बीचमें तेजी मंदीके दैनिक ग्रह योग हैं जिनके बल पर बाजारमें परिवर्तन अवश्य ही आवेंगे।

अक्टोबर १९५५

यह मास जनरल रूपसे विशेष मंदीका नहीं है—क्यों कि इस मासमें तेजीकारक राशियोंमें ग्रहोंका बहुमत है। बाजारमें तेजी अवश्य ही आवेगी, मंदी भी चलेगी मगर जनरल रोल मंदीकी लाइनका ही है। यहां हम ५ दिनकी रिपोर्ट पाठकों के लाभार्थ देते हैं। जिसकी तथ्यता पर आप हमारी रिपोर्टका महत्त्व जान सकेंगे, यह इस मासके ५ चांस हैं। अब आप निम्न चांसोंको देखें और लाभ उठावें यह स्वाध्यायकी देन है कि व्यापारियोंके लाभार्थ दैवज्ञ जगत् इस प्रकारकी सद् प्रेरणा उत्पन्न कराता है। जिससे दैवज्ञ गण व्यापारमें होने वाले परिवर्तनोंका समय ज्योतिष शास्त्रके आधार पर निश्चित करके लेख बद्ध प्रकाशित करते हैं—

दिनांक १ अक्टोबरको बाजार मजबूत रह कर २ अक्टोबरको बाजरमें तेजी अवश्य ही आवेगी। दिनके २।३० तक, फिर बाजार शनैः २ मंदीमें बदलेगा, शनैः शनैः दिनांक ४ को चांदीका बाजार तेज रहेगा, दिनके ४ बजेसे ६।५७ निश्चित तेजी आवेगी। ४ अक्टोबरको मंगल उदय होता है। वह भी चांदीमें तेजी अवश्य ही करेगा परीक्षा करें। दिनांक ८ अक्टोबर १९५५ को भी चांदीमें तेजी आवेगी, बाजार खुलता ही तेजीमें खुलेगा। दिनांक १६ अक्टोबर १९५५ को बाजार मंदीमें चलेगा, १२।३८ दिनमें फिर बाजार तेजीमें बदलेगा और १०।१२ आनेकी तेजी आवेगी एवं दिनांक १४ अक्टोबर १९५५ को चांदीमें अच्छी तेजी आवेगी। अर्थात् रात्रिके १०।११ तक चांदीमें अच्छी तेजी आवेगी। यहां शु० ह० चतुर्थ हो रही है। इस प्रकार उपरोक्त ५ चांस पाठकोंको सप्रेम 'श्रीस्वाध्याय' द्वारा भेंट किये जाते हैं। जिनकी परीक्षा करें यदि यह हमारे चांस सच्चे हैं

चार मासका साप्ताहिक व्यापार भविष्य

रूई, चांदी, सोना, जूट, शेयर्स, एरण्डा, गुड़, गुवार, मटर आदिकी स्पेशल रुख

[ले०—ज्योतिर्विद्यारत्न श्री पं० गङ्गाप्रसादजी ज्योतिषाचार्य]

(१) ता० १ से ७ जुलाई तक—

ता० १ को ३ बजे रुई, चांदी, बेचो, ता० ४ को २॥ बजे डबल खरीदो, ता० ६ को फिर बेचो, ता० ७ तक डबल मुनाफा होनेके योग हैं। इस सप्ताहमें रुई, चांदी, सोनेके बाजारोंमें आश्चर्य जनक तेजी मंदी होगी। मंदी और तेजीकी दोनों पार्टियोंमें रस्साकशी होनेसे भाव ऊंचे व नीचे होंगे। भौमवारी पूर्णिमा तथा वायु परीक्षाका फल घटा बढ़ीका द्योतक है। अलसी, सरसों, अरण्डा, मूंगफलीके भावोंमें ता० ४ से मंदीका रियक्शन व्यापारियोंको खरीदका मौका दे रहा है। अगले सप्ताहमें तेजीका समर्थन मिलेगा। गेहूँ, चना, मटर, गुवार, गुड़के भावोंकी मंदी समाप्त हो रही है, आगे तेजीकी चाल दिखाई देगी। शेयर्स—टाटा आर्डनरी इण्डियन आयरनमें ता० २ से नरमाई आकर ता० ५ से तेजीका रुख रहेगा। जूट. बीट्वील कलकत्ता मारकेटमें ता० १ से ४ तक मंदी, ता० ६ से तेजीका रुख रहेगा, अमरीकन काटन फीचर लगातार ३ दिन ता० २।४।७ को मंदे जायँगे।

(२) ता० ८ से १५ जुलाई तक—

ता० ८ को खुलते बाजार चांदी, सोना, रुई खरीदनेके चांस हैं। सप्ताहके ग्रहयोग तेजीका समर्थन करते हैं। गेहूँ, चना, हल्दी, किराना, मूंग, अरहर, मटर, गुवारके भावोंमें ता० ९ से १३ तक कुछ कुछ तेजी आवेगी, किन्तु यह तेजी टिकाऊ नहीं है। शेयर्स—टाटा आर्डिनरी आयरनके भावोंमें ता० ८ से १४ तक तेजीका रियक्शन आवेगा। घटे भावोंमें खरीद करके लाभ उठावें। तिल, तेल, घृत, जूटके भावमें दोनों तरफ घटाबढ़ी चलेगी, ज्यादा तेजी मंदी नहीं हैं।

तो आप हमारी रिपोर्ट मंगवावें-सचाई पर सब काम चलते हैं। यदि हमारे चांस सच्चे हैं तो आपको सचाईके साथ सहयोग देना ही पड़ेगा।

---

(३) ता० १६ से २४ जुलाई तक—

यहां एक प्रखर तेजीकी धारणा है। चांदी, सोना, रुई, अलसी, अरंडा, मूंगफली, आयरन, टाटा आर्डिनरी ता० १६ को खरीदो, ता० २३ तक इकतरफा तेजी रहेगी, इस तेजीका विशेष योग मंगलवारी अमावस ता० १८।१९ को चन्द्रमाके साथ चार ग्रहोंकी युतियां होनेसे बाजारोंमें तेजी आ जायगी। गुड़, शकर, घृत, सरसों, गेहूँ, चावल, चनाके भावोंमें समानता रहेगी। शेयर बाजारमें इकतरफा तेजीकी लहर दौड़ जायगी, टाटा आर्डिनरी, आयरन खरीदनेके चांस हैं।

(४) ता० २५ से ३१ जुलाई तक—

इस सप्ताहमें विदेशी वातावरणके द्वारा मंदीकी हवा चारों तरफ दिखाई देगी। चांदी, सोना, रुई, गुड़, मटर, गुवार, सरसों ता० २६ को बेचो और ३१ तक लाभ उठाओ। जौ, चना, गेहूँ, मसूर, अरहरके भावोंमें ता० २७ से तेजी रहेगी। जूट, बारदान, कालीमिर्च, आयरन, टाटा आर्डिनरी शेयरोंके भाव ता० २६ से तेजीमें, ता० २८ से अच्छी तेजीमें चलेंगे। विशेष मंदी एरंडा मूंगफली, चांदी और रुईके भावोंमें रहेगी। साप्ताहिक मंदी लगाना अधिक लाभ कारी है। अमरीकन काटन फीचर ६।८।४ लाभकारी है।

(५) ता० १ से ७ अगस्त तक—

इस पक्षमें धान्य और खाद्य पदार्थोंके बाजारोंमें साधारण उतार चढ़ाव रहेगा। विशेष तेजी मंदी चांदी, सोना, रुईके बाजारोंमें चलेंगी, हमारा ध्यान चांदी और रुई पर विशेष मंदीका है। यहां इकतरफा मंदीका नजराना लगाकर व्यापार करनेसे उत्तम लाभ रहेगा। ता० २ को खुलते बाजारोंमें बेचो, ता० ७ तक अच्छी मंदी आनेके योग है। तिल, तैल, गुड़, शक्कर, तांबा, पीतलके भावोंमें समानता रहेंगी। टाटा आर्डनरी, आयरनके भावोंमें ता० २ से ५ तक तेजी, ६।७ साधारण रहेगी। अलसी, सरसों, अरंडा

में मंदीका रुख रहेगा। ता० २ को बेचो ६ तक लाभ उठाओ। कपड़ा, सूत, कागजके भावोंमें तेजी दिखाई देगी।

(६) ता० ८ से १५ अगस्त तक—

इस सप्ताहमें ग्रह-संयोग इकतरफा तेजीके द्योतक हैं। रुई, चांदी, सोना ता० ६ को खुलते बाजारमें खरीदो ता० १५ तक लाभ उठाओ। सावधान! ता० १३ के बाजारका ध्यान रखें, लाईन विपरीत चले तो बराबर हो जावें, वरना इकतरफा चांसके लाभकी आशामें रहें। गल्ला, तिल, तेल, बारदाना, सरसों, अलसीके भावोंमें मंदीका ध्यान है। ता० १०।१२ में तेजीके रियेक्शन आ सकते हैं। शेयर बाजारोंमें अच्छी घटा बढी चलेंगी। टाटा आर्डनरीमें ३) ४), आयरनमें १) १॥) तेजीका योग बन रहा है। ता० १० से १५ तक व्यापार तेजीका करना चाहिये।

(७) ता० १६ से २४ अगस्त तक—

इस सप्ताहमें बाजार दोनों तरफ चलेंगे, नीचे भावोंमें खरीद करके ऊंचे भावोंमें डबल बेचो, लाभके इच्छुक रुई, चांदी, सोनाका व्यापार तेजीके पक्षका करें और अरहर, मटर, गुवार, गेहूँ, चना, मसूरका मंदीके पक्षका व्यापार करें तब बाजारके साथ साथ चल सकेंगे। शेयर बाजार में अनिश्चित तेजी मंदी चलेगी। बराबर नीचे भावोंमें खरीदनेकी राय है। ता० १६ को खरीदो, ता० २० को बेचो, ता० २४ तक दोतरफा लाभ हो जायगा। रुईमें १०) १५) चांदीमें ३) ४) सोनेमें २) २॥) एरण्डामें ३) ४), टाटा आर्डनरी २) २॥) आयरनमें १) १॥) की मंदी दिखाई दे रही है, ता० २० को डबल बेचो या मंदीका नजराना लगाओ।

(८) ता० २५ से ३१ अगस्त तक—

इस सप्ताहमें अचानक तेजी विदेशी खबरोंसे आवेगी। ता० २५ व २७ को खरीदो, ता० ३१ तक लाभ उठावें। रुई, चांदी, सोनामें क्रमसे अच्छी तेजी चलेगी। घटे भावों में खरीदनेकी राय है। चना, मसूर, सरसों, अलसी, एरंडा के भावोंमें ता० २८ से तेजीका उछाला आवेगा। गुड़, शक्कर, गुवार, मटरके भावोंमें समानता दिखाई देगी। शेयर बाजारोंमें तेजीकी चमक विदेशी खरीदके कारण ता० २६ से बाजार तेजीकी प्रगतिमें चल जायगा।

(६) ता० १ से ८ सितम्बर तक—

इस सप्ताहमें तेजी मंदी दोनों समान रूपसे चलेंगी। चांदी, सोना, रुई, ता० ३ को १॥ बजे खरीदो ता० ७ के श्याम तक तेजी, रुईमें १०) १५) चांदीमें २॥) ३) सोने में १) १॥) की आयेगी। सरसों, मसूर, गुवार, मटर, गुड़, शक्करके भावोंमें ३ से तेजीका रियक्शन बराबर आयेगा, किन्तु जनरल रुख इन वस्तुओं पर मंदीकी है। शेयर बाजारोंमें इस सप्ताहमें अच्छी तेजी दिखाई दे रही है, ता० ४ को खरीदो, ता० ८ तक लाभ उठाओ। सरसों, अलसी, जूट, धान्य, गेहूं, जौ, तिल, तेल, घृतके भावोंमें तेजी रहेगी, खरीदना ही चांस है।

(१०) ता० ६ से १६ सितम्बर तक—

इस सप्ताहमें ग्रहसंयोग द्वारा इकतरफा मंदीका रुख रहेगा। चांदी, सोना, रुई, जूट, आयरनके भावोंमें अच्छी मंदी आवेगी। ता० १० को बेचो, ता० १६ को लाभ उठाओ। मन्दीका नजराना लगाने पर अच्छा लाभ होनेकी आशा है। गल्ला तिलहन, गुड़, शक्कर, मटर, गुवारके भावोंमें भी मन्दीकी सूचना है। गल्ला बाजारमें विशेष तेजीकी चमक आ रही है, गेहूं, जौ, चना, मसूर, अलसी, सरसों, मटर, गुवारके भावोंमें ता० १२ से अच्छी तेजी चलेगी। गल्लेके व्यापारियोंको खरीदनेकी राय है।

(११) ता० १७ से २४ सितम्बर तक—

इस सप्ताहमें चांदी, सोना, रुई, अरंडा, मूंगफलीके भावोंमें तूफानी मंदी चलनेकी आगाही है। ता० १७ को २॥ बजे बेचो ता० २४ को लाभ उठाओ। गल्ला, गेहूं, चना, सरसों, अलसी, अरंडाके भावोंमें ता० १८ से तेजी चलेगी। घटे भाव खरीदो ता० २३ तक लाभ उठाओ। शेयर बाजार टाटा आर्डनरी, इण्डियन आयरनके भावोंमें दोतरफा घट बढ़ रहेगी। ता० १७ को बेचो ता० २३ को डबल खरीदो, ता० २४ के बन्द बाजारों से लाभ उठाओ।

(१२) ता० २५ से ३० सितम्बर तक—

इस सप्ताहमें दोतरफा बाजार चलेंगे नीचेमें खरीदो, ऊंचमें बेचो।

(१३) ता० १ से ८ अक्तूबर तक—

इस सप्ताहमें इकतरफा तेजी आ धमकेगी। चांदी, सोना, रुई, अलसी, अरंडा, सरसोंके भावोंमें विदेशोंकी मांगके

चार मासका व्यापार-विमर्श

[ले०—श्री पं० कृष्णदत्त शर्मा ज्योतिषरत्न]

ता० २५ जूनको १३।५१ स्टेंडर्ड टाईम पर बुधोदय पूर्वमें वक्र चालसे मृगशिर नक्षत्रमें मिश्र गतिसे तथा आषाढ़ शुक्ल पक्षमें उदय हो रहा है। जिसका फल आचार्योंने यह लिखा है कि सोना चांदी आदि धातु बेचकर अन्न संग्रह बुद्धिमानोंको करना चाहिए। यथाः—

आषाढ़ मासे यदि शुक्लपक्षे
सोमस्य पुत्रो ह्युदयं करोति।
धात्वादि सर्वं तु विक्रीतमेव
धान्यं तु संग्राह्य सुधिया तदा वै॥

आषाढ़ शुदी चतुर्दशीको सोमवार परन्तु चतुर्दशी थोड़ी बढ़ी है अतः अनाजकी अधिक कमी तथा पशुओंको चारेकी तकलीफ हो।

आषाढ़ शुदी पूर्णिमा १५ घड़ीसे भी कम है अतः वर्षाकी कमीसे अनाज मंहगे और दुर्भिक्ष।

आषाढ़ शुदी पूर्णिमाको प्रथम मूल नक्षत्र फिर पूर्वाषाढ़ है। अतः प्रथम दुर्भिक्ष फिर सुभिक्ष हो—

आषाढ़ी पूर्णिमायां च तन्नक्षत्रं विचारयेत्।
पूर्वाषाढ़े सुभिक्षं स्यान्मूले दुर्भिक्षमुच्यते॥

मंगलके पीछे सूर्यदेव १७ अगस्त तक चलते रहेंगे। जिसके कारण वर्षाकी कमी रहे।

भौमस्य पृष्ठतो भानुः यातश्च जलशोषकः।
भवत्यत्र न संदेहो विपरीतो जलप्रदः॥

ता० ३० जूनसे १६ अगस्त तक मंगल गुरु एक राशि में रहते हैं जो कई प्रान्तोंमें वर्षा को रोकते हैं। यथा—

एकराशिगतावेतौ धरापुत्रांगिरासुतौ।
तदा मेघाः न वर्षन्ति वर्षाकाले न संशयः॥

ता० १६ जुलाईको सायं १७।५६ पर धनु लग्न शनि वासरे रोहिणी नक्षत्रे तैतिल करणे कर्क संक्रान्ति प्रवेशः, मु० ४५ भक्ष अपूप (मालपूवेका) है। अतः सर्वप्रकारके रसों (घृत, गुड़, तैल, तिलहन) आदि की और सोने तांबे की तेजी करता है। यथाः—

अपूपं भक्षणं कुर्यात् रसाः सर्वे महर्घता।
हेमताम्रं महर्घन्ति लोके व्यापारको भवेत्॥

श्रावणकी संक्रान्ति शनिवारी होनेके कारण धान्यादि का भाव तेज, किन्तु सोना चांदी तांबादि धातुमें जो तेजी का रंग हो वह उतर कर मंदीमें परिवर्तित हो जावे, अतः इस समय पहिलेका खरीदा हुआ अच्छी तेजी आने पर अन्न बेच देना चाहिए, उस अन्नको बेचकर मंदे भावोंकी धातुकी खरीद कर लेनी चाहिए, ऐसा कर उसे आगे पीछे बेचने वाले अवश्य लाभ प्राप्त करेंगे। विशेष विवरण प्राप्त करने

कारण अच्छी तेजीकी संभावना है। ता० १ को खरीदो। ता० ६ तक लाभ उठाओ, चांदीमें २) ३) रुईमें १०) १५) सोनेमें १॥) २) की तेजी आ जायगी, गल्ला, शेयर, धान, चावल, गुड़, शक्कर, मटर, गुवार पर भी हमारा ध्यान तेजीका है।

(१४) ता० ९ से १५ अक्टूबर तक—

इस सप्ताहमें सिर्फ चांदी, सोना, रुईके भावोंमें तेजी चलेगी, ता० ९ को खरीद कर ता० १५ तक लाभ उठावें। गल्ला, शेयर, रसादि वस्तुके भावोंमें समानता रहेगी, उतार चढ़ावके साथ २ कुछ झलक मन्दीकी रहेगी। शेयर बाजारों में दोतरफा घटाबढ़ी चलेगी। ता० १० को खरीदो, ता० १३ को डबल बेचो, ता० १५ तक लाभ हो जायगा। गुड़, शक्कर, अलसी, सरसों, तोरियाके भावोंमें मंदीकी धारणा है।

स्पेशल चांस

जुलाईमें १७ जुलाईसे अच्छी मन्दी। अगस्तमें ता० ८ से १५ और १५ से ३१ तक अच्छी तेजी। सितम्बरमें ता० ९ से १६ और १७ से २४ तक अच्छी मंदी। अक्टूबरमें ता० १ से ८ तक अच्छी तेजी चलेगी, यहां गलीयां लगाकर व्यापार करनेसे लाभ रहेगा।

—०—

के लिए पत्र व्यवहार करके समय व फीस पूछ लेना चाहिए। शास्त्र प्रमाण देखिए—

आषाढ़े कर्कसंक्रान्तौ शनिवारो भवेद्यदि।
तदा दुर्भिक्षमादेश्यं धान्यस्यापि महर्घता॥

श्रावण शुक्लका चन्द्रोदय कर्कराशिमें हो रहा है, जिसके कारण अतिवृष्टि तथा कई प्रान्तोंमें अवर्षण के कारण दुर्भिक्ष काल जैसी स्थिति उत्पन्न हो जावे।

चन्द्रोदय चन्द्रक्षेत्रे यदा चैव प्रजायते।
पण्मासं स्याच्च दुर्भिक्षमतिवृष्टिश्च जायते॥

ता० २७ जौलाईसे १७ अगस्त तक सूर्य बृहस्पति शुक्र एक राशि गत है, यह राज्य भ्रंश, प्रजा नाश हर प्रकारके अनाजोंका भाव तेज करते हैं। यथा—

रविशुक्रसुराचार्याः यदैकत्र समाश्रिताः।
राज्यभ्रंशो प्रजानाशः सर्वसस्य महर्घता॥

ता० १७ जुलाईसे १६ अगस्त तक सूर्य-मंगल-गुरु-शुक्र एक स्थान पर विराजते हैं, जो भय और व्याधिकारक तथा सर्वधान्य महंगे व वर्षाकी कमीके कारण खेतियां सूख जायें और केशर लाल रंगादि महंगे होवें। यथा—

कुजार्कजीवशुक्राश्च यदैकत्र समाश्रिताः।
भयं व्याधि प्रकुर्वन्ति सर्वधान्य महर्घता॥

ता० २७ जौलाईसे १६ अगस्त तक फिर २० अगस्त से १३ सितम्बर तक सूर्य मंगल-शुक्र एक राशिमें चलते हैं, अतः यह घृत, तैल, मसूरान्नको तेजी कारक हैं। यथा—

रविभार्गवभौमाश्च राशिमेकं समाश्रिताः।
घृततैलमसूरान्न महर्घत्वं महद्भयम्॥

२७ जुलाईसे २० अगस्त तक गुरु-शुक्र एक राशिमें रहेंगे जो दुर्भिक्ष व दुःखकारक है। यथाः—

"गुरुशुक्रावेकराशिगतौ दुर्भिक्ष दुःख दौ।"

२८ जौलाईसे ५ अगस्त तक आगे सूर्य पीछे शुक्र मध्यमें बुध है जो तेजी कारक हैं:—

अग्रे याति दिवानाथः पृष्ठे च भृगुनन्दनः।
मध्ये सोमसुतो याति भवत्यत्र महर्घता॥

ता० ६ अगस्तसे ११ अगस्त तक मंगल-गुरु-शुक्र एक नक्षत्रमें रहते हैं। यह सुभिक्ष कारक हैं। यवान्नके संग्रहकी आगाही कर रहे हैं, जो चतुर्थमासमें लाभकारक होवे, चतुर्थ-मास ६ दिसम्बरसे १६ दिसम्बर तक आवेगा। यथा—

महिसुतो दैत्यपुरोहितो गुरुः
यदैक नक्षत्र समाश्रितो गृहम्।
तदा सुभिक्षं च यवान्न संग्रहे
मासे चतुर्थे विपुलं च लाभम्॥

ता० ६ अगस्त सायंसे ११ अगस्त प्रातः तक मंगल बुध-शुक्र अश्लेषा नक्षत्रमें हैं जो सुभिक्ष व सुख कारक हैं।

बुध-शुक्र-महीपुत्राः भौजंगर्क्षे समाश्रिताः।
नन्दन्ति लोकाः सुखिनः सुभिक्षं जनयंति च॥

ता० २८ जौलाईसे १२ अगस्त तक शुक्रके आगे मंगल-बुध-गुरु-शनैश्चर चलेंगे अतः मनुष्य नाग, विद्याधरों में परस्पर वाद-विवाद चलें और पर्वत शिखरादि जो ऊंचे हैं उनको गिरा देने वाली प्रचंड वायु चले, मित्र भी मित्र-पक्षमें स्थित न रहें, ब्राह्मण ब्रह्मकर्ममें तत्पर न रहें, थोड़ी सी भी वर्षा न हो और बिजलीके गिरनेसे पर्वतोंके शिखर टूटें।

गुरुदेवका दैत्य गुरुसे आगे होना सम्पूर्ण श्वेत वस्तु, ब्राह्मण, गौ, देवताओंके स्थान और पूर्वदिशामें रहने वाले नाशको प्राप्त होते हैं, ओले गिरते हैं, कंठ रोग होते हैं तथा शरद् ऋतुकी खेती श्रेष्ठ होती है।

ता० १० अगस्तको मध्यान्होत्तर, अश्लेषा, नक्षत्र, राक्षसगण, उत्तर वीथीमें शुक्र अस्त हो रहा है। जिसका फल अधिकतर तेजी कारक ही है, परन्तु थोड़े दिनों बाद मंदी कारक सिद्ध होगा।

केतकी गणितागत ता० १६ अगस्तको अर्ध रात्रोत्तर २।३४ पर सिंह संक्रान्तिका प्रवेश है जो अश्लेषा नक्षत्र शकुनि करणमें प्रवेश हो रही है, मु० १५ तथा गुड़का भक्ष है। प्रथम संक्रान्तिके नक्षत्रसे षष्ठ नक्षत्रमें लगनेके कारण दुर्भिक्ष कारक है। यथा —

पूर्व संक्रान्ति नक्षत्रात्पर संक्रमणं यदि।
षष्ठे लोका भ्रमन्त्याशु गृहीत्वा खर्परं करे॥

संक्रातिका भक्ष गुड़ होनेके कारण समस्त रसोंकी तेजी हो, किन्तु सर्व प्रकारका धान्य मंदा होवे तथा ईखकी खेतियों की हानि हो। यथा—

गुड़ भक्षं विजानीयात रसा सर्वे महर्घता।
सर्व धान्य समर्घं स्यात्संक्रांतिश्च फलं भवेत्॥

अभी संक्रान्ति मंगलवारी मध्य रात्रीके उपरान्त लग

रही है अतः गेहूँ, मजीठ आदि लाल वस्तु मात्र और कपड़े का भाव तेज हो जावे। १५ मुहूर्त होनेके कारण प्रथम दशकमें समस्त अनाज रस महंगे, तथा मामूली वर्षा हो।

ता० १७ अगस्तसे २४ अगस्त तक आगे सूर्य पीछे शुक्र मध्यमें मंगल चलता है जो तेजी कारक है। यथा—

अग्रे याति दिवानाथः पृष्ठे च भृगुनन्दनः।
मध्ये भूमिसुतो याति भवत्यत्र महर्घता ॥

सिंह संक्रान्तिके प्रथम दशकमें बुधोदय हो रहा है जो वर्षाकारक व आनन्द मंगल कारक है। यथा—

सिंहा हूति दशदिना जो ऊगे बुधराय।
पी होवो रंग धावणा घर घर पाणी थाय ॥

ता० १६ सितम्बरको शुद्ध केतकी मानसे कन्या संक्रान्ति का प्रवेश रात्रौ २।४३ पर कर्क लग्नमें हो रहा है, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र है जिसके कारण ४५ मु० वायु मण्डल है शर्करा भक्ष है। श्रेष्ठ वर्षा हो, सुभिक्ष हो, खेती श्रेष्ठ हो तैल और रसादिक कुसुम्भ और कपास आदिमें मंदी चले।

यदि शर्करा भक्ष हो, तो बहुवृष्टिके कारण या किसी और कारण वश ईखकी खेतियोंका नाश, जिसके कारण भविष्य में गुड़ खांड आदिकी उत्पत्ति थोड़ी, जिससे भाव भी तेज और उत्तरके देशोंमें राज्य भय तथा विघ्न होवें।

ता० १७-१८ सितम्बरको सूर्य चन्द्र-शुक्रका योग हो रहा है, यह योग सं० २० ८ विक्रमीसे स्वानुभवमें आ रहा है, इस योगके बननेसे छठे मासमें व्यापारिक वस्तुओंकी खरीद सप्तम मासमें पुष्कल लाभकारक होती है। षष्ठ मास १७-१८ फरवरीसे १७-१८ मार्च १९५६ तक है इसके उपरान्त सप्तम मास आवेगा जो लाभकारक होगा। यथाः—

दिननाथेन्दुकवयो यदैकत्र समाश्रिताः।
उत्तरस्थो दिशिभयं प्रजाक्रन्दन्ति नित्यशः ॥
यवान्न मुद्गवस्त्राणां संग्रहे च कृते सति।
मासे सप्तमके चैत्र लाभो भवति पुष्कलः ॥

ता० १ अक्टूबरको १३।४ पर मघा और सिंहमें गुरु प्रवेश, जिसका फल, सुभिक्ष, सुवृष्टि प्रजाजनोंमें निरोगता हो, वस्तु मात्रमें मंदी, फसलकी उपज श्रेष्ठ हो।

नवम्बर मासमें सर्व प्रकारके अनाज विशेषतया, चने, मसूर, कपूर, कपास, गुड़, कस्तूरी, मिरचां, शाल आदिका संग्रह कर दिसम्बरमें बेचनेसे श्रेष्ठ लाभ हो: सर्व प्रकारके अनाज संसारमें मन्दे हों, किन्तु खुरासान देशमें किसी कारण वश तेज होवें यह सिंह राशिमें गुरुदेवके आनेका फल है। यथा भड्डली वाक्य :—

सर्वधान इकट्ठे दुई मास। चने मसूर कपूर कपास ॥
गुड़ कस्तूरी, मरचां शाल। तीजे ही मास लाभ विशाल ॥
सिंह राशि महि जे सुरगुरु आई। एते काज करो गोसांई ॥

आश्विन बदी प्रतिपदाको शनिवार है अतः धान्य इकट्ठा किया हुआ आगे बेच देना श्रेष्ठ होगा, क्योंकि फिर आगे मन्दी होगी। आश्विन मासकी वदी-शुदीमें तृतीया मंगलवारी है अतः अग्निभय और अनाज महंगे होंगे।

ता० ६ अक्टूबरको मंगल उदय हो रहा है, यह मंगल का उदय वक्रके उपरान्त हो रहा है, जो मधुरादि रस भक्षणसे लोगोंका नाश तथा रोग व वृष्टि-कारक है।

ता० ६ अक्टूबर से ३० अक्टूबर तक शुक्रके आगे अकेला शनैश्चर रहता है जिसके कारण बिडाल, हाथी, गधे, भैंस और सूकरादि पशु, म्लेच्छ, पुलिन्द तथा शूद्र जातीय मनुष्य व दक्षिण दिशाके निवासी जनोंको अनेक प्रकारके कष्ट होवें। विशेषतया-नेत्ररोग व वात रोगका प्रकोप होवे और काले रंगके समस्त अनाजोंमें तेजी आवे।

ता० ६ अक्टूबरसे २४ नवम्बर तक आगे शुक्र-शनि होंगे उनके पीछे बुध चलेगा जिसके कारण पृथ्वी धन-धान्य से व्याप्त हो, प्रजा आनन्द मङ्गलसे रहे, हर प्रकारके अनाजके भावोंमें मन्दीका वेग आवे।

ता० १७ अक्टूबर सोमवार समय १४।५० पर कुम्भ लग्न शून्यांश स्वाति नक्षत्र और कौलव करणमें तुला संक्रान्ति प्रवेश, मु० १५। वायु मण्डल भिष्टान्न भक्षी। रज्जी हुई संक्रान्ति लग रही है, इसी दिन सायंको आश्विन मासका नव चन्द्रोदय हो रहा है, यह भी स्वाति नक्षत्रमें ही हो रहा है, स्वाति नक्षत्रको शुक्रका वाम वेध है। यदि संक्रान्तिका भिष्टान्न भक्ष होता है तो सर्व प्रकारसे प्रजामें संतोष, महोत्सव हों, राज्याधिकारी वर्ग में संतोषकी भावना उत्पन्न हो, अनाज हर प्रकार मंदे हो।

स्वाति नक्षत्राधिकारकी वस्तुयें प्रायः इस मासमें विशेष मन्दापन लेंगी वह यह हैं। हर प्रकारके किरयाणाकी वस्तुयें सरसों, राई, तैल, हींग, सोना, चांदी, वात प्रधान अन्न, उड़द, मूंग, मटर, अरहर आदिकी मंदी होवे।

किसी भी मासके स्पष्ट जाननेके लिए जबाबी पत्र द्वारा प्रथम फीसका निश्चय कर लेना अत्यावश्यक है।

जुलाईसे अक्टूबर तकका व्यापार भविष्य

[ले०—श्री पं० हेमन्तकुमार शर्मा साहित्यालंकार]

आज १४ जूनको यह लेख लिखते समय जैतो मंडीमें वायदा बाजारोंके भाव इस प्रकार हैं—चना भादों ६।) गुड़ फाल्गुन ६॥) गुवार माघ ५।) सरसों भादों १६=) ।

१५ जूनसे १८ जून तक मिथुन राशि पर सूर्य तथा वक्री बुधकी युतिसे प्रत्येक वस्तुमें अच्छी तेजी आनेकी संभावना है। २० जूनसे ३० जून तक मंदेके योग हैं। यदि सोमवार २० जूनको ग्रहणके समय वर्षा हो जाये तो इन १०-११ दिनोंमें ही बहुत भारी मंदा आ सकता है। कदाचित् चना, गुवार, मटर, में १) मन, गुड़में १॥) तथा सरसोंमें २।) मन मंदा आ सकता है। यदि ग्रहणके समय वर्षा न आई तो ३० जून तक साधारण मंदा या भाव टिके रह सकते हैं, एवं एक जुलाईसे अच्छी तेजी आवेगी, यह तेजी एक सप्ताह तक रहेगी। ७ जुलाईको मंगल तथा वरुणकी अंशात्मक युति है, इन दिनोंमें भाव समानरूपसे टिके रहेंगे। २५ जुलाईके पश्चात् फिर भारी मंदीकी लहर चालू हो जायेगी, एवं यह लहर ५ अगस्त तक चालू रहेगी। यदि ५ अगस्तसे तेजी चालू हो गई तो अगस्त मासमें तेजी ही चलती रहेगी। यदि ५ अगस्तसे तेजी चालू न हुई तो २४ अगस्तसे शुक्र मंगलकी युति होनेके कारण अवश्य तेजी आवेगी एवं यह तेजी १४ सितम्बर तक चालू रहेगी। इसके बाद पुनः साधारण लाइन मंदेकी चल पड़ेगी। जो दशहरा तक रहेगी। २१ अक्टूबरके बाद तेजीकी लम्बी लाईन चालू हो जायगी, कारण दशहराके दिन बृहस्पति तथा प्लुटोकी अंशात्मक युति होगी, इसके बाद बृहस्पति आगे और प्लुटो पीछे रहेंगे जो कि तेजी कारक हैं, यह तेजीकी लाईन कब तक रहेगी यह अगले अंकमें देखें। विशेष जानकारीके लिये पत्र व्यवहार करें।

दैनिक मंदा तेजीके दिन इस भांति हैः—

२६ जूनको चन्द्रमा तथा बृहस्पतिका केन्द्र योग होनेसे बाजार मंदे रहेंगे।

३० जूनको प्रातः ही बुध शुक्रकी अंशात्माक युतिसे बाजार मंदे खुलेंगे, पुनः मंगल महाराज कर्कराशिमें प्रवेश करेंगे जिससे समस्त बाजारोंमें तेजी आ जायेगी, एवं यह तेजी एक सप्ताह तक रहेगी।

८ जुलाईको सूर्य तथा प्लुटो एक ही नवांशमें, चन्द्रमा बुधका त्रिकोण योग एवं इन्द्रके मार्गी होनेसे एक सप्ताह तक मंदीकी सम्भावना है। ता० ६ जुलाईको चन्द्रमा शुक्रका त्रिकोण योग होनेसे बुध शनि एक ही नवांशमें होनेसे रुई, चांदीमें मंदा अवश्य आयेगा।

१०-११ जुलाईको सभी बाजार मंदे रहेंगे।

१३ जुलाईको चन्द्रमा प्लुटोके त्रिकोण योगसे कुछ तेजी।

१४ को चन्द्रमा, बृहस्पतिके केन्द्र योगसे एवं चं० शनिकी प्रति युतिसे सभी पदार्थोंमें मंदा आयेगा।

१८ को शनि मार्गी होनेसे सभी पदार्थोंमें मंदा।

२० जुलाईको चन्द्रमा मंगलकी अंशात्मक युतिसे गुड़, गुवार, सरसों, मटर, चांदीमें अवश्य तेजी आवेगी।

२१ को चन्द्रमा प्लुटोकी युतिसे बाजारोंमें तेजी।

२५ को मं० गु० की युतिसे बाजार कुछ मंदे रहेंगे।

२७ जुलाईको बुध कर्क राशिमें आवेंगे एवं चन्द्र शनिकी युतिसे बाजार मंदेकी ओर चले जायेंगे।

२८ जुलाईको बुध शुक्रकी युतिसे अच्छा मंदा आयेगा।

२६ जुलाईको बाजार मंदेकी ओर चले जायेंगे।

३० जुलाईको चन्द्र हर्षलकी अंशात्मक युतिसे मंदी।

३१ जुलाईको चन्द्रमा राहु युतिसे वरुण एवं शुक्रकी अंशात्मक युतिसे सभी पदार्थोंमें अच्छा मंदा आयेगा।

२ अगस्तको बुध इन्द्र एक ही नवांशमें तथा चन्द्रमा इन्द्रका केन्द्र योग होनेसे कुछ तेजीकी संभावना है।

४ अगस्त सू० गु० की युतिसे सभी पदार्थोंमें मंदा आयेगा।

५ अगस्त बुध बृहस्पतिकी युतिसे निश्चय मंदा।

७ अगस्त बुध मंगलकी युतिसे बाजार कुछ नरम।

११ अगस्त शुक्र बृहस्पति युतिसे निश्चय मंदा

१२ अगस्त बुध प्लुटोकी अंशात्मक युतिसे कुछ तेजी।

१६ अगस्त चन्द्रमा तथा वरुणकी युतिसे कुछ मंदा।

१७ अगस्तको सूर्य मंगलकी युतिसे बाजार पड़े रहेंगे।

१८ अगस्त राहु वृश्चिक राशिमें प्रवेश करेगा कुछ तेजीकी संभावना है।

२० अगस्त सूर्य प्लूटोकी युतिसे दोपहर बाद मंदा।

२२ अगस्त चं. इ. ने. युतिसे शामको बाजार अचानक तेज होंगे।

२३ अगस्त शुक्र चं० श० युतिसे बाजार कुछ तेज।

२४ अगस्त शुक्र मंगल युतिसे बाजार तेज रहेंगे।

२७ अगस्त चं. रा. युतिसे समस्त बाजारोंमें तेजी।

३० अगस्त शुक्र शनि एक ही नवांशमें अवश्य मंदा।

३१ अगस्त चन्द्रमा शनिके केन्द्र योगसे चन्द्रमा वृहस्पतिकी प्रति युतिसे बाजार मंदेमें रहेंगे।

६ सितम्बरको बुध प्लूटो एक ही नवांशमें होनेसे तेजी।

८ सितम्बर शुक्र इन्द्र एक ही नवांशमें बाजार तेज।

१० सितम्बरको सू० ने० नवांशमें युतिसे कुछ मंदा।

१२ सितम्बरको चं. हर्षल युतिसे मंदा आयेगा।

१३ चं. वृहस्पतिकी युतिसे करारी तेजी अवश्य।

१४ चन्द्रमा प्लूटो युतिसे तेजी अवश्य आयेगी।

१६ सितम्बरको बाजार पड़े रहेंगे।

१८ चं. बु. युतिसे बाजार मन्दे रहेंगे।

२० चं. शनि युतिसे बाजार मंदे ही रहेंगे।

२३ चन्द्रमा युतिसे कुछ तेजी।

२६ सितम्बरको तेजी।

२७ से ३० सितम्बर तक मंदा।

२ अक्टूबरको मंगल कन्या राशिमें प्रवेश करेगा तथा बुध बक्री होगा जिससे बाजार तेजीकी ओर बढ़ते चले जायेंगे।

६ अक्टूबरको बुध महाराज अस्त होंगे कुछ मंदा बाद में बुध इन्द्रकी युतिसे कुछ तेजी।

१० को पहले मंदा बादमें अचानक तेजी।

१२ अक्टूबरको बाजार तेज रहेंगे।

१३ सूर्य—बुध युतिसे कुछ मन्दी आयेगी।

१६ चन्द्रमा इन्द्रकी युतिसे तेजी।

१७-१८ को बाजार मंदे ही रहेंगे।

२० को चं० राहु युतिसे अचानक तेजी।

२२ अक्टूबरको बाजार पड़े रहेंगे।

२६ अक्टूबर गुरु तथा प्लूटोकी युतिसे बाजार एक दम तेजीकी ओर जायेंगे।

३०-३१ अक्टूबरको कुछ मंदा रह सकता है, आगे जनरल लाईन तेजीकी चलेगी।

चार मासका व्यापार-रुख

[लेखक—ज्योतिषाचार्य रमलाचार्य श्रीगणेश विद्यासागर दैवज्ञ]

जौलाईका दैनिक व्यापार रुख

ता० १ को शुक्र—मंगल प्रातः ४।१ पर अग्नि-जल तत्वमें प्रवेश किया, अतः गुड़ खांडमें ॥।) १) तेजी होगी। गेहूँ, अलसी, तिल, तैल, सरसों, मूंगफली, तांबा, मिर्च, बारदानामें तेजी चलेगी। १५ अंश तक तेज फिर १५ अंश तक मन्दे कर देता है। चांदी, रुई, में मन्दी, फिर भी नजराने लगा कर खुले छोड़ दो। मंगल राहुका बेध ता० ५ को रात तक रहेगा, चांदी, रुई, शेयर, मन्दे हो जायेंगे।

ता० २ शनिवारको मिथुनमें शुक्र—रुई मन्दी, चांदी घटा बढ़ीसे मन्दी, बारदानामें अच्छी मन्दी होगी, कपड़ा सूत, कपासके व्यापारियों! माल मत भरो मन्दी चलेगी। गेहूँ चना, धणाका भाव सामान्य तेज रहेंगे। यह मन्दी ता० ५ तक अपना प्रभाव रखेगी रात तक नफा ले लो।

ता० ६ बुधवारको—सूर्य पुनर्वसुमें होनेसे अच्छी तेजी समस्त बाजारोंमें चलेगी।

ता० ७ गुरुवारको—नैपच्यून मार्गी होगा, और हर्षल मंगलकी युति कर्क राशिमें गुरुकी देख रेखसे हो रही

हैं यह महान् क्रान्तिका दिन है। नजराने लगाकर व्यापार करो, दुतर्फा अवश्य निकलेंगे। ता० ७ को यदि बाजार मन्दीमें आ गये तो भारी मन्दी चल पड़ेगी बहुत सी मंडिया बन्द हो जायेंगी। यदि तेजी चल पड़े तो तेजी चांदीमें ५) ७) की इसी प्रकार मन्दी चल पड़े तो चांदी में मन्दी १५) २०) की आ जाये, इसी अनुमानसे आंकड़े अन्य वस्तुओंके समझो।

ता० ६ शनिवारको—आर्द्रापर शुक्र प्रवेश होनेसे अच्छी वर्षा होगी, धान्य गुड़ादिमें मन्दी चालू हो जायेगी। इसका प्रभाव ता० १० तक रहेगा।

ता० ११ सोमवारको—प्रातः मंगल नवमांशमें कन्या का आया है यह चांदी, सुवर्ण, रुई, शेयर, गुड़, मटर, आइरन, बारदाना तेज कर देगा। ता० १३ को मध्याह्न १२ बजे तक तेजी खेलो।

१३ बुधवार—आज शुक्र उत्तर शर प्रवेश करेगा इस का प्रभाव ६ दिन बराबर रहेगा। यदि मन्दी चले तो ता० २० तक सर्व वस्तुओंमें भारी मन्दी कर देगा। यदि तेजी चले तो ता० १६ को सायंकाल ६ बजे तक ही तेजी करेगा फिर मन्दी कर देगा। इस मासमें मन्दीके योग अधिक तथा तेजीके योग कम दिखाई देते हैं।

ता० १६ शनिवारको—सूर्य कर्कराशिमें सर्व वस्तु मन्दी करता है। आज सूर्य राहुका बाण वेध सायं ६।३२ से चालू हो गया और ता० २० को प्रातः ६।१६ तक रहेगा, यह दोनों योग अच्छी मन्दी करने वाले हैं।

१६ मंगलवार—आज शनि मार्गी होगा, रुई, धान्य में मन्दी तथा अलसी, सरसों, तेल, सूंठ, पीतल, चांदी, सुवर्ण, शेयर आइरन, ऊनमें तेजी करता है।

२० बुधवारको—शुक्र शनि त्रिकोण तेजी करता है, हर वस्तु घटे भाव खरीदो और हाथों हाथ नफा ले लो।

२३ शनिवार—बुध शनि त्रिकोण मध्याह्न १२।२५ पीछे चांदी, गुवार, मटर गुड़ बारदाना शेयर रुई चमड़ा आदि वस्तुओंमें मन्दी चल पड़ेगी भाव फिर घट जायेंगे।

२५ सोमवार—आज बुध उत्तर शर प्रवेश करके पूर्व दिशामें लोप होगा, राशि परिवर्तन करेगा यह व्यापारियों में भारी उथल पुथल मचा देगा। अच्छी तेजी मन्दी बननेका समय आया है, नजराने दुतर्फा फाटक गली लगाकर तमाशा देखो। समस्त सट्टे मार्केटोंमें तहलका मच जायेगा। ज्योतिष गणनासे फलितशास्त्र द्वारा यह योग भी मन्दीका ही दिखाई देता हैं, फिर भी होशियार अधिक लोभ नहीं करते।

२७ बुधवार—शुक्र राहुका बाण वेध प्रातः ४।३६ से ता० २६ को रात्रि ६।४३ तक तथा बुध राहु बाण वेध मध्याह्न ३।३७ से ता० २६ को प्रातः ६।५० तक यह दोनों योग भारी मन्दीके हैं, यदि भाग्य साथ दे जाये तो दुतर्फा लगादो लाभ अवश्य होगा।

२६ शुक्रवार—नैपच्यून तथा शुक्रका चरण वेध रात्रि १०।१५ से ता० २ अगस्त सायं ४।८ तक यह योग भी बाजारोंको मन्दीकी तरफ ही झुकाये रखेगा।

अगस्तका दैनिक व्यापार रुख

ता० ३ बुधवारको—मंगल हर्शल केन्द्र, ता० ४ को सूर्य गुरु युति होगी यहां मार्केटोंमें साधारण तेजी बन जायेगी। ता० ४ को बंद बाजार तक तेजीसे निकल जाओ चांदी १।) १॥) इसी अनुमान अन्य वस्तु समझो।

ता० ५ शुक्रवार—आज बुध गुरुकी युति प्रातः ८ बजे होगी यह चांदी २) २॥) रुई ८) १०), शेयर सुवर्ण गुड़, गुवार, मटर, तेल ॥) ॥।) बारदाना १) १।) के करीब मन्दा कर देता है आंकड़ोंका इन्तजार नहीं करना। सूर्य मंगल समक्रान्ति भी बनेगी बाजार धोखेका है।

ता० ६ शनिवार—सूर्य बुधकी युति प्रातःसे चालू यह सब मार्केटोंमें साधारण तेजी ही कर देती है। तेजी खेलने वालोंको इस मासमें अच्छा लाभ होगा।

ता० ८ सोमवार—बुध मंगल युति मध्याह्न १।७ पर हर मन्दीमें खरीदो धातु धान्य रसादि सबमें तेजी आयेगी।

ता० ६ मंगलवारको शुक्र आश्लेषामें सायं ५।३० पर आयेगा, ता० ३ से सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र यह चारों ग्रह एक ही नक्षत्र पर चल रहे हैं और ता० १६ को रात्रिके ११ बजे तक रहेंगे। इन चौदह दिनोंमें बाजार एक लाइन पकड़ेगा। ता० ६ को बाजार रुख देखना, हमारा ध्यान तो इस योगमें तेजीका है। ता० ६ को बुध प्लुटो वेध मध्याह्न १।३१ पर होगा और ता० ११ को प्रातः ५।५१ तक रहेगा इसमें भी तेजीका ही योग है।

ता० ११ गुरुवारको प्लूटो मंगल सायं ६।७ से ता० १६ को रात्रि ११।४६ तक क्रूर ग्रहोंकी भिडन्त तोफान मचा देगी। तारुणी वालोंको अच्छा लाभ होगा। आज ही सायं ६।७ पर मंगल बुधका चरण वेध चालु होगा, ता० १२ की रात तक रहेगा, अच्छी तेजी फाटके फल जायेंगे। मन्दीके झटके अवश्य लगेंगे, ता० ११ को ध्यान में रखना।

ता० १३ शनिवारको—सूर्य बुध चरण वेध प्रातःसे सायं ३।३८ तक तेजी खेलो, सब बाजार भड़क उठेंगे। फिर सूर्य प्लूटोका बेध सायं ३।३८ से चालु होकर ता० १७ को प्रातः ४।५२ तक रहेगा, बाजारोंमें चमत्कार दिखाई देगा, दलालोंकी दौड़ धूप अधिक होगी होशियार व्यापारी कमायेगा, क्या होगा यह जानना है तो ॥) के टिकिट तथा 'श्रीस्वाध्याय' का ग्राहक नम्बर भेज कर एक बार नमूना मँगवा लो।

१४ रवि—बुध गुरु बेध सायं ५।४ से ता० १६ को मध्यान्ह १२।३ तक चांदी, गुवार, मटर, मूंगफली गुड़ चने, हलदी, सुवर्ण शेयर चपड़ा एरंडा बारदाना सबमें मंदी कर देता है, भाव घटेंगे।

१७ बुधवारको—मंगल शुक्रका बेध रातको ८।२ से ता० २० को मध्यान्ह १२।४३ तक यह सर्व बाजारोंमें तेजी करता है, कितनी तेजी किस वस्तुमें आयेगी यह जवाबी पत्र डालकर पूछ सकते हो। आज सूर्य मंगल दोनों सिंहपर सवार होंगे, सुवर्ण शेयरमें अच्छी तेजी आयेगी। आज रातको ८।२ पर सूर्य शुक्रका भी बाण वेध चालू हो गया है, यह गुड़ चांदी, रुई, सूत, वस्त्रको तेज बनाते ही चले जायंगे। इसी रातको ८।२ पर शुक्र प्लुटोका युद्ध हुआ, ता० २०को रातको ८।८ तक रहेगा, यह भी समस्त बाजारोंमें तेजी लायेगा। अब सर्व प्रकारके ग्रहयोगों द्वारा ता० १८, १९, २० यह तीनों दिन अच्छी तेजीके हैं।

ता० २१ रविवारको—बुधका उदय पश्चिममें होगा, थोड़ा २ तेजी वालोंका जोस उतारनेकी कोशिश करेगा, ता० २२ को दिन भर बाजार मंदीमें जायेंगे। ता० २२ से २४ को प्रातः तक बुध हर्षलका वेध और राहु हर्षलका बेध होगा इन दोनों योगोंमें तथ्य नहीं दिखाई देता, बगैर तथ्यकी बात हमको पसंद नहीं है।

ता० २४ बुधवार सूर्य गुरुका बेध प्रातः ४ बजेसे ता० २७ को मध्यान्ह ११।५५ तक इस बेधका फल मंदीका होता है, फिर भी नजराने लगा दुतर्फा खेलनेवाला नहीं चूकेगा।

ता० २५ गुरुवारको शुक्र गुरुका बाण बेध रात्रि ६।२५ से ता० २८ को मध्यान्ह २।३२ तक यह योग बाजारमें घटे भाव खरीदनेकी सलाह देता है।

ता० २७ शनिवार—मंगल गुरु वेध मध्याह्न ११।६ से ता० २६ को मध्याह्न १२।२५ तक चांदी, सुवर्ण, गुड़, गुवार, मटर, अलसी, सरसों, शेयर, वस्त्र धान्यादि तेज।

ता० २६ चन्द्रवार—प्लूटो गुरुका वेध मध्याह्न १२।२५ से ता० १४ सितम्बर मध्यान्ह ११।३ तक रहेगा, ता० २६ का बाजार देख लेना और उसी गाड़ीमें सवार हो जाना।

सितम्बरका दैनिक व्यापार रुख

ता० १ गुरुवार—सूर्य शुक्रकी युति मध्यान्ह १।२१ पर होगी। यह युति बाजारोंमें तेजी करेगी, खासकर सुवर्ण, चांदी, रुई, वस्त्र धान्यादि भाव बढ़ जायेगें।

ता० ५ चन्द्रवार—शुक्र हर्षल वेध सायं ४।२ से ता० ८ को प्रातः ८।२८ तक रहेगा, इस वेधमें आये उछाले मालका बेचाण बोल दो और ता० ७ को रात तक अपना सौदा सुलट लो।

ता० ७ बुधवार—आज तिथि क्षयका दिन है, बाजारमें मंदीका अच्छा झटका होगा। भाव घटते ही चले जायेंगे, योग मंदीका अधिक है।

ता० ६ शुक्रवार—आज शुक्रवारी अष्टमी है, रुई वस्त्र धान्यादि और धातुओंमें साधारण मंदी ही आकर रहेगी।

ता० १२ चन्द्रवार—शुक्र अपनी नीच राशि पर आगया है यह सर्व बाजारोंको मंदीका रास्ता दिखा देगा। जो तेजी खेलेगा पछतायेगा।

ता० १४ बुधवार—बुध चित्रा पर आया प्रातः ७।३७ से बाजर दोनों तरफ अच्छी घटा-बढ़ीसे चलता रहेगा। दोनों तरफके व्यापारियोंको कुछ न कुछ मिलेगा। गरीब व्यापारी नजराने द्वारा व्यापार करें।

ता० १६ शुक्रवार—शुक्र नैपच्यून द्विद्वादश मध्यान्ह

१२।३० यह योग चांदी, रुई, धान्यमें अच्छी मंदी कर दिया करता है।

ता० १७ शनिवार—एकम शनिवारी रुईमें अच्छी तेजी। केवल आज २ ही रहेगी। फिर शुक्ल पक्षमें ३ शनिवार बहुत-सी वस्तु १५ दिन मंदी रखते हैं। आज ही प्रातः ९।५० से ता० २२ को मध्यान्ह ३।३० तक मंगल हर्शलका बेध होगा यह योग चांदीमें ३) ३॥) रुई कालीमिर्चमें १५) २०) बारदाना अलसी, सरसों, मूंगफली, तिलमें १) १॥) गुड़, गुवार, मटर, शेयर सुवर्णमें ॥) १) की तेजी पकड़ लेगा। इसका खास प्रभाव ता० २१ को प्रातः ७ बजे तक रहेगा।

ता० २१ बुधवार—केतु बुध का चरण बाण बेध प्रातः से चालू होकर ता० २५ को प्रातः ६। तक रहेगा, गत कालमें जितनी तेजी आई है उसी अनुमान यहां मंदी आ जायेगी।

ता० २६ चंद्रवार—बुधनैपच्यून युति प्रातः ४।४६ पर चालु, यह युति चांदी सुवर्ण, रुई धान्य रसादि पदार्थोंमें दिन भर मंदी करेगी।

अक्टूबरका दैनिक व्यापार-रुख

ता० १ शनिवार—मघा नक्षत्र और सिंह राशि पर गुरु आयेगा यह मामूली मंदी दिखा कर बाजारोंमें तेजी चला दिया करता है।

ता० २ रविवार—आज शुक्रका उदय पश्चिममें होगा, रुई, सुवर्ण, सूत वस्त्र, चांदी, चावल, तिल, अलसी, सरसों, मूंगफली आदिमें तेजी चलेगी। [हमारे गणितसे शुक्रोदय ता. १६ अक्टूबरको होगा ता. २ को नहीं यह लेखककी भूल है।—सम्पादक]

ता० ३ चन्द्रवार—बुध पूर्वमें अस्त होगा और आज ही मंगल कन्या राशि पर पूर्वमें उदय होगा, सुवर्ण, शेयर साधारण मंदे होकर। तेज रुई, सूत वस्त्र, चांदी, सुवर्ण, गुड़, गुवार, मटर, अलसी, सरसों, मूंगफली बारदानामें तेजी आयेगी भाव बढ़कर रहेंगे।

ता० ७ शुक्रवार— तुला पर शुक्रका प्रवेश होना, बुध केतुका बेध, मध्याह्न ११।१८ से ता० ११ को प्रातः ३।२ तक योगायोग साधारण मंदीके आये हैं। सर्व बाजार ढीले पड़ जायेंगे, आये उछाले बेचने वालोंको लाभ आज ही रातको ७।२८ से ता० १० को मध्याह्न ११।१६ तक शुक्र सेतुके बेधमें होगा। इसका प्रभाव भी मन्दी करने वाला है। ता० ७, ८, ६, को मन्दी खेलने वाला जीत जाये, इस प्रकारका अनुमान लगाया जाता है।

ता० १३ गुरुवार— प्रातः ३।४६ से शुक्र राहुका बेध होगा और ता० १५ को सायं ७।५२ तक रहेगा, ता० १३, १४, १५, इन तीन दिनोंमें भी मंदी खेलने वालों की ही जीत होगी।

ता० १७ सोमवार—चन्द्रमा उत्तर शृङ्गोन्नति १५ मुहूर्त्त से उदय हुआ, हरघटे भाव खरीदो, चाँदी, सुवर्ण, रुई, वस्त्र, सूत, रसादि पदार्थोंमें तेजी आकर रहेगी। आज सूर्य तुला पर मध्याह्न २।४२ से आयेगा, नीच राशि पर आनेसे मंदी करने की कोशिश करता रहेगा। आज ही सायं २।४२ से सूर्यकेतुका बेध होगा और ता० २० को रात्रिके ११।१५ तक रहेगा। आज प्रथम तेजी, २॥ बजे पीछे से मंदी चालू होकर समस्त बाजारोंमें मन्दी ही मंदी दिखाई देने लग जायेगी।

ता० २१ शुक्रवार—आज बुधका उदय पूर्वमें प्रातः हो जायेगा। माल खरीदो बाजारमें तेजी चलनेका समय आ गया है। गेहूँ, जौ, चना, खांड, गुड़, बिनौला, अलसी, सरसों, मूंगफली, तिल, लालमिर्च, चांदी, सुवर्णमें तेजी। रुई मन्दीसे तेज। अनाज छोटा गल्लामें अच्छी मन्दी आयेगी।

ता० २४ चन्द्रवार—स्वाति पर सूर्य प्रातः आयेगा, चांदी सुवर्ण शेयरमें तेजी कर देगा।

ता० २७ गुरुवार—सूर्य राहुका बेध मध्याह्न ३।५० से ता० ३० को रात्रि ११।५५ तक रहेगा यहां चांदी, सुवर्ण, शेयर, तैल पदार्थ, धातु अनाजादि सबमें अच्छी मंदी आ जायेगी भाव घटेंगे। शनिदेव पश्चिम दिशामें ता० ३० को लोप होंगे। यह भी अधिकतर बाजारोंको मंदीकी तरफ ही घसीटेंगे।

सदुपदेश

संसारमें सबसे बड़ा पुरुषार्थ मोक्ष प्राप्त करना है। यदि संसारके करोड़ों काम किये और मोक्ष प्राप्तिका उपाय नहीं किया तो कुछ भी नहीं किया।

अनुभवसिद्ध जनरल-चांस

आषाढ़ी पूर्णिमाका पवन विचार

[ले०—ज्योतिषरत्न श्री पं० राजारामजी जैन सामुद्रिक विशेषज्ञ सम्पादक 'भविष्यदर्पण']

'श्रीस्वाध्याय'के गतांकमें गुरुका १२ वर्षीय प्राचीन रिकार्ड तथा नवग्रह पञ्चांगस्थ और दशवां ग्रह व्यापारी मात्र व ग्यारहवाँ ग्रह राज्य सत्ता—इनका सामञ्जस्य और व्यापारिक वस्तुओं पर इनका ठोस प्रभाव व्यापारियोंके समक्ष रक्खा गया था, चतुर व्यापारी उपरोक्त आधारको हृदयङ्गम करते हुए यदि व्यापारमें हाथ डालेगा तो उसे सम्वत् २०२० तक मूल मन्दीके श्रेष्ठ चांसोंसे कभी न कभी भाग्यका सहयोग पाकर असाधारण लाभ होकर रहेगा, क्योंकि कहा भी है—

कर्मणो हि प्रधानत्वं किं कुर्वन्ति शुभाग्रहाः ।
वशिष्ठ दत्त लग्नोपि रामः किं भ्रमते वनम् ॥

२ जुलाईको कर्के भौमः (भौम गुरु योग) वर्षा ऋतुमें होनेसे वर्षाका नाश होकर खाद्य वस्तुमात्र अन्न तिलहन बीयां गुड़ ग्वार सरसोंका स्टाक करने वाला श्रेष्ठ लाभ पावेगा, किन्तु केतकी ग्रन्थोक्त कर्के भौमः १ जुलाईको १।० रात्रिमें ही हो जावेगा, अस्तु । १ जुलाईको ही स्टाक करना प्रारम्भ कर दें । शीघ्रगामी गुरुसे भौमका समागम रुईमें मन्दीकी बजाय तेजी ही चलावेगा । कपड़ा, बारदाना रेशम भी साथ चलेगा । यहाँसे चांदी सोना भी तेज होने लगेगा । कारण सूर्य शुक्र केतु योग २ जुलाईको मिथुने शुक्र होकर बनेगा । रुई और उसके साथकी वस्तुयें कालीमिर्च चांदी सोना और किरानाकी दैनिक आवश्यक वस्तुओंको तेज करता चला जावेगा । आषाढ़ी पूर्णिमा सोमवारी तो अवश्य है, किन्तु इसने मूल नक्षत्रका भी साथ कर लिया है जो कि आगे वर्षाकालमें वर्षानाशक और कमीका अनुभव कराये बिना न रहेगा । क्योंकि यहां एक और भी खोटा योग बन रहा है, वह यह है कि—"आगे मंगल पीछे भान, बरखा होवे ओस समान ।"

फिर भी आषाढ़ी १५ सूर्यास्तकालमें वायु परीक्षा करके देखें, साथमें बादल आदि भी देखना उचित होगा । कारण यदि कहीं आषाढ़ी पूर्णिमाको निम्नलिखित शुभ योग बन गये तो श्रीदुर्भिक्षानन्दजी और श्रीअवर्षकजीका मुँह काला हो जावेगा । सूर्यास्तकालमें अधजले कंडे (गोबरके उपले) द्वारा छतपर बैठकर प्राचीन ऋषियोंके चमत्कारको प्रत्यक्ष देखें । शुभ वायु बादल होनेपर ग्रहण दोष, सप्तग्रही योग भी कभी बन जाने पर अशुभ फल न होकर शुभ फल ही होगा । अन्यथा विपरीतावस्थामें दुर्भिक्षका जन्म उसी देशमें समझना उचित होगा । नक्षत्र फल सर्वत्र वर्षानाशक ही प्रतीत हो रहा है, जो कि तीन मासमें तेजीका अपूर्व चमत्कार दिखाता चला जावेगा । अतः यदि कहीं भी इस काल में पश्चिम पूर्व उत्तर वा ईशानकी वायु चले तो महासुभिक्षकारी, साथ ही बादल होना भी नितांत ही आवश्यक है । वायव्य अर्थात् उत्तरपश्चिमकोणकी चले तो आगे वहाँ वायु वेग खण्डवृष्टि, चूहों तोतों और टिड्डी द्वारा उपजमें हानि दिखाई देगी । दक्षिण व नैऋत्य अर्थात् दक्षिण पश्चिमकोणकी जहां भी चलेगी वहाँ निश्चित रूपसे वर्षा नाश दुर्भिक्ष तत्काल ही प्रत्यक्ष दिखाई देने लगेगा । नारियल गोलागिरी छुहारा सुपारी तेज होने लगेंगे । और यदि कहीं भी आग्नेय दिशाकी वायु चले तो ऐसी वर्षानाश होगी कि तालाब तक सूखने लगेंगे, कुओंमें भी थोड़ा पानी दिखाई देगा, अग्निकांडोंका भी भयंकर प्रकोप खूब ही होने लगेगा । आमने सामनेकी वायु आगे वर्षानाशक, पश्चिमकी उपज और वर्षाकालके लिये तो श्रेष्ठ है, किन्तु शीत ऋतुमें पाला भी वहां पड़ेगा । चारों ओरकी वायु ऐसी चले कि पूर्वसे प्रारम्भ होकर दक्षिण पश्चिमोत्तरसे पुनः पूर्वको आवे तो महा सुभिक्ष, उत्पत्ति भी बहुत श्रेष्ठ होगी । यदि विपरीत गोला बनावे अर्थात् पूर्वसे प्रारम्भ होकर उत्तर पश्चिम दक्षिण होकर पूर्वको आवे तो वर्षानाश करके उत्पत्तिमें कमी किये बिना न रहेगी । तथा पहले शुभ दिशाकी चलकर उसी समय या रात्रिको अशुभ दिशाकी चलती रहे तो उस क्षेत्र के लिये नेष्ट सिद्ध होगी, विपरीत अर्थात् पहले अशुभ दिशा

की चलकर पश्चात् शुभ दिशाकी चले तो निश्चय श्रेष्ठ ही होगी। इस दिन सूर्यचन्द्रपर कुण्डल होना आगे वर्षानाशक तथा इन दोनोंका बादलोंमें निकलना और अस्त होना तथा आठों प्रहर केवल बादल रहें कि सूर्य चन्द्रमाका दर्शन ही न हो तो आगे अच्छा सुभिक्षकारी सिद्ध होगा। किंतु वर्षा होना आगे वर्षानाशक, साधारण बूंदाबांदी छिड़काव मात्र तक होना श्रेष्ठ है। सूर्यचन्द्रमा निर्मल रहे तो आगे वर्षानाश, चन्द्रमा रात्रिको चारों प्रहर बादलोंमें रहे तो आगे क्रमशः श्रावणादि चारों माससें श्रेष्ठ वर्षा होगी। बादलोंमें खुलता बन्द रहता इस अवस्थामें चन्द्रमा रहे तो शुभ नहीं होता, किन्तु चन्द्रमा निर्मल रहे तो वर्षानाशक ही समझना। उपरोक्त कालमें कहीं नैर्ऋत्य दिशाकी वर्षानाशक वायु तथा कहीं २ ईशानकी श्रेष्ठ वायु चलनेकी आशा है। बादल वर्षा योग प्रतीत नहीं होता। विशेषको तो सर्वज्ञ ईश्वर ही जाने।

श्रावण मासमें पांच बुधवार हैं, बुध बनिया (वैश्य) ग्रह है, अतः इस मासमें खाद्य वस्तु मात्र, ग्वार दाल अन्न गेहूँ सरसों सौंफ धनिया अमचूर बीयां अलसी तथा रुई चांदी सोना बारदाना कालीमिर्चके भावोंमें आकाशी पाताली भाव दिखाये बिना न रहेगा। एतदर्थ आप जिस वस्तुके भी व्यापारी हैं उसका रुख अखबार आदिसे तथा लायन चलती देखकर व्यापार करें। या सर्वश्रेष्ठ बात तो यह है कि एक गली या दोनों ही गली लगाने पर श्रेष्ठतम लाभ पा सकेंगे। इस मासमें व्यापारिक प्रलय होगी, ऐसा समझना उचित होगा, यह ध्रुव सत्य है। श्रावण कृष्ण १ तारीख ६ जुलाई वैधृति योग अन्न तिलहन सरसों अलसी बीयांके स्टाकिस्ट अवसर देखकर मन्दीके झटकोंमें स्टाक करनेमें न चूकें। आज गुड़में अच्छी मन्दी आषाढ़ी पूर्णिमाके शुभ-शकुनोंको कृषि प्रधान क्षेत्रोंमें पाकर आवेगी। ता० ७ जुलाईको श्रीवरूणदेव (नेपच्यून) मार्गी होंगे जो कि चांदी सोना रुई शेयर्सके श्रेष्ठ व्यापारियोंको उत्साहित करके स्टाक करानेकी मनोवृत्ति प्रदान करेंगे। ता० ८ जुलाईको करणग्रन्थोक्त मिथुने बुधः वर्षा ऋतुमें होनेसे (सूर्य बुध शुक्र केतु) तथा अन्य ग्रहोंका सहयोग पाकर खाद्य वस्तु गुड़ सरसों बीयां गेहूँ जौ चना दाल अन्न ग्वारके भावोंमें श्रेष्ठ मन्दा चलने लगे तो कोई आश्चर्य नहीं है। किन्तु ता० ६ जुलाईको शतभिषा नक्षत्रकी वृद्धि टैम्परेरी तेजी उपरोक्त वस्तुओंमें ला सकेगी। बुधवारका मित्र-वार-शुक्रवार है, बुध और शुक्रवारकी तेजी या मन्दीकी लायन समान होगी जबकि शत्रु वार-सोमवार है जो कि लायन बदलता रहेगा। ११ जुलाई सोमवारको उत्तराभाद्रपद नक्षत्रका क्षय होगा जो कि वस्तुओंके दाम गिरानेमें सहायक होगा। १४ जुलाईको दशमीका क्षय भी मन्दीकारक ही होगा। करणग्रन्थोक्त १५ जुलाईको मंगलसे युक्त गुरु-शनि से संदृष्ट होकर अस्त होगा, यहां प्रबल वर्षा कृषि प्रधान क्षेत्रों में दिखाई देगी, अवसर देखकर गुड़ बेचना श्रेष्ठ सिद्ध होगा। १६ जुलाईको शनिदेव मार्गी होंगे जोकि श्रेष्ठ वर्षा और गुड़ शेयर्सको श्रेष्ठतम मन्दीकी ओर ले जावेंगे। १७ जुलाईको कर्क संक्रान्ति (शनिवार) सूर्योदयसे पूर्व थौथे वार छठे नक्षत्र (वायुमण्डलके नक्षत्र) में लगेगा अतः यहां इसने खाद्य वस्तु मात्रके लिये तेजीका तथा धातुमात्रमें मन्दीका अलार्म दे दिया है अतः सचेत। वायुमण्डलका फल—

रजत्सुवर्ण ताम्रादि त्रिपुकांस्यानि पित्तलम्।
वायुधिष्ण्ये तु सन्क्रान्तिर्महर्धमादिशेच्छन्नी॥

श्लोकका अर्थ तो चांदी सोना तांबा सीसा कथीर कांसी पीतल आदिको तेजीके लिये सूचन करता है। परन्तु गत वर्षोंमें यह योग कई बार बना और बनकर अब तकके अनुभवमें उपरोक्त वस्तुओंको मन्दा ही किया है, रुख देख कर समयका सदुपयोग अवश्य करें या नजराना लगावें। यहींसे बुध शुक्र केतु योग बना है जो कि सभी खाद्य वस्तुओंको मन्दा भी कर सकेगा। ता० १६ जुलाईको केतकी ग्रन्थोक्त मार्गी शनि २० जुलाईको केतकीग्रन्थोक्त गुर्वस्त पश्चिममें बाजारकी चलती हुई लाइनको बदल देगा। रुईमें मन्दी, चांदी सोना तेज होने लगेगा, गुड़में तेजीका उफान आवेगा, किन्तु १५ मुहूर्ता चन्द्रोदय वस्तु मात्रके भाव आज एक दम बढ़ावेगा। बुधवारी प्रतिपदा वैश्योंका सम्मान रखनेको उद्यत होगी। २१ जुलाईको करण ग्रन्थोक्त शुक्र देव पूर्व दिशामें लोप होंगे। गुरु और शुक्रके अस्तकालमें भारतीय सौभाग्यवती सन्नारियोंको १५ जुलाईसे २ अक्टूबर पर्यन्त नवीन आभूषण चूड़ी आदि धारण नहीं करना और न पतिके साथ सहयोग करना चाहिये, अन्यथा इस कालमें रहा गर्भ (पुत्र वा पुत्री) दुर्गुणी एवं दुष्ट सन्तान ही प्रदान करेगा। वेश्याओं पर विपत्ति आवेगी, सिक्का नया

बनाया जावेगा और सिक्केमें परिवर्तन भी किया जावेगा। द्वितीय चतुष्क और मेघ द्वारमें अस्त होनेसे वर्षाका जोर बढ़ेगा, किन्तु मारवाड़में दुर्भिक्ष पहाड़ीदेशोंमें रोगोपद्रव हो २५ जुलाईको करणग्रन्थोक्त कर्कसितः (सूर्य मंगल बुध गुरु शुक्र) योग वर्षा ऋतुमें बना है, यथा—

एकराशौ यदा यान्ति चत्वारः पञ्चखेचराः।
प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा॥

अर्थात् पृथ्वी रुधिर या जलसे परिपूरित होगी। यह पंचग्रही चांदी सोना पर चमत्कारी मन्दा तेजी लावे तो कोई आश्चर्य नहीं है। करणग्रन्थोक्त स्थूल मतेन वृश्चिके राहु वृषे केतु अनेकानेक वस्तुओं पर भयानकतम मन्दा लावे तो कोई बड़ी बात न होगी। केतकी ग्रन्थोक्त ७ अगस्त को शुक्रास्त पूर्व चांदी सोना गुड़में श्रेष्ठ मन्दा, रुई काली मिर्चमें तेजी करना प्रारम्भ करेगा। १० अगस्तको करण ग्रन्थोक्त उदय गुरु बादल वर्षाका चमत्कार और गुड़में श्रेष्ठ तेजी होगी। चांदी सोना रुईमें मन्दीकी मोटी लायन चलने लगेगी, कहा भी है कि—

दो आश्विन दो भादवा दो कार्तिक दो माह।
गहना कपड़ा बेचि के नाज बिसाहो शाह॥

इस दोहेको गताङ्कमें भी छपाया था, वहींसे चांदी सोना मन्दा हुआ था, तथा वृष संक्रान्ति शनिवारी थी, और ज्येष्ठ मासमें पांच शनि तथा पांच रविवार होते हुए भी सरसों छोड़कर सारी वस्तुएँ मन्दी होती रहीं, अनुभवजन्य ज्ञान ही सफलीभूत होता है, अधिक क्या लिखें। इस वर्ष का यह स्वतंत्रता दिवस (१५ अगस्त) कानूनोंकी पोथियां लेकर आवेगा, जिससे जनताको कष्ट पहुँचेगा। १७ अगस्त को सिंह संक्रान्ति पांचवें वार पांचवें नक्षत्र १५ मुहूर्ता लगेगी जो कि बीयां तिलहन खाद्य वस्तुओंमें तेजी, रुई, चांदी मन्दीकी ओर ले जा सकेगी। कन्याकी सक्रांन्तिमें तेजी होकर मन्दीका प्रादुर्भाव होगा जो कि लम्बे समय तक चलता ही चला जावेगा। यह मन्दी नहीं बल्कि प्रलयकारी मन्दी होगी, यहाँ व्यापारीकी बुद्धि विफल होगी। अधिक क्या लिखें विशेषको तो सर्वज्ञ ही जाने। अतः लाभ हानि का पूर्ण उत्तरदायित्व अपने ही ऊपर जानकर बाजारकी स्थितिको नाना प्रकारसे देखते हुए अपनी शक्तिको तोलकर ही व्यापार करें, अन्यथा आने वाली दिवाली को किन्हीं किन्हीं व्यापारियोंके यहां प्रसन्नतासे दीपक जलना तक असम्भव होगा।

व्यापार पर स्वरोंका नूतन अनुभव

[ले०—श्रीश्यामसुन्दर ज्योतिषी]

गत १५ वर्षसे जीवनका ध्येय समझकर व्यापार रुखका यथार्थ निर्णय करनेका सतत प्रयत्न करते हुए प्राचीन एवं अर्वाचीन तेजी मन्दीकी पद्धतियोंका मनन एवं अनुभव करते हुए सहसा एक विचार आजके ५ वर्ष पूर्व मस्तिष्कमें उठा था। वह विचार था स्वरशास्त्रकी विलक्षण शक्तिसे तेजी मन्दीका निर्णय करना सम्भव हो सकता है। आज अपनी कल्पनाको साकार रूपमें आपकी सेवामें रख रहा हूँ। इतना नम्र निवेदन भी कर देना चाहता हूँ कि अंशात्मक योग *Aspects* तथा सर्वतोभद्रचक चन्द्रशृंग ग्रह राशि नक्षत्र परिवर्तन, ग्रहण संक्रांति तथा ग्रहयोगों इत्यादि सभी सुलभ एवं शर क्रांति उत्तर दक्षिण वीथियोंमें ग्रह भ्रमणके प्रभाव द्वारा निर्णय करनेमें असफल रहने पर ही यह नूतन विचार मस्तिष्कमें उठा, तथा ईश्वर कृपासे जो अशांति हृदयमें थी उसे शांत होनेका मार्ग मिला। अभी समय और लगेगा तब शायद यह कार्य एक अद्वितीय सिद्धिके रूपमें समाज देखेगा। व्यापारी भाई इस मेरे लेखको अति-शयोक्ति न समझें। मुझे विश्वास है और यह मेरा दृढ़ विश्वास ही मुझे ऐसा लिखनेको वाध्य कर रहा है। व्यापारियोंको अनुभवके लिये कुछ स्पेशल चुटकले लिख रहा हूँ। पद्धतिको किसी अगले अंकमें प्रकाशित करनेका विचार है। त्रैमासिक स्पेशल चांस जो सब चीजों पर लागू होते हैं, निम्न हैं—

३० जून शामसे ३ जुलाईकी शाम तक हर चीज़ भड़क उठेगी। पक्षके अतिरिक्त सभी चीजोंमें सूर्य स्वर एवं अग्नि तत्वकी प्रबलता है। तेजी बड़ी ज़ोरसे आयगी।

६ जुलाईको २ बज कर ४५ मिनट दोपहर तक बाजार सपाटेसे बढ़ेंगे। तेजी खुलते बाजर चालू हो जायगी। वैसे ८ तारीखकी रात तक तेजी चलेगी।

१३ जुलाई खुलते बेचो। दोपहरके २ बजे तक मंदीकी तूफानी चाल है।

१४ और १५ जुलाईको १२ बजे तक मंदी रहेगी। फिर बाजारों पर तेजीका जबर्दस्त असर १५ तारीखकी दोपहर बाद शुरु होकर (गंड योगके प्रारंभसे) १६ तारीख तथा १७ तारीखको भयंकर तेजी आयगी। तारीख १८ भी घटबढ़से तेज रहेगी।

१९ को १२ बजेसे तेजी चलेगी और शामके ६ बजे तक बाजार सूर्य स्वर एवं अग्नि तत्त्वके समर्थन तिथि वार नक्षत्र योग करण आदिओंके प्रभावसे स्टेडी रहेगा। तेजीके उछाले आयेंगे।

२१ को सुबह खुलते बाजार १० बजे सब चीजें डट कर बेचो। परंतु मन्दी जोर दार तो २२ तारीखको आयगी। २२ को बाजार पानी पाने हो जायेंगे तथा २३ की शाम तक मंदी चलेगी।

२६ तारीखको दिनमें मंदी रहेगी। तथा शामको माल पोते कर जाओ, २७ को तेजीका ऐसा करारा झटका लगेगा कि मंदी वाले सुन्न हो जायेंगे। तेजी ३० तक चलेगी।

अभी यहां नमूनार्थ एक मासका ही विचार दिया है। आगामी अंकमें पूरे तीन मासका विस्तृत विचार दिया जावेगा।

संस्कृत-दिवस-समारोह

अ० भा० संस्कृत-प्रचारक-मण्डलकी ओरसे आषाढ शु० १३, १४, १५ तदनुसार ता० ३-४ और ५ जुलाईको संस्कृत-दिवस समारोह बड़े धूम धामसे दिल्लीमें मनाया जायगा। इसी अवसर पर संस्कृतके वयोवृद्ध विद्वान् महा-महाध्यापक श्री पं० छज्जूरामजी विद्यासागरकी स्वर्ण जयन्ती भी मनाई जावेगी, उसमें शिष्यवर्गकी ओरसे ५ सहस्रकी थैली आपको भेंट की जावेगी।



दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार-चक्र



सूर्यग्रहणका संसार पर प्रभाव

स्वतन्त्र भारतके नौवें वर्षका भविष्य

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य]

अभी आषाढ़ कृष्णामावास्या ता० २० जूनको जो सूर्य-ग्रहण हुआ इसका भूमण्डल-गणितसे सचित्र विस्तृत विवेचन (ग्रहण-मर्यादा, प्रधान नगरोंका स्पर्श मोक्षकाल और संक्षिप्त राशिफल) गताङ्कमें दिया जा चुका था। संसार और भारत पर इस ग्रहणका क्या प्रभाव पड़ेगा इस पर विस्तृत विवेचन अब यहाँ दिया जा रहा है—

ग्रहण मध्यकालीन लग्न

सू. चं. मं. ३ · के. २ · श्री · ४ · बृ. · ५ · ६ · ७ · श. · शु. · १ · ८ · १० · १२ · ९ · रा. · ११

सर्वतोभद्र-चक्रानुसार यह ग्रहण पूर्वीय देशोंमें हुआ, अतः संसारके पूर्वीय देशोंमें विशेषकर-जापान, ब्रह्मदेश, हिन्देशिया, हिन्दचीन, जावा, सुमात्रा, फारमोसा, थाईलैंड पर इस ग्रहणका बुरा प्रभाव पड़ेगा। कूर्म-चक्रानुसार मृगशीर्ष नक्षत्रमें ग्रहण होनेसे यमुनातट, मत्स्य-देश (राजस्थान) गौड़देश (मध्य बंगाल और उत्तरी उड़ीसा) मद्रास, आन्ध्र, दक्षिणी महाराष्ट्र, सौराष्ट्रका उत्तरीय भाग, मध्यभारत और मध्यप्रान्तमें भी बुरा प्रभाव पड़ेगा। कहीं अतिवृष्टि कहीं अनावृष्टि, रोगोपद्रव, अग्नि-कांड, आंधी तूफान दुर्भिक्षादिसे तो कहीं धार्मिक सामाजिक राजनैतिक असन्तोष और पूंजीपति एवं श्रमिकवर्गके संघर्ष हड़ताल आदिसे अशान्ति व्यापेगी। अग्निकोणमें यह ग्रहण समाप्त हुआ, अतः आग्नेय एशिया, विशेषकर हिन्दचीनके कुछ भागोंमें गृहयुद्ध जैसी स्थिति बनेगी। बिहार उड़ीसा और आसाममें रोग और जलप्लावनसे भी हानि होगी। ८५ से ९५ पूर्व रेखांश और १५ से २१ उत्तर अक्षांशके मध्यवर्ती भूभागमें भूकम्पके झटके लगेंगे। जापानमें भूकम्पसे विशेष हानि होगी, वहाँके शासन तंत्रमें भी अकस्मात् परिवर्तन होगा। गुप्त सैनिक संगठन संकटका कारण बनेगा। यह ग्रहण प्रथम खांश और वायुमण्डलमें भौमग्रस्त था, अतः उग्रकर्म करने वाले, अग्निसे उपजीविका चलानेवाले सुनार, लुहार और खानोंमें काम करनेवाले मजदूर, ब्राह्मण विद्वान् लेखक उच्च-कुलीन स्त्रियाँ और राजपरिवारको आर्थिक एवं शारीरिक मानसिक कष्टोंका सामना करना पड़ेगा। मिथुन कर्क वृश्चिक मीन राशि एवं लग्न वाले व्यक्तियोंको इस ग्रहणके बाद ६ मास तक अनेक प्रकारके संघर्ष और आर्थिक कौटुम्बिक संकटोंका सामना करना पड़ेगा।

भारतके प्रधान मंत्री श्री पं० जवाहरलालजी नेहरूका जन्म लग्न और राशि कर्क है, अतः उनके लिए भी यह सूर्यग्रहण चिन्ताकारक है। केन्द्रीय और प्रान्तीय समस्याएँ तथा कांग्रेसजनोंमें पारस्परिक प्रतिस्पर्धा, फूट और भ्रष्टाचार उनके मानसिक स्वास्थ्यपर बुरा प्रभाव डालेंगे। विपक्षीदल और कुछ कांग्रेसी भी उनकी कटु आलोचना करेंगे। जनता में यह धारणा बनेगी कि पंडितजी अब देशकी अपेक्षा अन्तर्राष्ट्रीय मामलोंमें अधिक उलझते जा रहे हैं। यह सब होते हुए भी श्री नेहरूजीका भविष्य उज्ज्वल है, जैसा कि गत वर्ष इन्हीं दिनों हमने अपने वर्तमान वर्ष सं० २०१२ के 'श्रीविश्वविजयपंचांग' पृष्ठ ३६ पर राष्ट्र नायकोंके भविष्य में स्पष्ट लिखा था कि—

"श्री नेहरूजीको उच्चस्थ राहु महादशामें राहु का अन्तर चल रहा है। राहु पर भाग्येश गुरुकी दृष्टि है और इस वर्ष (सन् १९५५ में) गोचर भ्रमणसे आपका भाग्येश गुरु लग्न और धन भावमें रहेगा यह आपके यश प्रभाव लोकप्रियताको बढ़ाने वाला है। विश्वके शान्तिप्रिय महापुरुषोंमें प्रमुख स्थान प्राप्त

होगा। दो बार विदेशकी लम्बी यात्रा होगी।"…… ……इत्यादि

तदनुसार ही श्री नेहरूजीकी इस वर्षमें विश्व-व्यापी प्रतिष्ठा उत्तरोत्तर वृद्धि पर है। चीनके बाद इस वर्ष अब आप रूसकी दूसरी महत्त्वपूर्ण यात्रा कर रहे हैं। ग्रहण मध्यकालीन लग्नमें गुरु बलवान् उच्चका है।' यह श्री नेहरूजीका भाग्येश और अध्यात्म-प्रधान आर्यराष्ट्र भारत का अधिपति भी है। पाश्चात्यमतानुसार भारतका अधिपति भी उच्चका केन्द्रस्थ है, अतः इस सूर्यग्रहणका भारत पर कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा। अपितु भारतका गौरव बढ़ेगा। सभी प्रकारकी विषम समस्याओंको सुलझानेमें भारतीय नेता सक्षम होंगे।

ग्रहण लग्नसे लग्नेश धनेश सूर्य चन्द्रमा राज्येश मंगल के साथ १२ वें पड़े हैं, अतः संसारके किसी श्रेष्ठ राजपुरुष की मृत्यु होगी और आर्थिक संकट बढ़ेगा। वर्षान्तमें केन्द्रीय मंत्रिमण्डलमें कुछ परिवर्तन सम्भव होगा। राजस्थान, पेप्सू, हिमाचलप्रदेश, मध्यभारत और मध्यप्रदेश की राजनैतिक सामाजिक, आर्थिक समस्याएँ उग्र बनेंगी। मंत्रिमण्डल और कांग्रेस-जनोंमें ही पारस्परिक प्रतिस्पर्धा से प्रगतिमें बाधा पड़ेगी। मंत्रिवर्गमें जनताका विश्वास न्यून होता जायगा। फलतः एकाधिकबार मंत्रिमंडलोंमें नाटकीय परिवर्तन होंगे।

वस्तुओं पर प्रभाव

आषाढ मास, सोमवार और मृगशीर्ष नक्षत्रमें ग्रहण होनेसे अन्न-धान्य गेहूँ जौ चना चावल मूंग मोठ बाजरा हल्दी मिर्च सोंठ सोना चांदी रत्न रुई कपास घृत गुड़ शक्कर नमक आदि आगे ६ मास तक पर्याप्त तेज होते हैं। किन्तु, यहाँ ग्रहण लग्नमें गुरु बलवान् उच्चका है अतः यह विशेष तेजीको रोकता है। इसका तात्पर्य यह है कि एक बार आषाढ़ श्रावणमें प्रत्येक वस्तुओंमें साधारण तेजी आकर फिर पर्याप्त मंदी आवेगी। श्रावण शु० १ से प्रथम भाद्रपद शु० १५ (ता० २० जुलाईसे २ सितम्बर तक) सोना चांदी और रुईके वायदामें पर्याप्त मंदी आवेगी। श्रावण शुक्लपक्ष में पंच ग्रहयोग कहीं अतिवृष्टि और कहीं दुर्भिक्ष रोगादिसे उत्पातका सूचक है। प्रथम भाद्रपदमें धान्य तैल और रुई का संग्रह करने वालोंको आगामी ३ मासमें २) ३) मनका लाभ हो सकेगा।

स्वतन्त्र भारतका ९ वां वर्षलग्न

सं० २०१२ प्रथम भाद्रपद कृष्णा ११ रविवारको वेधसिद्ध सूक्ष्म नवीन वर्षमानसे इष्ट घट्यादि ४८।२३ पर अर्धरात्रोत्तर ता० १५ अगस्त १९५५ ई० को वृषभ लग्न में भारतको स्वतंत्र हुए आठ वर्ष पूर्ण होकर ९ वाँ वर्ष प्रवेश हो रहा है। उस समयकी ग्रहस्थिति निम्न है—

चं. के. ३
१
ह. गु. ४ सू. मं. शु.
२
१२
बु. ५ यम
११
६
८
१० प्लु.
७
श. ने.
९ रा.

इस वर्ष वर्षलग्न जन्मलग्न एक ही होनेसे 'द्विजन्मा' नामक योग बन गया है। अर्थात् १५ अगस्त १९४७ को स्वतन्त्रता प्राप्तिके समय अर्धरात्रिको वृषभलग्न था और इस ९वें वर्ष प्रवेशका भी वृषलग्न ही आया है। वहां तीसरे स्थान कर्क राशिमें पंचग्रही योग था और यहां चतुर्ग्रही बना है। अतः यह वर्ष भारतके लिए बड़े महत्त्वका है। लग्नेश शुक्र, सूर्य मंगल गुरुके साथ पराक्रम स्थानमें विराजमान है, अतः भारत इस वर्ष अपने बाहु-बल, पुरुषार्थ, पराक्रमसे संसारमें गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त करेगा। श्री नेहरूजीका जन्मलग्न और राशि भी भाग्येश गुरुके साथ पराक्रमस्थ है, अतः इस वर्ष श्री नेहरूजीके अदम्य उत्साह पराक्रम और प्रभावसे भारत औद्योगिक क्षेत्रमें पर्याप्त प्रगति करेगा। उत्पादनमें वृद्धि होगी। बड़े-बड़े नये कारखाने खुलेंगे। नदी घाटी बांध योजनाओं और विद्युत्केन्द्रोंका विस्तार होगा। विदेशोंसे आयात-निर्यात बढ़ेगा। विश्वशांतिके लिए भगीरथ प्रयत्न होंगे। श्रीराष्ट्रपतिजीका जन्मलग्न धनुः अष्टम गया है अतः इस वर्ष उन्हें दो बार हृद्रोग वा वायुविकार (श्वास) का दौरा होना सम्भव है, परन्तु लग्नेश गुरु उच्चस्थ है अतः विशेष भयका कारण नहीं। गृह और शिक्षा-मंत्रीका स्वास्थ्य वर्षके मध्यमें चिन्ताजनक बनेगा।

लग्नेश शुक्र अस्तङ्गत है अतः प्रजाका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य निर्बल रहेगा। अनाचार बढ़ेगा। वीर्य,

ओजकी कमी और हृद्रोगसे मृत्युसंख्या बढ़ेगी। धनभावमें चन्द्र केतुका योग आर्थिक संकट और बेकारीको बढ़ाने वाला है। मध्यमवर्ग संत्रस्त होगा। स्त्रियोंका प्रभुत्व बढ़ेगा। उच्चकुलीन धनाढ्यवर्ग सामन्त जागीरदार एवं नरेशगण सरकारी नीतिसे असन्तुष्ट रहेंगे। शुक्र शनि गुरु राहुकी स्थितिसे ज्ञात होता है कि राजनैतिक नेताओं और अधिकारीवर्गमें पारस्परिक संघर्ष या आन्तरिक कलह बढ़ेगा, मंत्रिमण्डल और उच्चाधिकारीवर्ग जलबन्दियोंके दलदलमें फँसकर कुख्यात होंगे। शासनमें भ्रष्टाचार, पक्ष-पातपूर्ण नीतिसे प्रजामें रोष फैलेगा। वर्षके उत्तरार्धमें केन्द्रीय मंत्रिमण्डलमें सहसा कुछ परिवर्तन सम्भव होगा। राजस्थान आंध्र, उड़ीसा, आसाम, पंजाब, पेप्सू, हिमाचलप्रदेश और मध्यभारतके मंत्रिमण्डलमें स्थायित्व नहीं रहेगा। सीमा आयोगके निर्णयसे भी कई प्रान्तोंमें उद्विग्नता व्यापेगी। राजस्थानी मुख्यमंत्री श्री सुखाड़ियाके लिए नवम्बरसे आगे का समय अनुकूल नहीं है। राजस्थान पंजाब पेप्सू और मध्यभारतमें राजनैतिक दावपेच साठगांठ और षड्यंत्रों में ही अधिकारियों और नेताओंके समय और बुद्धिबलका दुरुपयोग होगा, इससे जनतामें अविश्वास बढ़ेगा। कई स्थानोंमें पूंजीपति और श्रमिकवर्गमें संघर्ष भी उग्ररूप धारण करेगा। पूर्वीय भारतमें जलप्लावन और दुर्भिक्षसे भी हानि होगी। इन सब कुछ असुविधाओंके होते हुए भी केन्द्रीय सरकारके लिए यह वर्ष उत्कर्षकारक ही माना जावेगा, क्योंकि मुंथा भाग्यस्थ है और मुंथेश राज्येश शनि उच्चका है। विशेष विस्तृत विवेचन हमारे सं० २०१३ के 'श्रीविश्वविजय पंचांग' और आगामी अङ्कमें देखें।

गोआका मुक्ति आन्दोलन सफल होगा

तृतीय स्थानमें चतुर्ग्रहायोग (लग्नेश षष्ठेश अष्टमेशके साथ) अन्तर्द्वन्द्व और पड़ौसी राष्ट्र वा अपने ही लोगोंमें घोर संघर्ष भी करवाता है। लग्नेश शुक्र दक्षिण पश्चिमी राशियोंका अधिपति होकर कर्क (जलचर) राशिमें शत्रु ग्रहोंसे युद्धरत है, अतः भारतके दक्षिणी तटस्थ गोआ द्वीप का मुक्ति-आन्दोलन इस वर्षके प्रारम्भमें ही भयंकर रूप धारण करेगा। आरम्भमें पुर्त्तगालियोंकी ओरसे भयानक दमन चक्र चलेगा, इसमें गोआ निवासियोंके साथ भारतीय जन धनकी भी कुछ हानि होगी। परन्तु अन्तमें गोआका मुक्ति आन्दोलन सफल होगा। गोआ द्वीप निश्चित रूपमें इस वर्ष भारतमें सम्मिलित हो जायेगा। 'अवकहडा' चक्रानुसार गोआ कुम्भराशिके प्रभाव क्षेत्रमें है। वर्षारम्भमें (अगस्त सितम्बरमें) कुम्भराशिसे चतुर्ग्रही (सू. मं. गु. शु.) का षडष्टक योग बन रहा है और यम (प्लुटो) से प्रतियोग, यह भयंकर संघर्षका द्योतक है। ता० १ अक्टूबरको सिंहका गुरु आने पर पुर्तगालकी दमन नीति उत्तरोत्तर समाप्त प्राय होगी। ११ नवम्बरके बाद सिंहके गुरुमें गोआ का भारतमें पूर्ण रूपेण विलय सम्भव होगा।

पाठकोंको स्मरण होगा कि गत वर्ष इन्हीं दिनों हमने 'श्रीस्वाध्याय' के ग्रीष्माङ्क (वर्ष १३ अङ्क ४) में स्वतन्त्र-भारतके आठवें वर्ष लग्नके भविष्य विवेचनमें स्पष्ट लिखा था कि—"......यह वर्ष भारतके लिए विशेष प्रगति कारक सिद्ध होगा। उत्पादन बढ़ेगा, अन्नादिके विषयमें भारत आत्मनिर्भर होने लगेगा। संसारके महान् राष्ट्रोंकी दृष्टिमें भारतका गौरव बढ़ेगा। युद्धकाल से चली आ रही महार्घता (मँहगाई) का इस वर्षमें अन्त होनेसे सर्व साधारण जनता कुछ सुख शान्तिका अनुभव करेगी।......"इत्यादि। इसी प्रकार गत वर्षके इसी 'ग्रीष्माङ्क' में हमने श्री चाऊ-नेहरु सम्मिलन लग्नकी ग्रह स्थिति पर विचार करते हुए स्पष्ट लिखा था कि—"......प्रथम भेंटके समय दैवयोगसे ग्रह स्थिति बड़ी अनुकूल महत्त्वपूर्ण थी। इससे हम कह सकते हैं कि श्री चाऊ-नेहरुकी वार्ता दोनों महान् राष्ट्रोंके लिए हितकर सिद्ध होगी और आगे पारस्परिक स्नेह सद्भावनामें वृद्धि होती जायेगी। इससे न केवल चीन भारतको ही अपितु एशियाके समस्त छोटे बड़े राष्ट्रोंको भी बल मिलेगा। ...अतः हम विश्वास पूर्वक कह सकते हैं कि चीन भारतकी मैत्री चिर स्थायी और शान्तिकारक सिद्ध होगी। चतुर्थ स्थानमें उच्चस्थ शनिकी अवस्थिति दोनों महान् राष्ट्रोंकी सुख समृद्धि और गौरवको बढ़ाने वाली है।"

एक वर्ष पूर्व लिखे गये इस भविष्य विवेचनने अक्षरशः सत्य सिद्ध हो कर भारतीय ज्योतिर्विज्ञानके महत्त्वको बढ़ाया है। अस्तु।

———

पर्वव्रतादि निर्णय

ता० २९ जून बुधवार—श्रीस्वाध्यायसदन स्थापना दिवस
ता० ३० जून गुरुवार—देवशयनी एकादशी व्रत।

जुलाई १९५५ ई०

ता० २ शनिवार—शनिप्रदोष व्रत
४ सोमवार—सत्यव्रत, वायुपरीक्षा
५ मंगलवार—व्यास पूर्णिमा गुरु पूजा
१५ शुक्रवार—कामिका एकादशी व्रत।
१६ शनिवार—कर्कसंक्रान्ति मु० ३० पुण्य अगले दिन
१७ रविवार—प्रदोष व्रत।
१९ मंगलवार—हरियाली अमावस।
२२ शुक्रवार—श्रावणी (संधारा) तीज
२४ रविवार—नागपंचमी।
२६ मंगलवार—श्री गो० तुलसीदास जयन्ती।
३० शनिवार—पवित्रा एकादशी व्रत

अगस्त १९५५

ता० १ सोमवार—सोमप्रदोष व्रत
३ बुधवार—ऋषितर्पण, रक्षा बन्धन, सत्यव्रत
१० बुधवार—श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत चन्द्रोदय २३।०
११ गुरुवार—जन्माष्टमीव्रत वैष्णवसम्प्र. चंद्रोदय २३।४८
१४ रविवार—अजा एकादशी व्रत
१५ सोम—सोमप्रदोष व्रत भारत स्वातन्त्र्योत्सव
१७ बुध—सिंह संक्रान्ति मु० १५ कुशोत्पाटिनी अमा.
१८ गुरुवार—पुरुषोत्तम (मल) मास प्रारम्भ
२९ सोमवार—पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत
३० मंगलवार—भौमप्रदोष व्रत

सितम्बर १९५५

ता० १ गुरुवार—सत्यव्रत चन्द्रायणी पूर्णिमा
१२ सोमवार—कमला एकादशी व्रत
१३ मंगलवार—भौमप्रदोष व्रत
१६ शुक्रवार—अमावस्या पुरुषोत्तम (मल) मास समाप्ति
१७ शनिवार—कन्या संक्रान्ति मु० ४५ चन्द्रदर्शन
१९ सोमवार—हरितालिका ३ व्रत, पत्थर ४
२७ मंगलवार—पद्माएकादशी व्रत
२८ बुधवार—वामन द्वादशी मेला अम्बाला पटियाला
२९ गुरुवार—प्रदोष व्रत
३० शुक्रवार—अनन्त १४ व्रत

अक्टूबर १९५५

ता० १ शनिवार—प्रौष्ठपदी श्राद्ध सत्यव्रत पूर्णिमा
२ रविवार—पितृपक्ष श्राद्धारम्भ, श्रीगांधी जयन्ती
११ मंगलवार—इन्दिरा एकादशी व्रत
१३ गुरुवार—प्रदोष व्रत
१५ शनिवार—महालय श्राद्ध समाप्ति सर्वपितृ अमा०
१६ रविवार—शारद नवरात्रारम्भ घटस्थापन।
१७ सोमवार—तुला संक्रान्ति मु० १५ चन्द्रदर्शन
२४ सोमवार—श्री दुर्गाष्टमी सरस्वती विसर्जन
२५ मंगलवार—महानवमी नवरात्र समाप्तिः
२६ बुधवार—विजया १० मेला दशहरा अपराजितापूजन

[पृष्ठ ८ का शेष]
राजनैतिक अस्थिरताका क्या परिणाम होगा ? क्या पाकिस्तानका इसके बाद भी अस्तित्त्व बना रहेगा ?

सूर्यग्रहण

२० जून १९५५ को लगा सूर्यग्रहण ऐतिहासिक दृष्टिसे महत्वपूर्ण है। सम्पूर्ण (खग्रास) ग्रहण अधिकतम समय रहनेकी दृष्टिसे यह अपूर्व था। दक्षिणी ध्रुवके समीप आंशिक (खण्डग्रास) ग्रहण १३वीं शतीके मध्य प्रारम्भ हुए। १२-१३ आंशिक (खण्डग्रास) ग्रहणोंके बाद ग्रहणने १५ वीं शतीके मध्य मध्य-पथ पकड़ा और अब मध्य ग्रहणका दीर्घ अनुक्रम प्रारम्भ होने वाला है।

ये मध्य-ग्रहण पहले खण्ड ग्रहण और फिर पूर्ण ग्रहण होने लगे। केन्द्रीय या मध्य ग्रहणका अनुक्रमका २२ वीं शतीकी तीसरी चौथाईमें अन्त होगा। इसके बाद आंशिक ग्रहणका अनुक्रम प्रारम्भ होगा। १२-१३ आंशिक ग्रहणोंके बाद उत्तरीय ध्रुवमें २४ वीं शतीके अन्तमें इसकी समाप्ति होगी। २० वीं शतीमें पूर्ण सूर्यग्रहण (खग्रास) होनेका काल सर्वाधिक रहा। १९ और २० वीं शतीके सूर्य ग्रहणोंका अनुक्रम इस प्रकार रहा—

वर्ष ई० सन्	तिथि मास	मध्यान्हमें जहां मध्य रहा	पूर्णग्रास मिण्टोंमें	ग्रहण पथ
१८११	२४ मार्च	३९ द.२६ प.	३.४	दक्षिण अटलाण्टिक, दक्षिण अफ्रीकाके पार
१८२९	३ अप्रैल	३२ द.१४९ प.	४.१	दक्षिण प्रशान्त
१८४७	१५ अप्रैल	२४ द.९० पू.	४.७	हिन्दमहासागर, आस्ट्रेलिया
१८६५	२५ अप्रैल	१८ द.३० प.	५.३	ब्राजीलसे मध्य अफ्रीका
१८८३	६ मई	९ द.१४७ प.	६.०	प्रशान्त महासागर कैरोलीना द्वीप
१९०१	१८ मई	२ द.९७ पू.	६.५	सुमात्रा, बोर्नियो
१९१९	२९ मई	४ उ.१८ प.	६.६	पेरू, ब्राजील, मध्य अफ्रीका
१९३७	८ जून	१० उ.१३१ प.	७.१	प्रशान्तमहासागर व पेरू
१९५५	२० जून	१५ उ.११७ पू.	७.२	लंका, स्याम, फिलीपीन
१९७३	३० जून	१० उ. ६ पू.	७.२	द. अमरीका अफ्रीका, अटलाण्टिक महासागर
१९९१	११ जुलाई	२२ उ.१०६ प.	७.१	प्रशान्तमहासागर हवाई व मध्यअमरीका

पूर्ण सूर्यग्रहण और अधिक कालके 'उल्लेख योग्य ग्रहण' पिछली और इस शतीमें हुए हैं। इस मालामें अधिकतम कालका सूर्यग्रहण ७ मि. २८ से. का २१६३ ई० में होगा और यह मानव इतिहासमें सबसे बड़ा होगा। इसका पथ मद्रासके समीप सागरके पाससे होकर जायगा। इस मालाका आरम्भ उत्तरी ध्रुवसे प्रारम्भ होकर दक्षिणी ध्रुवकी ओर बढेगा।

चांदी सोना रुईका दैवीचांस

'श्रीस्वाध्याय' के गताङ्कमें हमने गुड़, सरसोंके जो दैवीचांस प्रसाद रूपमें पाठकोंको दिये थे वे अक्षरशः सत्य सिद्ध हुए थे। अब इस बार एक दैवीचांस चांदी सोना रुईका पाठकोंके लाभार्थ हम यहाँ दे रहे हैं—

ता० २५ जुलाईके बाद ३१ अगस्त १९५५ तक सोना, चांदी रुई वायदा बम्बईमें डबल मंदा आयेगा। व्यापारी नोट कर लें। कितना मंदा आयेगा इसका स्पष्ट निर्णय नियमानुसार फीस भेज कर प्राप्त कर सकते हैं। हमारे दैवीचांस कार्यालयके नियमादिका विज्ञापन इस अंकमें अगले पृष्ठ ६० पर छपे हैं, वहां देखें। —पञ्चानन शर्मा वैद्य

———

दैवीचांस कार्यालयके नियम

(१) हमको गुरु-कृपासे चिरकालकी साधनाके अनन्तर इष्टदेवका अनुग्रह प्राप्त हुआ है, जिनके अनुग्रहसे अनुष्ठान द्वारा इच्छित वस्तुमें सीधी लाइनका दैवीचांस प्राप्त किया जाता है। हम अपने प्रेमी ग्राहकोंको दैवीचांसके अनेक चमत्कार गत तीन वर्षोंसे बराबर दिखाते चले आ रहे हैं। हम विशेषकर रुई, कपास, सोना, चांदी, सरसों, गुड़, गवारा, चनाके वायदा तथा हाजर, अरण्डी वायदा बम्बई और काटन वायदा बम्बईके ही दैवीचांस प्राप्त करते हैं, अतः इन्हींके सम्बन्धमें ही पत्रव्यवहार करें।

(२) कोई सज्जन किसी खास एक वस्तुका भाव अथवा अपनी विशेष समस्याका समाधान दैवीचांस कार्यालय द्वारा जनना चाहें तो वे पांचसौ रुपया भेजकर अपना अनुष्ठान करवाके इच्छित वस्तुका दैवीचांस अथवा अपनी समस्याका समाधान प्राप्त कर सकते हैं। यदि कोई सज्जन अपने स्थान पर ही बुलाकर अनुष्ठान कराना चाहें तो स्थान और समयकी परिस्थितिके अनुसार फीस १०००) से ५०००) तक देनी होगी।

(३) १०१) रु० पेशगी भेजकर लाभमेंसे धर्मपूर्वक दशांश देनेकी प्रतिज्ञा करने वाले व्यापारीको एक वस्तुकी एकतर्फा तेजी अथवा मंदीकी लाइन बताई जाती है। एक वस्तुमें पूरी मंदी और तेजीकी वर्ष भरकी सम्पूर्ण लाइनकी फीस २५१) रु० है। इन सम्पूर्ण लाइन वालोंको भी लाभका दशांश एक लाइन पूरी होते ही सौदा काट कर साथ साथ भेजना होगा।

(४) जो व्यापारी वर्षारम्भमें पहले एक मुश्त ५००) रु० भेजकर एक वर्षके लिए स्थायी ग्राहक बन जायेंगे उनको वर्षभरमें सभी दैवी चांसोंकी जनरल लाइनें यथासमय पत्र द्वारा एवं विशेष परिस्थितिमें तार द्वारा वर्ष भर तक दी जावेगी। लाभका दशांश इन्हें भी साथ ही साथ भेजना पड़ेगा।

(५) जो ग्राहक लाभका दशांश धर्मपूर्वक पूरा नहीं देंगे वा देनेमें आनाकानी करेंगे ऐसे स्वार्थी व्यापारी आगेके लिए दैवीचांससे लाभ नहीं उठा सकेंगे।

(६) ५००) रु० भेजने वाले स्थायी वार्षिक ग्राहकोंको जनरल लाइनोंमें जो मंदी तेजीके रियेक्शन आते रहते हैं उनकी भी यथा समय सूचना अपने तत्कालीन दैवी अनुभवों द्वारा दी जाती है।

(७) व्यापारमें किस वस्तुसे लाभ कब होगा? और ग्रह-स्थिति भाग्योदय लाभकारक है भी या नहीं? इसका निर्णय किसी योग्य विद्वान्से जन्मपत्र वर्षफल द्वारा करवा लेवें। यदि हमारे द्वारा निर्णय करवाना चाहें तो कुण्डलीके साथ फीस ५१) भेजें। अथवा असमर्थ व्यापारी प्रश्न तिथि तारीख और समय (टाइम) के साथ ५) भेजकर प्रश्न-कुण्डली द्वारा भी अपने भाग्यका निर्णय करा सकते हैं।

(८) यदि किसीको हमारे दैवी-चांसों पर विश्वास न हो तो वे सज्जन अपनी फीस भारतके सुप्रसिद्ध इस पत्र 'श्रीस्वाध्याय' के सम्पादक श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी सोलन (शिमला) के पास अथवा हमारे नगरके किसी भी प्रतिष्ठित व्यक्तिके पास इस शर्त पर जमा करा देवें कि चांस सत्य होने पर ही वह रुपया हमें मिले, अन्यथा आपको वापस लौटा दिया जाये। इससे अधिक हम और क्या विश्वास दिला सकते हैं।

(९) फीसमें किसी प्रकारकी न्यूनता करने वा बादमें देनेके लिए व्यर्थ पत्र लिखकर समय नष्ट न करें। उत्तरके लिए जवाबी पत्र अथवा टिकट भेजें।

(१०) दैवीचांस किसी दूसरे व्यक्तिको नहीं बताना चाहिए, अन्यथा लाभ न उठा सकेंगे।

पता—ज्योतिर्विद् वैद्य पंचानन शर्मा मौद्गल्य, दैवीचांस कार्यालय, श्रीधन्वन्तरि फार्मेसी

मु० पो० लहरागागा मण्डी, जि० संगरूर (पेप्सू)।

भारतीय संस्कृतिके अग्रदूत राष्ट्रधर्मके प्रमुख प्रचारक—

'श्रीस्वाध्याय' के लिए—

राष्ट्रके उद्गार

श्रीयुत बा० पुरुषोत्तमदासजी टण्डन—'श्रीस्वाध्याय' को देख मुझे बहुत सुख मिला। ......इस पत्र और इसके सञ्चालकमण्डलसे राष्ट्रीय कार्यमें पूर्ण सहायता मिलेगी ....।

त्यागमूर्त्ति श्री १०८ गो० गणेशदत्तजी महाराज—'श्रीस्वाध्याय' अपने विषयका अनुपम पत्र है ...... यह प्रत्येक सार्वजनिक संस्थाओं, पुस्तकालयों और वाचनालयोंमें स्थान पाने योग्य है ......।

श्रीयुत कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी, राज्यपाल उत्तरप्रदेश—'श्रीस्वाध्याय' बहुत अच्छा निकल रहा है। लेख विचार प्रवर्तक हैं। ......मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ ......।

पंजाबविश्वविद्यालयके उपकुलपति दीवान श्री आनन्दकुमारजी—'श्रीस्वाध्याय' साहित्यिक अभिरुचिका पत्र है और अपने पाण्डित्यपूर्ण स्तरको अक्षुण्ण व स्थिर रक्खे हुए है। .... पत्र द्वारा हमारी प्राचीन संस्कृतिके उद्धार व संवर्द्धनका प्रशंसनीय प्रयत्न किया जा रहा है।........."

श्रीयुत बा० सम्पूर्णानन्दजी मुख्य-मन्त्री उत्तरप्रदेश—'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। भारतीय प्राचीन विद्याओं पर प्रकाश डालने वाले ऐसे प्रगतिशील सांस्कृतिक पत्र-पत्रिकाओंकी इस समय आवश्यकता है।

कविसम्राट् स्व० श्री पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध'—'श्रीस्वाध्याय' बड़ा सुन्दर निकल रहा है। इसे जिस दृष्टिसे देखें वह सुखकर है। आकार, प्रकार, लेख किंवा कविता आदि सभी प्रशंसनीय है।

श्रीयुत बा० मैथिलीशरण गुप्त—"......'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। मैं आपके परिश्रमकी प्रशंसा और पत्रकी उन्नतिकी कामना करता हूँ।......"

श्रीयुत प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति—'श्रीस्वाध्याय' अपने ढङ्गका अनूठा पत्र है। ......यह एक उच्चकोटिका सांस्कृतिक पत्र है। मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ।

श्रीयुत बाबूराव विष्णु पराड़करजी—"...... वस्तुतः यह त्रैमासिक अपने ढङ्गका निराला है। आर्य संस्कृतिके प्रायः प्रत्येक अङ्ग पर इसमें प्रकाश डाला जाता है। ......"

श्री डा० रामकुमारजी वर्मा—"......'श्रीस्वाध्याय' हमारे साहित्यका ऐसा पत्र है जिस पर हमें अभिमान है। इसमें जो सांस्कृतिक दृष्टिकोण रहता है वह हमें अन्य भारतीय पत्रोंमें नहीं मिलता। 'श्रीस्वाध्याय' के प्रत्येक पृष्ठमें मुझे अध्ययन और अनुशीलनसे परिपूर्ण साहित्यिक सामग्री मिली।......"

श्रीयुत पं० रूपनारायणजी पाण्डेय (सम्पादक 'माधुरी')—"...... 'श्रीस्वाध्याय' की सभी सामग्री ज्ञानवर्धक और उपादेय है।...... प्रत्येक देशभक्त, राष्ट्रभाषा प्रेमी, जिज्ञासु, धर्मप्रेमीको अवश्य इसे अपनाना चाहिए। हर एक पुस्तकालयमें यह पत्र स्थान पाने योग्य है।......"

श्रीयुत पं० देवीदत्तजी शुक्ल (भू० पू० सम्पादक 'सरस्वती')—'श्रीस्वाध्याय' बहुत ही सुन्दर निकल रहा है।...... आपने 'स्वाध्याय' निकाल कर हिन्दीके एक विशेष अभावकी पूर्ति की है, इसमें सन्देह नहीं। इस महत्त्वपूर्ण कार्यके लिए हिन्दी वाले आपके अवश्य कृतज्ञ होंगे।

श्रीयुत पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकरजी—"...... 'श्रीस्वाध्याय' के विषयमें विशेष क्या कहा जाय, यह एक अत्युत्तम पत्र है। मैं हृदयसे इसकी सफलता चाहता हूँ। इसकी अन्यान्य महत्ताओं पर 'वैदिकधर्म' में प्रकाश डालूंगा।

इनके अतिरिक्त भारतके अनेकों महामान्य विद्वानों और प्रमुख पत्र-पत्रिकाओंने 'श्रीस्वाध्याय' की मुक्त-कण्ठसे प्रशंसा की है। स्थानाभावके कारण वे सब यहां उद्धृत नहीं हो सकीं।

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस दिल्लीमें छपकर 'श्रीस्वाध्यायसदन' सोलन (शिमला) से प्रकाशित।